@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
मंगलवार, 4 फरवरी 2025

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 85 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान गरजे राहुल

सिम्मी कौर बब्बर

नई दिल्ली, 3 फरवरी। संसद के बजट के सत्र के दौरान सोमवार को लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा शुरू हुई। इस दौरान नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने भी चर्चा में हिस्सा लिया। उन्होंने सरकार पर करारा हमला करते हुए कहा कि राष्ट्रपति के अभिभाषण में कुछ भी नया नहीं था। उसमें हर चीज वह थी, जो हम सब कई सुन चुके हैं। लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने कहा, राष्ट्रपति के अभिभाषण के दौरान जो कुछ भी कहा जा रहा था, उस पर ध्यान बनाए रखने के लिए मुझे संघर्ष करना पड़ा। ऐसा इसलिए, क्योंकि मैंने पिछली बार भी कुछ ऐसा ही सुना था। उससे पहले भी लगभग इसी तरह का अभिभाषण सुना था। यह सरकार के कार्यों की एक ही सूची थी। इस सरकार ने लगभग 50-100 काम ही किए होंगे। मुझे लगता है कि राष्ट्रपति का अभिभाषण ऐसा नहीं होना चाहिए था, जैसा दिया गया। उन्होंने कहा कि भले ही हम बढ़े हैं, हम तेजी से बढ़े हैं, थोड़ी धीमी गति से बढ़ रहे हैं, लेकिन हम बढ़ रहे हैं। एक सार्वभौमिक समस्या, जिसका हमने सामना किया है, वह है बेरोजगारी। हम बेरोजगारी की समस्या से निपटने में सक्षम नहीं हैं। न तो यूपीए सरकार और न ही आज की एनडीए सरकार ने इस देश के युवाओं को रोजगार के बारे में कोई स्पष्ट जवाब दिया है। राहुल गांधी ने कहा कि प्रधानमंत्री ने मेक इन इंडिया कार्यक्रम का प्रस्ताव रखा, मुझे लगता है कि यह एक अच्छी पहल थी। परिणाम आपके सामने है, विनिर्माण 2014 में सकल घरेलू उत्पाद के 15.3त्न से गिरकर आज सकल घरेलू उत्पाद के 12.6त्न पर आ गया है, जो 60 वर्षों के विनिर्माण में सबसे कम है। मैं प्रधानमंत्री को दोष नहीं दे रहा हूं, यह कहना उचित नहीं होगा कि उन्होंने प्रयास नहीं किया। मैं कह सकता हूं कि प्रधानमंत्री ने प्रयास किया, लेकिन वे असफल रहे। उन्होंने कहा कि लोग एआई के बारे में बात करते हैं, लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि एआई अपने आप में बिल्कुल अर्थहीन है, क्योंकि एआई के लिए डेटा अहम है। डेटा के बिना एआई का कोई मतलब नहीं है। अगर हम आज डेटा को देखें, तो एक बात बहुत स्पष्ट है- दुनिया में उत्पादन प्रणाली से निकलने वाला हर एक डेटा। जिस डेटा का उपयोग फोन को बनाने के लिए किया गया, जिस डेटा का उपयोग इलेक्ट्रिक कार बनाने के लिए किया गया, जिस डेटा का उपयोग आज ग्रह पर मूल रूप से सभी इलेक्ट्रॉनिक्स बनाने के लिए किया जाता है, उसका स्वामित्व चीन के पास है। खपत डेटा का स्वामित्व संयुक्त राज्य अमेरिका के पास है। इस क्षेत्र में चीन भारत से कम से कम 10 साल आगे है। चीन पिछले 10 सालों से बैटरी, रोबोट, मोटर, ऑप्टिक्स पर काम कर रहा है और हम पीछे हैं। उन्होंने कहा कि हम यह सुनिश्चित करेंगे कि हमारी बैंकिंग प्रणाली 2-3 कंपनियों के कब्जे में न हो जाए जो मूल रूप से आपको उत्पादन प्रणाली बनाने की अनुमति नहीं देती हैं, लेकिन हमारी बैंकिंग प्रणाली खुली, गतिशील और छोटे और मध्यम व्यवसायों और लाखों उद्यमियों के लिए सुलभ है, जो इस क्रांति में भाग लेना चाहते हैं। हमारी विदेश नीति इस क्रांति को ध्यान में रखेगी। जब हम संयुक्त राज्य अमेरिका से बात करते हैं, तो हम अपने विदेश मंत्री को बार-बार वहां भेजते हैं। उनसे अपने प्रधानमंत्री को उनके शपथग्रहण में आमंत्रित करने के लिए कहते हैं। अगर हमारे पास उत्पादन प्रणाली होती और अगर हम इन तकनीकों पर काम कर रहे होते, तो अमेरिकी राष्ट्रपति यहां आते और प्रधानमंत्री को आमंत्रित करते। उन्होंने कहा कि कोई भी देश मूल रूप से दो चीजों को व्यवस्थित करता है- आप उपभोग को व्यवस्थित कर सकते हैं और फिर आप उत्पादन को व्यवस्थित कर सकते हैं। उपभोग को व्यवस्थित करने का आधुनिक तरीका है

सीएए, यूसीसी, एनआरसी को खारिज करने का प्रस्ताव पारित: मुख्यमंत्री

दुमका (झारखंड), 3 फरवरी। सत्ता पर काबिज झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) ने राज्य में नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए), समान नागरिक संहिता (यूसीसी) और राष्ट्रीय नागरिक पंजी (एनआरसी) को खारिज करने समेत 50 सूत्री प्रस्ताव पारित किया है। पार्टी के 46वें स्थापना दिवस के अवसर पर

दुमका के गांधी मैदान में रविवार रात आयोजित एक कार्यक्रम में ये प्रस्ताव पारित किए गए। पार्टी के प्रस्ताव में कहा गया, नागरिकता संशोधन अधिनियम, समान नागरिक संहिता और राष्ट्रीय नागरिक पंजी को झारखंड में पूरी तरह से खारिज किया जाना चाहिए। पार्टी ने राज्य में छोटानागपुर काश्तकारी (सीएनटी) अधिनियम और संथाल परगना काश्तकारी (एसपीटी) अधिनियम के सख्त क्रियान्वयन की भी मांग की। पार्टी ने केंद्र सरकार से आग्रह किया कि वह राज्य सरकार को 1.36 लाख करोड़ रुपये बकाया का शीघ्र भुगतान सुनिश्चित करे। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए केंद्र पर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्रीय बजट में राज्य के लोगों के साथ धोखा किया गया है। सामंती मानसिकता वाले कुछ लोग नहीं चाहते कि आदिवासी बहुल झारखंड के निवासी अपने पैरों पर खड़े हों। सोरेन ने कहा, खनिज संसाधनों के माध्यम से देश के खजाने में बड़ा योगदान देने के बावजूद झारखंड अब भी सबसे पिछड़ा राज्य है। उन्होंने कहा कि केंद्र को सभी राज्यों, खासकर पिछड़े राज्यों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए। केंद्रीय बजट अमीरों के लिए है और निर्धनों के लिए इसमें कुछ भी नहीं है। उन्होंने कहा कि आयकर में छूट दी गई, लेकिन इससे कोई मदद नहीं मिलेगी, क्योंकि मुद्रास्फीति आसमान छू रही है।

संसद में गूंजा गूगल मैप से होने वाली दुर्घटनाओं का मुद्दा

नई दिल्ली, 3 फरवरी। बजट सत्र के दौरान राज्यसभा में सोमवार को गूगल मैप से मिले दिशा-निर्देशों के कारण होने वाली दुर्घटनाओं का मुद्दा उठाया गया। भाजपा सांसद ने इसे एक गंभीर समस्या बताते हुए सरकार से विचार करके ठोस कदम उठाने की मांग की। शून्यकाल के दौरान भाजपा सांसद अजीत माधव राव गोपछड़े ने इस मुद्दे को उठाते हुए सरकार से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) या अन्य संस्थाओं की मदद से भारतीय स्टार्टअप या कंपनियों को गूगल मैप का स्वदेशी मॉडल विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर बल दिया। केरल, उत्तर प्रदेश और बिहार से जुड़े हालिया घटनाओं का उल्लेख करते हुए भाजपा सांसद ने कहा कि, भारत में गूगल मैप के गलत होने के कारण दुर्घटनाओं का होना एक गंभीर समस्या बनती जा रही है। उन्होंने कहा कि ये घटनाएं इस बात का उदाहरण है कि कैसे तकनीकी उपकरणों पर अत्यधिक निर्भरता कभी-कभी खतरनाक परिणाम दे सकती है, गूगल मैप की जानकारी हमेशा सही नहीं होती है और कभी-कभी यह गलत दिशा में ले जा सकता है तथा कभी-कभी गूगल मैप की जानकारी भ्रामक हो सकती है। उन्होंने कहा कि इससे भारतीय कंपनियों के पास अपने देश के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए मानचित्र और डेटा होंगे, जो स्थानीय जरूरतों और संदर्भों के अनुसार अनुकूलित होंगे। उन्होंने कहा, भारत सरकार को इन सभी मुद्दों पर गंभीरता से विचार करके ठोस कदम उठाना चाहिए ताकि गूगल मैप के जैसी स्वदेशी चीज अपनाया जा सके।

बिल पर 428 पन्नों की रिपोर्ट में 281 पर असहमति नोट: अध्यक्ष जगदंबिका पाल

सौरभ शर्मा

नई दिल्ली, 3 फरवरी। वक्फ संशोधन विधेयक को लेकर संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) आज अपनी रिपोर्ट संसद में सौंप सकती है। इसे लेकर संसदीय समिति के अध्यक्ष जगदंबिका पाल ने कहा कि विपक्ष एक खास तरह के एजेंडे को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। विपक्ष ने वक्फ बिल को लेकर बनी 428 पन्नों की रिपोर्ट में से 281 पन्नों पर असहमति नोट पेश किया गया है। उन्होंने कहा कि सभी पक्षकारों से बात करने और विचारों पर गौर करने के बाद अंतिम रिपोर्ट तैयार की गई है। जेपीसी अध्यक्ष जगदंबिका पाल ने कहा कि विपक्ष ने जैसे यह कहकर जेपीसी को गुमराह करने की कोशिश की थी कि अगर बिल पारित हो जाता है तो सभी वक्फ संपत्तियां छीन ली जाएंगीं, ठीक उसी तरह से वह देश में एक खास एजेंडे को आगे बढ़ाकर तुष्टिकरण की कोशिश कर रहे हैं। हमने जेपीसी की बैठकों में वक्फ बोर्ड, अल्पसंख्यक आयोग, सरकारी अधिकारी, हितधारक और इस्लामी विद्वान सभी को गवाह के रूप में बुलाकर बात की और उनको सुना। इसके बाद हमने 428 पन्नों की रिपोर्ट तैयार की है और हमने रिपोर्ट स्पीकर को सौंप दी है। जेपीसी अध्यक्ष ने कहा कि 428 पन्नों की रिपोर्ट में हमने हर खंड में संशोधन का अनुरोध

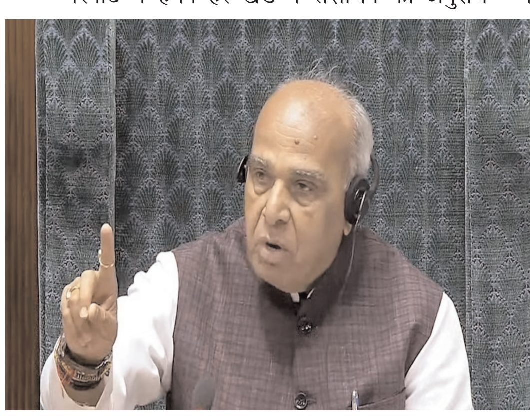

किया था। ओवैसी, नसीर हुसैन और अन्य सभी ने अपना इनपुट दिया था। हमने उनके संशोधन के आधार पर मतदान किया और बहुमत के आधार पर संशोधन को स्वीकार कर लिया। विपक्ष ने 281 पन्नों पर असहमति नोट दिया था। जब सदन में रिपोर्ट पेश की जाएगी तो सभी असहमति नोट भी शामिल किए जाएंगे। अब संसदीय लोकतंत्र में और क्या किया जा सकता है? जेपीसी अध्यक्ष ने कहा कि जब स्पीकर साहब एजेंडा देगें और कार्य समिति सहमत होगी, तब हम इसे पेश करेंगे। इससे पहले 30 जनवरी को वक्फ (संशोधन) विधेयक पर विचार करने वाली संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के अध्यक्ष जगदंबिका पाल ने 655 पेज वाली रिपोर्ट लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को सौंपी थी। हालांकि, विपक्षी सांसदों ने इसे असांविधानिक करार दिया था। उनका आरोप है कि यह कदम वक्फ बोर्डों को बर्बाद कर देगा। वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2024 को केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्री किरेन रिजिजू की ओर से लोकसभा में पेश किए जाने के बाद 8 अगस्त, 2024 को संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) को भेजा गया था। विधेयक का मकसद वक्फ संपत्तियों को विनियमित और प्रबंधित करने से जुड़े मुद्दों और चुनौतियों का समाधान करने के लिए वक्फ अधिनियम, 1995 में संशोधन करना है।

2027 में हमारी सरकार आई तो अयोध्या को वर्ल्ड क्लास सिटी बनाएंगे: अखिलेश यादव

कौमी संवाददाता

अयोध्या, 3 फरवरी। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सोमवार को चुनाव प्रचार के अंतिम दिन मिल्कीपुर में जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि भाजपा ने अयोध्या में विकास के नाम पर लोगों से जमीनें छीनी और लोगों को मुआवजा नहीं दिया है। 2027 के विधानसभा चुनाव में जब सपा की सरकार बनेगी तो हम अयोध्या को वर्ल्ड क्लास सिटी बनाएंगे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री अयोध्या में खरीदी गई जमीनों की सूची जारी कर दें तो पता चल जाएगा कि सबसे बड़ा भूमाफिया कौन है? सबसे बड़े भूमाफिया भाजपा के लोग ही हैं। अयोध्या में फाइव स्टार होटल बनाने के लिए जमीन ली गई पर गरीबों को उचित मुआवजा नहीं दिया गया। अखिलेश यादव ने कहा कि ये तो भाजपा के लोग भी जानते हैं कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ किसी के नहीं हैं। वो भाजपा वालों के भी नहीं हैं। वो सिर्फ परिस्थितियों के

अनुसार काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार उपचुनाव में जीत हासिल करने के लिए लोगों को डराने-धमकाने का काम कर रही है। इसके लिए अफसरों की तैनाती की जा चुकी है। अफसरों में पीडीए के लोग नहीं हैं। अखिलेश यादव ने महाकुंभ में मची भगदड़ को लेकर योगी सरकार पर निशाना साधा और कहा कि मुख्यमंत्री योगी गूगल पर सर्च करना नहीं जानते हैं। अगर जानते हों तो गूगल पर महाकुंभ टाइप करें पता चल जाएगा कि कितनी जगह भगदड़ मची है।

जनता ने अगर नारेबाजी के लिए भेजा है तो यही करिए या सदन चलाइए: ओम बिरला

तेजिन्दर कौर बब्बर

नई दिल्ली, 3 फरवरी। बजट सत्र के तीसरे दिन सोमवार को लोकसभा की कार्यवाही शुरू होते ही विपक्ष ने हंगामा शुरू कर दिया। वे महाकुंभ में मची भगदड़ की घटना पर सरकार से जवाब की मांग कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने जमकर नारेबाजी भी की। इस पर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सदन में नारेबाजी करने वाले विपक्षी दलों के सांसदों से कहा कि यदि जनता ने उन्हें नारे लगाने के लिए भेजा है जो यही काम करें या फिर कार्यवाही चलने दें। दरअसल, बजट सत्र के तीसरे दिन सदन की कार्यवाही आरंभ होते ही विपक्षी सदस्य महाकुंभ में मची भगदड़ की घटना पर सरकार से जवाब की मांग करते हुए नारेबाजी करने लगे। लोकसभा अध्यक्ष ने नारेबाजी कर रहे सदस्यों से कहा, इस विषय का उल्लेख राष्ट्रपति महोदया ने अपने अभिभाषण में किया था। आप लोग अभिभाषण पर चर्चा के दौरान यह विषय रख सकते हैं। उन्होंने कहा कि प्रश्नकाल महत्वपूर्ण समय होता है, जिसमें सरकार की जवाबदेही तय की जा सकती है। बिरला ने विपक्षी सदस्यों से सदन चलने देने की अपील की। समाजवादी पार्टी के कुछ सदस्य जब आसन के निकट पहुंचकर नारेबाजी करने लगे तो बिरला ने कहा, आपको जनता ने मेज तोड़ने के लिए नहीं भेजा है। प्रश्न पूछने के लिए

भेजा है। अगर इसीलिए भेजा है तो जोर-जोर से मारिए। उन्होंने कहा, अगर आपको देश की जनता ने नारेबाजी के लिए भेजा है तो यही काम करिए। यदि सदन चलाना चाहते हैं तो अपनी सीट पर जाकर बैठिए। उन्होंने प्रश्नकाल के बाद विपक्षी सदस्यों से कहा कि मैं आप सबसे आग्रह करना चाहता हूं कि आप जिन भी विषयों को उठाना चाहते हैं, राष्ट्रपति अभिभाषण पर चर्चा में उन सभी को उठा सकते हैं। आपको पर्याप्त समय और अवसर दिया जाएगा। बिरला ने कहा कि कई मंचों पर यह निर्णय हुआ है कि प्रश्नकाल स्थगित नहीं होना चाहिए, यह सभी सदस्यों की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि अन्य मुद्दे प्रश्नकाल के बाद उठाए जाने की परंपरा कायम की जानी चाहिए। उन्होंने हंगामा करने वाले सांसदों से कहा, हम संकल्प लें कि प्रश्नकाल कभी स्थगित न हो। यह मेरा आग्रह है। यदि आप नारेबाजी करने आए हैं, संसद को नियोजित तरीके से स्थगित कराने आए हैं, मेजें थपथपाने आए हैं तो मैं आपसे कुछ नहीं कह सकता। मैं आग्रह ही कर सकता हूं। विपक्षी दलों के सदस्यों ने 'प्रधानमंत्री जवाब दो' और 'शेम शेम' के नारे लगाए। बता दें कि मौनी अमावस्या के दिन प्रयागराज महाकुंभ में मची भगदड़ में कम से कम 30 लोगों की मौत हो गई थी। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी का आरोप है कि सरकार ने इस घटना में मृतकों का सही आंकड़ा नहीं बताया। इससे पहले संसद के निचले और ऊपरी दोनों सदन में ही जमकर हंगामा हुआ।

महाकुंभ हादसे में षड्यंत्र की बू, जया बच्चन का बेतुका बयान: रविशंकर

नई दिल्ली, 3 फरवरी। महाकुंभ हादसे को लेकर सोमवार को विपक्ष ने संसद में जमकर हंगामा किया। विपक्ष की मांग है कि स्थगन प्रस्ताव लाकर महाकुंभ हादसे पर चर्चा की जाए और मृतकों की संख्या की पुष्टि की जाए। विपक्ष ने राज्यसभा से इस मुद्दे पर वॉकआउट भी किया। लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान भाजपा सांसद रविशंकर प्रसाद ने आशंका जताई कि महाकुंभ हादसे में षड्यंत्र हो सकता है और हादसे की जांच के बाद पूरी तस्वीर साफ हो जाएगी। वहीं सपा सांसद जया बच्चन ने महाकुंभ हादसे को लेकर बेतुका बयान दिया और कहा कि इस वक्त सबसे दूषित पानी कुंभ का है क्योंकि भगदड़ के बाद लोगों के शव गंगा में बहाए गए। रविशंकर प्रसाद ने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर लोकसभा में चर्चा के दौरान कहा कि राष्ट्रपति ने अपने अभिभाषण में महाकुंभ की भी चर्चा की। कल रात तक खबर मिली कि 35 करोड़ लोग स्नान कर चुके हैं। उन्होंने हादसे पर दुख भी जताया, लेकिन उस हादसे की भी जांच चल रही है और उसमें भी षड्यंत्र की बू आ रही है। जब पूरी जांच हो जाएगी तो वो हादसा किसने करवाया, उन्हें शर्म से झुकना पड़ेगा। भाजपा सांसद ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि ये कुंभ और सनातन का नाम सुनते ही इन्हें परेशानी क्यों हो जाती है।

गाजियाबाद के सेंट मैरी स्कूल को मिली बम से उड़ाने की धमकी

गाजियाबाद, 3 फरवरी। गाजियाबाद के शालीमार गार्डन थाना इलाके में एक स्कूल को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। सूचना मिलते ही पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। साथ ही डॉग व बॉम स्कवाड की टीम भी पहुंची। आनन-फानन बच्चों को स्कूल मैदान में भेजा गया और जांच की गई। जानकारी के अनुसार, शालीमार गार्डन थाना इलाके में स्थित सेंट मैरी स्कूल को ईमेल पर सोमवार सुबह करीब सात बजे धमकी भरा मैसेज पहुंचा। स्कूल प्रबंधन ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। एसीपी शालीमार गार्डन सलोनी अग्रवाल ने बताया कि ईमेल में स्कूल को खाली करने और बम से उड़ाने की धमकी दी गई थी। सुरक्षा के लिहाज से तुरंत सभी बच्चों को स्कूल मैदान में भेज दिया गया। साथ ही डॉग व बॉम स्कवाड की टीम ने जांच शुरू की। छानबीन व तलाश करने फर्जी धमकी होने का पता चला। स्कूल प्रबंधक की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है। साथ ही जो ईमेल आया था उसकी जांच के लिए भी साइबर टीम लगाई गई है।

सरस्वती विद्या मंदिर केवल शिक्षा ही नहीं, संस्कार भी देता है: राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खां

नरेश मल्होत्रा

पटना, 3 फरवरी। बिहार के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खां ने पटना में सरस्वती विद्या मंदिर के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम के दौरान कहा कि यह संस्था न केवल बच्चों को शिक्षित करने का कार्य कर रही है, बल्कि उनमें भारतीय संस्कृति और संस्कारों का भी संचार कर रही है। उन्होंने कहा कि शिक्षा वह धन है जो दुनिया को बदल सकती है। लेकिन अगर उसमें करुणा, प्रेम और सौहार्द न हो, तो मनुष्य राक्षस भी बन सकता है। राज्यपाल ने पूज्य तपस्वी जगजीवन जी महाराज सरस्वती विद्या मंदिर में दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति ने विषम परिस्थितियों में भी अपनी पहचान बनाए रखी है। समय-समय पर यही संस्कृति हमें नई ऊर्जा प्रदान करती है। विद्या भारती एक ऐसी संस्था है जो शिक्षा के क्षेत्र में एक मजबूत आधार स्थापित कर रही है। राज्यपाल ने कहा कि जिसके पास ज्ञान तो है, लेकिन प्रेम और करुणा नहीं, वह समाज के लिए घातक बन सकता है। उन्होंने ऋग्वेद का उल्लेख करते हुए कहा कि यह दुनिया की सबसे प्राचीन ग्रंथों में से एक है। यह प्रमाणित करता है कि भारत ज्ञान और संस्कृति का केंद्र रहा है। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र कार्यवाह डॉ. मोहन सिंह, उत्तर प्रदेश क्षेत्र के संगठन मंत्री ख्यालीराम, प्रदेश सचिव प्रदीप कुमार कुशवाहा, और नालंदा के विभाग प्रमुख राजेश कुमार उपस्थित थे। विद्यालय के प्राचार्य अनंत कुमार सिंहा ने अतिथियों का परिचय कराया। डॉ. मोहन सिंह ने कहा कि विद्या भारती के अंतर्गत देशभर में 27,000 विद्यालय संचालित हो रहे हैं, जिनमें लगभग एक लाख से अधिक आचार्य संस्कारयुक्त शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह संस्था भारतीय संस्कृति की आधारशिला को सुदृढ़ करने के लिए कटिबद्ध है और शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा देने का कार्य कर रही है। संगठन मंत्री ने कहा कि विद्या भारती केवल शिक्षा ही नहीं, बल्कि बच्चों में देश के प्रति प्रेम और कर्तव्यबोध जागृत करने का कार्य भी कर रही है। उन्होंने इस अवसर पर विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को

शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में बच्चों ने विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से भारतीय परंपराओं की झलक दिखाई। समारोह की शुरुआत गणेश वंदना और स्वागत गीत से हुई। इसके बाद 'गोविंद हरे मुरारी' समूह नृत्य ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके अतिरिक्त, एनसीसी छात्रों ने योग प्रदर्शन, झिझिया (लोक नृत्य), महिला सशक्तिकरण पर नाटक, मिथिला गीत, बेटी हिंदुस्तान की, संथाली नृत्य और शिव कैलाश के वासी नृत्य के माध्यम से भारतीय परंपराओं को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। 'ब्रह्मर्षि विश्वामित्र' (रामायण प्रसंग) और 'रघुकुल रीति सदा चली आई' जैसी प्रस्तुतियों ने भारतीय संस्कारों की गरिमा को एक बार फिर सजीव कर दिया। अभिभावकों ने बच्चों की प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए कहा कि यह विद्यालय न केवल शिक्षा का केंद्र है, बल्कि भारतीय संस्कारों और मूल्यों को भी बढ़ावा देने वाला एक मंच है। कार्यक्रम के अंत में प्रदेश सचिव प्रदीप कुमार कुशवाहा और विभाग प्रमुख राजेश कुमार ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर मीडिया प्रमुख बीरेंद्र प्रताप गोपाल राय भी उपस्थित रहे। विद्यालय के आचार्यों और दीदियों के योगदान को भी विशेष रूप से सराहा गया।

खुद पर जानलेवा हमले के आईपीएस नायक के दावे की जांच हो: पलानीस्वामी

चेन्नई, 3 फरवरी। अन्नाद्रमुक महासचिव एडप्पादी के. पलानीस्वामी ने पुलिस भर्ती में अनियमितताओं को उजागर करने वाली वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी कल्पना नायर के आरोप की जांच करने और कड़ी कानूनी कार्रवाई करने का आग्रह किया। दरअसल, कल्पना नायक ने आरोप लगाया था कि पुलिस भर्ती में अनियमितताओं को उजागर करने के कारण उनकी जान लेने की कोशिश की गई। विपक्ष के नेता पलानीस्वामी ने मुख्यमंत्री एमके स्टालिन से आईपीएस करुणा नायक के लिए पर्याप्त सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की। उन्होंने मुख्यमंत्री से सवाल भी किए। पलानीस्वामी ने सीएम स्टालिन से पूछा, यह भयावह है कि अपने विभाग में अनियमितताओं को उजागर करने के लिए उनकी जान लेने की कोशिश की गई। इस पर मुख्यमंत्री स्टालिन क्या कहेंगे? सोशल मीडिया पोस्ट पर अन्नाद्रमुक के शीर्ष नेता ने कहा कि यह घटना पुलिस विभाग पर एक धब्बा है, जो केवल सीएम के अधीन काम करता है। द्रमुक सरकार को पुलिस विभाग की निंदनीय शर्मनाक स्थिति के लिए पूरी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। पूर्व मुख्यमंत्री पलानीस्वामी ने आईपीएस अधिकारी के लिए दुख व्यक्त करते हुए बताया कि पिछले साल उनके आधिकारिक कक्ष आग में जल गया था। यह घटना अब सामने आई है। इस हादसे के समय करुणा नायक तमिलनाडु यूनिफॉर्मड सर्विसेज रिक्रूटमेंट बोर्ड की एडीजीपी थीं। उन्होंने आगे कहा कि अगर घटना वाले दिन अधिकारी अपने कार्यालय में होती तो उनकी जान चली जाती। पलानीस्वामी ने पूछा, अगर एडीजीपी रैंक की अधिकारी के साथ ऐसा हो सकता है, तो आम लोग अपनी शिकायत कैसे दर्ज कराएंगे? उन्होंने आईपीएस नायक के आरोपों की पारदर्शिता के साथ जांच करने और आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की अपील की।

रूसी वायु रक्षा बलों ने रात भर में 70 यूक्रेनी ड्रोन मार गिराये

एजेंसी

मॉस्को। रूसी वायु रक्षा प्रणालियों ने रोस्तोव, वोल्गोग्राड, अस्त्रखान, वोरोनिश, बेलगोरोड और कुर्स्क क्षेत्रों में रात भर में 70 यूक्रेनी ड्रोनों को रोका और मार गिराया। यह जानकारी रूसी रक्षा मंत्रालय ने दी। मंत्रालय ने कहा कि पिछली रात सेवा में मौजूद वायु रक्षा प्रणालियों ने 70 यूक्रेनी मानव रहित हवाई वाहनों को रोका और मार गिराया। इनमें से 27 ड्रोन को रोस्तोव क्षेत्र में; वोल्गोग्राड क्षेत्र में 25 यूएवी; अस्त्रखान क्षेत्र में सात, वोरोनिश क्षेत्र में पांच, बेलगोरोड क्षेत्र में चार और कुर्स्क क्षेत्र में दो को मार गिराया गया।

दक्षिण अफ्रीका को वित्तीय सहायता देना बंद करेंगे ट्रंप

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि वह दक्षिण अफ्रीका को वित्तीय सहायता देना तब तक के लिए बंद कर देंगे, जब तक कि अमेरिका उन कुछ वर्गों के लोगों की जांच नहीं कर लेता, जिनके साथ वहां बहुत बुरा व्यवहार किया जा रहा है। श्री ट्रंप ने सबूतों का हवाला दिए बिना दावा किया है कि दक्षिण अफ्रीका में कुछ वर्गों के लोगों के साथ बहुत बुरा बर्ताव किया जा रहा है। उन्होंने ट्रुथ सोशल पर अपनी पोस्ट में कहा, दक्षिण अफ्रीका जमीन जब्त कर रहा है और कुछ वर्ग के लोगों के साथ बहुत बुरा व्यवहार कर रहा है। अमेरिका इसे बर्दाश्त नहीं करेगा, हम कार्रवाई करेंगे। इसके अलावा, मैं दक्षिण अफ्रीका को सभी भविष्य के वित्त पोषण को रोक दूंगा जब तक कि इस स्थिति की जांच पूरी नहीं हो जाती। यह स्पष्ट नहीं है कि श्री ट्रंप के पोस्ट का कारण क्या है। दक्षिण अफ्रीका ने अब तक उनकी टिप्पणी का कोई जवाब नहीं दिया है।

रूस में विस्फोट में एक व्यक्ति की मौत, चार घायल

मास्को। रूस के उत्तर-पश्चिमी मॉस्को में एक आवासीय परिसर में हुए विस्फोट में एक व्यक्ति की मौत हो गई और चार अन्य घायल हो गए। इससे पहले, आपातकालीन सेवाओं ने स्पूतनिक को बताया कि उत्तर-पश्चिमी मॉस्को में स्कार्लेट सेल्स आवासीय परिसर की एक इमारत की लॉबी में एक अज्ञात उपकरण में विस्फोट होने से तीन लोग घायल हो गए। आपातकालीन सेवाओं ने कहा, एविएट्सियोन्या स्ट्रीट पर स्थित स्कार्लेट सेल्स आवासीय परिसर की 29 मंजिला इमारत की लॉबी में हुए विस्फोट में एक व्यक्ति की मौत हो गई और चार लोग घायल हो गए।

रूस के पांच शहरों के हवाई अड्डों पर आगमन-प्रस्थान पर प्रतिबंध

मॉस्को। रूस में उड़ान सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अस्त्रखान, कज़ान, उल्यानोवस्क, निज़्नेकमस्क और सेराटोव हवाई अड्डों पर विमानों के आगमन एवं प्रस्थान पर अस्थायी प्रतिबंध लगाए गए हैं। यह जानकारी रूसी संघीय वायु परिवहन एजेंसी (रोसावियात्सिया) के प्रवक्ता आर्टेम कोरेन्याको ने दी। उन्होंने टेलीग्राम पर कहा कि नागरिक विमान उड़ानों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, आज सुबह हवाई अड्डों पर विमानों के आगमन एवं प्रस्थान पर अस्थायी प्रतिबंध लगाए गए, जिनमें अस्त्रखान, कज़ान, उल्यानोवस्क, निज़्नेकमस्क और सेराटोव शामिल हैं। हवाई अड्डों से अस्थायी रूप से उड़ानों का आगमन एवं प्रस्थान स्थगित कर दिया गया है।श्री कोरेन्याको ने कहा कि विमान चालक दल, हवाई यातायात नियंत्रक और हवाई अड्डा सेवाएं उड़ान सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक उपाय कर रहे हैं और यही मुख्य प्राथमिकता है।

यून ने मार्शल लॉ लगाने को ठहराया जायज, सत्तारूढ़ पार्टी के नेताओं से की मुलाकात

सोल । दक्षिण कोरिया के हिरासत में लिए गए राष्ट्रपति यून सुक योल ने सत्तारूढ़ पीपुल्स पावर पार्टी (पीपीपी) के नेतृत्व से मुलाकात की। उन्होंने नेताओं से युवाओं और लोगों में 'आशा जगाने' के लिए एकजुट होने की अपील की। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। यून ने सोल के दक्षिण में उइवांग में सोल डिटेंशन सेंटर में पीपीपी के अंतरिम नेता क्वोन यंग-से, पीपीपी के फ्लोर लीडर क्वोन सेओंग-डोंग और प्रतिनिधि ना क्यूंग-वोन के साथ अपनी बैठक के दौरान यह अपील की। ना ने बैठक के बाद कहा, '(यून) ने पार्टी से एकजुट होने और युवाओं सहित लोगों में आशा जगाने में भूमिका निभाने के लिए कहा।

सऊदी अरब ने भीख मांगते पकड़े गए 10 पाकिस्तानियों को वापस भेजा, बार-बार हो रही किरकिरी

एजेंसी

कराची। पाकिस्तान के लोगों की हज या उमराह के नाम पर सऊदी अरब जाकर वहां भीख मांगने की प्रवृत्ति से देश को बार-बार शर्मिंदगी उठानी पड़ी है।इसे रोकने को लेकर सऊदी शासन अब सख्त हो गया है। सऊदी अरब ने भीख मांगने वाले पाकिस्तानियों को पकड़ कर वापस उनके देश भेजना शुरू कर दिया है। हाल ही में उमराह वीजा पर सऊदी पहुंचे 10 ऐसे पाकिस्तानियों को वापस उनके देश भेज दिया जो वहां भीख मांगते हुए पकड़े गए थे। अपनी किरकिरी को देखते हुए पाकिस्तान ने इन सभी को वापस पहुंचते ही हवाई अड्डे से गिरफ्तार कर लिया। जीयो न्यूज के मुताबिक पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी फेडरल इन्वेस्टिगेटिव एजेंसी (एफआईए) ने बयान जारी कर कहा कि सऊदी अरब ने उमराह वीजा पर वहां जाकर भीख मांग रहे 10 पाकिस्तानियों को वापस भेज दिया है। कराची स्थित जिन्ना इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर उतरते ही इन सभी को

हिरासत में ले लिया गया। ये सभी पिछले कई महीनों से सऊदी अरब में भीख मांग रहे थे। इनके खिलाफ आगे की कार्रवाई के लिए उन्हें कराची एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग सर्किल भेजा दिया गया है। एफआईए का कहना है कि एयरपोर्ट पर इमिग्रेशन गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी जा रही है और विदेश यात्रा के लिए जा रहे यात्रियों की कड़ाई से चेकिंग की जा रही है। जिन लोगों पर शक हो रहा है कि वे भिखमंगी के लिए विदेश जा रहे हैं, उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा रही है। उल्लेखनीय है कि पिछले कई सालों से खाड़ी के देश पाकिस्तान के भिखारियों से परेशान हैं। खासकर कोरोना के बाद इनकी संख्या में भारी इजाफा हुआ है। पिछले साल भी सऊदी अरब ने पाकिस्तान से इसकी शिकायत की थी, ओवरसीज अधिकारियों की बैठक में सऊदी अरब ने पाकिस्तान से हज कोटा में सावधानी बरतने और भिखारियों को नहीं भेजने को कहा था। सऊदी का कहना है कि उसकी जेलें ऐसे लोगों से भर चुकी हैं। उल्लेखनीय है कि सऊदी अरब में करीब 25 लाख पाकिस्तानी रहते हैं और कुल प्रवासियों के मामले में पाकिस्तान दूसरे नंबर पर है। हाल के वर्षों में काफी संख्या में पाकिस्तानी नागरिक सऊदी अरब में भीख मांगते हुए पाए गए हैं। सऊदी अरब में भीख मांगना कानूनन जुर्म है जिसके लिए कैद की सजा के साथ-साथ भारी-भरकम जुर्माने का प्रावधान है। 2021 में भीख मांगने पर रोक लगाने के लिए सऊदी अरब ने कड़ा कानून लागू किया था, जिसके तहत भीख मांगने या भिखमंगों का ग्रुप मैनेज करने के लिए अधिकतम एक साल की सजा और एक लाख सऊदी रियाल (23 लाख 23 हजार 261 रुपये) जुर्माने का प्रावधान है। अगर कोई भीख मांगने वालों को किसी तरह से बढ़ावा देता है या उसकी पैसे से मदद करता है तो उसे अधिकतम छह महीने की जेल और 50 हजार सऊदी रियाल का जुर्माना देना पड़ सकता है। सजा और जुर्माना भरने के बाद उसे वापस उसके देश भेजा जाता है।

जापान में ठंडी लहर से भारी बर्फबारी और तेज़ हवाएं

एजेंसी

टोक्यो। जापान मौसम विज्ञान एजेंसी (जेएमए) ने कहा कि सर्दियों के मजबूत दबाव पैटर्न और मौसम की सबसे तीव्र ठंडी हवा के कारण मंगलवार से जापान सागर के किनारे के क्षेत्रों में भारी बर्फबारी और तेज हवाएं चलने का अनुमान है।

सुबह से पहले 24 घंटों में, भारी बर्फबारी होने की उम्मीद है, जिसमें होक्काइडो में 50 सेमी, होकुरिकु में 40 सेमी, तोहोकू में 30 सेमी, गिफु प्रांत में 25 सेमी, किंकी, चुगोकू और नाइगाटा प्रांत में 20 सेमी, और उत्तरी क्यूशू में 10 सेमी बर्फबारी होने का अनुमान है।जेएमए के अनुसार, पांच फरवरी की सुबह तक, बर्फबारी और बढ़ जाएगी, तोहोकू, होकुरिकु, निगाटा और गिफू में 70 सेमी, होक्काइडो, किंकी और चुगोकू में 50 सेमी, शिकोकू और उत्तरी क्यूशू में 20 सेमी और दक्षिणी क्यूशू में 15 सेमी तक पहुंच जाएगी। बर्फबारी के साथ तेज़ हवाएं भी चलेंगी, होक्काइडो में अधिकतम हवा की गति 23 मीटर प्रति सेकंड और तोहोकू में 20 मीटर प्रति सेकंड तक पहुंच जाएगी, क्रमशः 35 और 30 मीटर प्रति सेकंड तक की तेज़ हवाएं चलेंगी। उच्च लहरें और उथली

समुद्री स्थिति की उम्मीद है, कुछ क्षेत्रों में तूफानी परिस्थितियों का अनुभव होने का अनुमान है। जेएमए ने संभावित विघटनकारी बर्फबारी और बर्फानी तूफान की चेतावनी दी और लोगों से ईंधन आपूर्ति, आपातकालीन प्रावधानों और यात्रा योजनाओं की जांच करके तैयारी करने का आग्रह किया।

जापान ने नई पीढ़ी के एच3 रॉकेट से नेविगेशन उपग्रह किया लॉन्च

एजेंसी

टोक्यो। जापान ने अपनी अंतरिक्ष क्षमताओं को और मजबूत करते हुए एच3 रॉकेट के माध्यम से एक महत्वपूर्ण नेविगेशन उपग्रह का सफल प्रक्षेपण किया। यह उपग्रह जापान की अधिक सटीक और स्वायत्त स्थान निर्धारण प्रणाली विकसित करने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम है। मिचिबिकी-6 नामक इस उपग्रह को तनेगाशिमा अंतरिक्ष केंद्र से लॉन्च किया गया, जो जापान के दक्षिण-पश्चिमी द्वीप पर स्थित है। जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी (छ्ङ्क) ने पुष्टि की कि लॉन्च के सभी चरण सफलतापूर्वक पूरे हुए और उपग्रह को सही कक्षा में स्थापित कर दिया गया।

वर्तमान में जापान की अर्ध-जेनिथ उपग्रह प्रणाली (क्तंस्) चार उपग्रहों के साथ कार्यरत है, जिसे 2018 में पूरी तरह सक्रिय किया गया था। यह प्रणाली अमेरिकी जीपीएस तकनीक के साथ मिलकर स्मार्टफोन, ऑटोमोबाइल, समुद्री नेविगेशन और ड्रोन संचालन के लिए

उच्च-स्तरीय स्थान संबंधी जानकारी प्रदान करती है। जापान मार्च 2026 तक सात उपग्रहों का नेटवर्क विकसित करने के लिए दो और उपग्रहों का प्रक्षेपण करेगा। इसके अलावा, 2030 के दशक के अंत तक 11 उपग्रहों का पूर्ण नेटवर्क स्थापित करने की योजना बनाई गई है, जिससे जापान की नेविगेशन प्रणाली और भी सटीक और आत्मनिर्भर हो जाएगी। यह प्रक्षेपण जापान के अंतरिक्ष अन्वेषण और तकनीकी नवाचार में बढ़ती ताकत को दर्शाता है। भविष्य में, यह प्रणाली वैश्विक स्तर पर संचार और नेविगेशन सेवाओं को नया आयाम देने में योगदान दे सकती है।

इजराइली प्रधानमंत्री नेतन्याहू अमेरिका दौरे पर, राष्ट्रपति ट्रंप से करेंगे अहम मुलाकात

एजेंसी

वॉशिंगटन। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू एक महत्वपूर्ण राजनयिक यात्रा पर अमेरिका पहुंचे हैं, जहां वह राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से मुलाकात करेंगे। यह बैठक मंगलवार, 04 फरवरी को व्हाइट हाउस में होगी और दोनों नेताओं के बीच क्षेत्रीय सुरक्षा, गाजा संघर्ष-विराम और रणनीतिक सहयोग पर चर्चा होने की संभावना है। नेतन्याहू ने रवाना होने से पहले कहा कि यह दौरा इजराइल-अमेरिका संबंधों को और मजबूत करने का अवसर है। बैठक के दौरान गाजा पट्टी में स्थायी शांति, ईरान के बढ़ते प्रभाव को रोकने और अरब देशों के साथ राजनयिक संबंधों को और मजबूत करने जैसे मुद्दों पर विचार-विमर्श किया जाएगा। इस मुलाकात का समय इसलिए भी खास है क्योंकि गाजा संघर्ष-विराम के दूसरे चरण को लेकर वार्ता जल्द शुरू होने वाली है। इससे पहले हुए समझौतों के तहत बंधकों की अदला-बदली की गई थी, जिससे शांति प्रक्रिया को आगे बढ़ाने

की उम्मीदें बनी हैं।

वहीं पिछले महीने संघर्ष-विराम के प्रभावी होने के बाद गाजा पट्टी पर फिर से नियंत्रण हासिल करने वाले हमास गुट ने कहा है कि वह युद्ध की समाप्ति और इजराइली बलों की पूर्ण वापसी के बाद ही दूसरे चरण में मुक्त किए जाने वाले बंधकों को रिहा करेगा। 19 जनवरी से लागू गाजा युद्ध विराम समझौते के तहत अब तक चार बार बंदियों की अदला-बदली की गई है। इस दौरान हमास ने इजरायली बंधकों को मुक्त किया है, जिसके बदले में इजराइल ने फिलिस्तीनी कैदियों को रिहा किया।बतादें कि व्हाइट हाउस में मंगलवार को नेतन्याहू के साथ होने वाली बैठक राष्ट्रपति निर्वाचित होने के बाद ट्रंप की किसी विदेश नेता के साथ पहली बैठक होगी।

सऊदी के शाह और सीरिया के अंतरिम राष्ट्रपति ने मुलाकात की

एजेंसी

रियाद। सऊदी के शाह एवं प्रधानमंत्री मोहम्मद बिन सलमान अल सऊद और सीरिया के अंतरिम राष्ट्रपति अहमद अल-शरा ने रियाद में द्विपक्षीय संबंधों और सीरिया में नवीनतम विकास पर समीक्षा के लिए एक दूसरे से मुलाकात की।

सऊदी प्रेस एजेंसी ने बताया कि दोनों पक्षों ने सीरिया की सुरक्षा और स्थिरता को बढ़ाने के तरीकों के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग के अवसरों पर चर्चा की तथा क्षेत्रीय विकास और उन्हें संबोधित करने के लिए चल रहे प्रयासों पर विचारों का आदान-प्रदान किया। सऊदी के शाह ने श्री अल-शरा को सीरिया का राष्ट्रपति पद संभालने पर बधाई दी और सीरियाई लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने में उनकी सफलता की कामना की। श्री अल-शरा ने क्राउन

प्रिंस की शुभकामनाओं, सीरिया और उसके लोगों के प्रति राज्य के सहायक रुख के लिए उनका आभार व्यक्त किया। वह अपनी पहली आधिकारिक विदेश यात्रा के लिए सऊदी की राजधानी पहुंचे।

उल्लेखनीय है कि उन्होंने 2017 से हयात तहरीर अल-शाम समूह का नेतृत्व किया है और उस हमले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसके कारण दिसंबर 2024 में पूर्व सीरियाई राष्ट्रपति बशर अल-असद को उखाड़ फेंका गया तथा सीरियाई संक्रमणकालीन सरकार की स्थापना हुई। श्री असद के सत्ता से हटने के बाद से वह देश के वास्तविक नेता रहे हैं।

सीरिया के सैन्य संचालन प्रशासन ने 29 जनवरी को संक्रमणकालीन अवधि के दौरान राष्ट्रपति के रूप में श्री अल-शरा की नियुक्ति की घोषणा की, जिससे उन्हें स्थायी संविधान की पुष्टि होने तक अंतरिम विधान परिषद स्थापित करने का अधिकार मिल गया।

सोमालिया में इस्लामिक स्टेट समूह पर हवाई हमले का आदेश दिया है– ट्रंप

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि उन्होंने सोमालिया में इस्लामिक स्टेट (आईएस) समूह के एक वरिष्ठ हमला योजनाकार और अन्य लोगों पर सैन्य हवाई हमले का आदेश दिया है। बीबीसी की एक रिपोर्ट के अनुसार, ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया, ये हत्यारे, जिन्हें हमने गुफाओं में छिपा हुआ पाया, ने अमेरिका और हमारे सहयोगियों को धमकी दी।

हमलों ने उन गुफाओं को नष्ट कर दिया जिनमें वे रहते थे और नागरिकों को किसी भी तरह से नुकसान पहुंचाए बिना कई आतंकवादियों को मार डाला। सोमालिया के राष्ट्रपति के कार्यालय ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि उन्हें देश के उत्तरी हिस्से में वरिष्ठ आईएस नेतृत्व को निशाना बनाकर किए गए अमेरिकी हमले के बारे में सूचित किया गया है।बीबीसी हताहतों की रिपोर्ट की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं कर सका। ट्रंप ने हमलों में निशाना बनाए गए किसी भी व्यक्ति का नाम नहीं लिया।

कांगो में बिगड़ती सुरक्षा स्थिति, भारतीय दूतावास ने नागरिकों को सुरक्षित स्थानों पर जाने की सलाह दी

एजेंसी

जोहान्सबर्ग। कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (डीआरसी) में बिगड़ती सुरक्षा स्थिति के मद्देनजर किंशासा स्थित भारतीय दूतावास ने बुकावु में रहने वाले सभी भारतीय नागरिकों को तत्काल सुरक्षित स्थानों पर जाने की सलाह दी है।

दूतावास ने जारी परामर्श में बताया कि एम23 विद्रोही समूह बुकावु से मात्र 20-25 किलोमीटर की दूरी पर पहुंच चुका है, जिससे वहां की स्थिति और अधिक संवेदनशील हो गई है। इस परिदृश्य को देखते हुए भारतीय नागरिकों से कहा गया है कि वे जल्द से जल्द सुरक्षित स्थानों की ओर प्रस्थान करें।

दूतावास ने आपातकालीन स्थिति में संपर्क के लिए हेल्पलाइन नंबर (+243 - 890024313) और एक ईमेल आईडी जारी की है। साथ ही, भारतीय नागरिकों को सतर्क रहने और यात्रा से बचने की कड़ी

सलाह दी गई है। परामर्श में यह भी स्पष्ट किया गया है कि फिलहाल हवाई अड्डे, सीमाएं और वाणिज्यिक मार्ग खुले हैं, जिससे भारतीय नागरिक सुरक्षित स्थानों पर पहुंच सकते हैं।नई दिल्ली में विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल के अनुसार, गोमा में लगभग 1,000 भारतीय नागरिक रहते हैं, जिनमें से अधिकांश ने संघर्ष शुरू होते ही सुरक्षित स्थानों की ओर रुख कर लिया था। इसके अलावा, संयुक्त राष्ट्र

दूतावास ने जारी परामर्श में बताया कि एम23 विद्रोही समूह बुकावु से मात्र 20-25 किलोमीटर की दूरी पर पहुंच चुका है, जिससे वहां की स्थिति और अधिक संवेदनशील हो गई है।

शांति मिशन के तहत करीब 1,200 भारतीय सैनिक कांगो में सेवा दे रहे हैं। भारतीय दूतावास लगातार हालात पर नजर रख रहा है और आवश्यकतानुसार नागरिकों को मदद पहुंचाने के लिए तैयार है। नागरिकों से आग्रह किया गया है कि वे सतर्क रहें और अनावश्यक जोखिम न लें।

नेपाल सरकार ने अगले आर्थिक वर्ष से पेय जल को टैक्स फ्री करने का किया ऐलान

एजेंसी

काठमांडू। नेपाल सरकार ने आम लोगों के घरों में इस्तेमाल होने वाले पेयजल को कर मुक्त करने की घोषणा कर दी है। सरकार की तरफ से आम लोगों के घर में नल से प्रयोग के आने वाले पानी पर अगले आर्थिक वर्ष से कोई भी टैक्स नहीं लगने की बात कही गई है।

राजधानी काठमांडू के करीब चंद्रगिरि में आयोजित एक कार्यक्रम में मंत्री यादव ने बताया कि जलस्रोत के मामले में विश्व के धनी देशों में से एक नेपाल में आम लोगों से पीने के पानी पर टैक्स वसूलना विडंबना है। नेपाल के केंद्रीय पेय जल मंत्री प्रदीप यादव ने अगले आर्थिक वर्ष से पानी पर कोई भी टैक्स नहीं लगने की बात कही है। अब तक किसी भी पूर्ववर्ती सरकार ने इस बारे में कभी न तो ध्यान दिया और न ही ही उपभोक्ताओं के हित के बारे में विचार किया। मंत्री प्रदीप यादव ने कहा कि उनके

कार्यकाल में आम जनता को पीने के पानी पर लगने वाले सभी प्रकार के टैक्स से मुक्ति दिलाई जाएगी। उन्होंने कहा कि देश के एक-एक नागरिक को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना उनकी प्राथमिकता है। इसलिए पीने के पानी के लिए हर समस्या का समाधान किया जा रहा है। मंत्री यादव ने बताया कि आने वाले बजट में सभी सरकारी और सामुदायिक विद्यालयों में भी छात्रों को शुद्ध पेय जल उपलब्ध कराने के लिए नई योजना की घोषणा की जाएगी।

जर्मनी के पूर्व राष्ट्रपति होर्स्ट कोहलर का निधन

एजेंसी

बर्लिन। जर्मनी के पूर्व राष्ट्रपति होर्स्ट कोहलर का निधन हो गया है। वह 81 वर्ष के थे। जर्मनी के संघीय राष्ट्रपति कार्यालय ने बताया

कौमी पत्रिका

संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।

Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002

फोन : 011-41509689, 23315814

मोबाइल नंबर : 9312262300

E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in

R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472

Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

पोखरा और भैरहवा अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा का संचालन चीनी कंपनी को देने के लिए नए कानून लाने की तैयारी

एजेंसी

काठमांडू। नेपाल के दो नए हवाईअड्डे के संचालन की जिम्मेदारी चीनी कंपनियों को सौंपने के लिए सरकार के तरफ से कानून में ही फेरबदल किए जाने की तैयारी कर ली है। चीन की शुरू से नजर पोखरा अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा और भैरहवा का गौतम बुद्ध अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा पर बनी हुई है। सरकार के तरफ से नागरिक उड्डयन मंत्री बद्री पांडे ने आज संसद सचिवालय में हवाईअड्डा संचालन को लेकर नए विधेयक पेश करने के लिए सूचीकृत किया है। इन विधेयक में नेपाल के दो नए हवाई अड्डा सहित काठमांडू के त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा के संचालन को निजी क्षेत्र या सार्वजनिक क्षेत्र को देने के लिए कानून के आवश्यक संशोधन का प्रस्ताव किया गया है। संसद के चालू शीतकालीन सत्र में हवाईअड्डा संचालन को लेकर जो प्रस्तावित विधेयक है उस बारे में जानकारी देते हुए मंत्री बद्री पांडे ने कहा कि अब देश के तीनों अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा और आंतरिक हवाई अड्डा के संचालन की जिम्मेदारी निजी देशी विदेशी कंपनियों को देने के लिए रास्ता खुलने वाला है। उन्होंने बताया कि अंतरराष्ट्रीय प्रचलन के मुताबिक ही हवाईअड्डे की स्तरोन्नति करने, यात्रियों की सुविधाओं में इजाफा करने, हवाईअड्डों की सौंदर्यीकरण के लिए

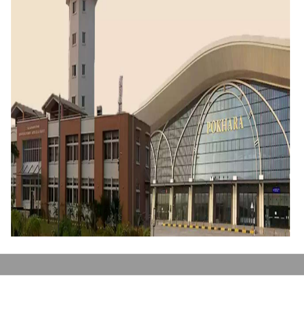

इसे निजी क्षेत्र को सौंपने के लिए कानून में संशोधन किया जा रहा है। मंत्री पांडे ने यह भी कहा कि नेपाल की कुछ कंपनियों ने विदेश में हवाईअड्डा संचालन में अनुभव रखन वाले कंपनियों के साथ समझौता किया है जिसकी दिलचस्पी के बाद यह कानून लाया जा रहा है। नागरिक उड्डयन मंत्री ने किसी देश का नाम नहीं लिया लेकिन नेपाल की बड़ी व्यावसायिक घराने चौधरी ग्रुप ने चीन की दो तीन कंपनियों के साथ नेपाल के हवाईअड्डे के संचालन के लिए समझदारी भी किया है। चौधरी समूह के अध्यक्ष विनोद चौधरी, जो कि नेपाली कांग्रेस के संसद भी हैं, ने अपने पहुंच के आधार यह कानून में बदलाव लाने का वातावरण तैयार किया है।

कहने के लिए तो चौधरी समूह भारत के अडानी समूह के साथ भी हवाईअड्डे संचालन के लिए बातचीत को शुरू किया था लेकिन यह बातचीत उतनी सफल नहीं हो पाई। हालांकि चौधरी ग्रुप ने पहले ही चीनी कंपनी के साथ समझदारी पत्र पर हस्ताक्षर कर लिया है। चीन के तरफ से भी नेपाल सरकार के भीतर पिछले दो साल से लगातार इस बात के लिए लाबिंग की जा रही है कि उसके ऋष्टा से बने पोखरा और भैरहवा का अंतराष्ट्रीय हवाईअड्डे के संचालन की जिम्मेदारी चीनी कंपनी को दिया जाए।

दिल्ली पुलिस और होमगार्ड के लिए पोस्टल बैलेट से मतदान शुरू

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस और दिल्ली होमगार्ड कर्मियों ने डाक मतपत्रों के माध्यम से दिल्ली विधानसभा चुनाव (डीएलएई-2025) के लिए रविवार से वोट डालना शुरू कर दिया है। दिल्ली पुलिस और दिल्ली होमगार्ड से डाक मतपत्र जारी करने के लिए कुल 16,984 फॉर्म-12 प्राप्त हुए हैं। मुख्य निर्वाचन कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार डाक मतपत्र मतदान प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए, 70 आरओ में से प्रत्येक ने अपने परिसर में अपना स्वयं का सुविधा केंद्र स्थापित किया है। ये केंद्र पात्र मतदाताओं की सक्रिय रूप से सहायता कर रहे हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि पूरी प्रक्रिया सभी कर्मियों के लिए सुचारू, सुलभ और कुशल हो। होमगार्ड सहित सभी पुलिस कर्मियों के लिए डाक मतपत्र प्रक्रिया चार फरवरी तक उपलब्ध रहेगी। वहीं इस सुविधा का उद्देश्य अधिकारियों को अपने आधिकारिक कर्तव्यों को पूरा करते हुए चुनावी प्रक्रिया में भाग लेने के लिए एक सुविधाजनक और सुरक्षित तरीका प्रदान करना है।

'आप-दा' से त्रस्त दिल्ली के 360 गांवों और 36 बिरादरी के लोगों ने भाजपा को दिया समर्थन : अमित शाह

नई दिल्ली। भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने दिल्ली के गांव देहात के एक प्रतिनिधिमंडल से आज मुलाकात की। उन्होंने कहा कि 'आप-दा' से त्रस्त इन 360 गांवों और 36 बिरादरी के

लोगों ने अपना पूरा समर्थन भाजपा को दिया है। सोशलमीडिया एक्स पर इसकी जानकारी साझा करते हुए अमित शाह ने कहा कि दिल्ली देहात के 360 गांवों के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की। अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली देहात के लोगों को केवल झूठ बोला और धोखा दिया। दिल्ली देहात की समस्याओं का समाधान गरीब परिवार से आए मोदी ही कर सकते हैं। 'आप-दा' से त्रस्त इन 360 गांवों और 36 बिरादरी के लोगों ने अपना पूरा समर्थन भाजपा को दिया है।

कोई गुंडागर्दी की घटना होती है तो ''हैशटैग'' करके ट्वीट करें : केजरीवाल

नई दिल्ली। पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी (आआपा) के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने प्रेस वार्ता कर भाजपा पर हमला बोला। केजरीवाल ने गृहमंत्री पर आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा बुरी तरह से हार रही है। गृहमंत्री अमित शाह बुरी तरह से बौखला गए हैं। अब वो दिल्ली के लोगों पर हमले करवा रहे हैं। जगह-जगह लोगों को खुलेआम पीटा जा रहा है। पुलिस को ऊपर से आदेश है कि कुछ नहीं करना। मजबूरी पुलिस खड़े होकर जनता पर खुले आम हो रही हिंसा को देख रही है। केजरीवाल ने आरोप लगाते हुए कहा कि हिंसा के बाद हमला करने वालों को पुलिस भगा रही है और पीड़ित व्यक्ति को गिरफ्तार करके उस पर फर्जी केस किया जा रहा है। प्रेस वार्ता में आगे केजरीवाल ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि अब अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा के लिए हम सबको आवाज उठानी होगी। हम सबको एकजुट होना होगा। ऐसे में वह आज से एक ''हैशटैग'' की शुरुआत कर रहे हैं। केजरीवाल ने ''हैशटैग'' पर जोर देते हुए कहा कि अगर दिल्ली में कहीं भी आपके साथ गुंडागर्दी हुई तो आप इस हैशटैग को इस्तेमाल करके ट्वीट कीजिए। अगर आप कोई ऐसे मामले को जानते हैं, तो भी इस हैशटैग को इस्तेमाल करके ट्वीट कीजिए। वह सबसे अपील कर रहे है कि अगर कहीं भी कोई गुंडागर्दी की घटना होती है तो उसकी वीडियो जरूर बना लें।

पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने मुख्य चुनाव आयुक्त को लिखी चिट्ठी

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी (आआपा) संयोजक अरविंद केजरीवाल ने मुख्य चुनाव आयुक्त को चिट्ठी लिखी है। जिसमें उन्होंने नई दिल्ली विधानसभा क्षेत्र में आआपा कार्यकर्ताओं पर हो रहे कथित हमले का जिक्र किया है। उन्होंने चिट्ठी में लिखा है कि ऐसी घटनाओं के लिए जिम्मेदार पुलिसवालों को तुरंत सस्पेंड किया जाए। इसके साथ ही हमला करने वाले भाजपा कार्यकर्ताओं को तुरंत गिरफ्तार किया जाए। केजरीवाल ने चुनाव आयोग से नई दिल्ली विधानसभा में इंडिपेंड इलेक्शन ऑब्जर्वर नियुक्त करने की मांग की है। उल्लेखनीय है कि नई दिल्ली विधानसभा सीट इस चुनाव में सबसे हाईप्रोफाइल सीट है। यहां पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, भाजपा से प्रवेश वर्मा और कांग्रेस से संदीप दीक्षित चुनावी मैदान में हैं। इस सीट पर सबसे ज्यादा प्रत्याशी चुनाव लड़ रहे हैं।

'अपना पूर्वांचल' संस्था के संचालक आकाश शर्मा और राजेंद्र नगर वार्ड से भाजपा की महिला ब्लॉक अध्यक्ष आआपा में हुई शामिल

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले आम आदमी पार्टी (आआपा) में 'अपना पूर्वांचल' संस्था के संचालक आकाश शर्मा और राजेंद्र नगर वार्ड से भाजपा की महिला ब्लॉक अध्यक्ष डिंपल शर्मा अपनी पूरी टीम के साथ शामिल हुए। आआपा के वरिष्ठ नेता व विधायक दुर्गेश पाठक ने पटका व टोपी पहनाकर सभी को पार्टी की सदस्यता दिलाई।

इस दौरान दुर्गेश पाठक ने कहा कि आकाश शर्मा दिल्ली एनसीआर में पूर्वांचल समाज के लिए संघर्ष करते हैं और उन्हें न्याय दिलाने का काम करते हैं। इनके जुड़ने से आआपा को और मजबूती मिलेगी। दुर्गेश पाठक ने कहा कि वह दोनों का आआपा में स्वागत करता हूं। इस मौके पर आकाश शर्मा ने कहा कि सदियों से पूर्वांचल समाज का शोषण होता आ रहा है। लेकिन जब उन्होंने देखा कि ऐसी कौन सी सरकार है जो पूर्वांचल समाज के लिए, उनके बच्चों के भविष्य के लिए काम कर रही है? तो पूरा हिसाब करने के बाद उन्हें पता चला कि आआपा सबसे अच्छी है। इसके कई कारण हैं। आआपा ने कई जन सुविधाएं दी हैं। फ्री बिजली, पानी, शिक्षा, इलाज और महिलाओं के लिए फ्री बस यात्रा करने का काम किया है। साथ ही, अब महिलाओं के लिए 2100 रुपये की सम्मान राशि की भी घोषणा की है।डिंपल शर्मा ने कहा कि भाजपा ने राजेंद्र नगर से उमंग बजाज को उम्मीदवार बनाया है। उन्होंने बजाज पर आरोप लगाते हुए कहा कि वह एक बहुत आलसी व्यक्ति है। वह खुद ही दिन के 2 बजे उठते हैं तो वह दूसरों की समस्याओं के कैसे समझेंगे। भाजपा में महिलाओं का सम्मान नहीं होता है।

भाजपा ने ऑडियो जारी कर आम आदमी पार्टी विधायक सोमनाथ भारती पर लगाया आरोप

एजेंसी

नई दिल्ली। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ संबित पात्रा ने आज एक ऑडियो क्लिप जारी कर आरोप लगाया कि आम आदमी पार्टी (आआपा) विधायक सोमनाथ भारती ने एक जांच अधिकारी को धमकाकर जमीन हड़पने के मामले को रफ़ादफ़ा करने की कोशिश की है। इस प्रेस वार्ता में राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रदीप भंडारी और प्रदेश प्रवक्ता डॉ अनिल गुप्ता भी उपस्थित रहे।

संबित पात्रा ने कहा, आआपा की सबसे बड़ी पूंजी ही भ्रष्टाचार है, चाहे वह दिल्ली जल बोर्ड घोटाला, डीटीसी बस घोटाला या फिर अन्य कोई घोटाला हो। इन्हीं में से एक बड़ा मामला जमीन हड़पने का भी है। जमीन घोटाला तो जैसे 'आआपा' नेताओं का कारोबार बन चुका है।

उन्होंने आगे कहा कि एक तरफ अरविंद केजरीवाल शीशमहल में

रहते हैं, तो उनके विधायक भी किसी से कम नहीं हैं। ऐसा लगता है कि घोटाला 'आआपा' नेताओं के लिए पर्यायवाची बन चुका है। डॉ संबित पात्रा ने बताया कि 10 नवंबर 2023 को जैतपुर में एक व्यक्ति की ज़मीन हड़प ली गई। ज़मीन हड़पने वाला व्यक्ति आम आदमी पार्टी विधायक सोमनाथ भारती का करीबी बताया जा रहा है। पेशे से वकील होने के कारण, सोमनाथ भारती अपने मित्र को बचाने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहे थे। उन्होंने कहा कि स्टिंग ऑपरेशन में यह सब कुछ रिकॉर्ड हो गया। इस ऑडियो में सोमनाथ भारती को साफ तौर पर यह कहते सुना जा सकता है कि पैसे लो और लॉजिक को भूल जाओ, उस मेमो को फाड़ दो।' जमीन हड़पने वाले के खिलाफ पीड़ित व्यक्ति ने एफआईआर दर्ज करवाई, और केस की पूरी जानकारी सीज़र मेमो में दर्ज की गई। इस मामले में सोमनाथ भारती जाँच अधिकारी को सीज़र मेमो फाड़ने की धमकी दे रहे हैं। डॉ पात्रा ने इस पर कटाक्ष करते हुए कहा कि जांच अधिकारी को धमकाया जा रहा है, लेकिन वह साफ इनकार कर रहा है। आज 'डकैत' के घर में ही डकैती हो गई है। अरविंद केजरीवाल हमेशा भोली सूरत बनाकर जनता को धोखा देते हैं, लेकिन उनके विधायक क्या खेल खेल रहे हैं, यह अब जनता के सामने आ चुका है।

दिल्ली के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) कार्यालय ने इंडिया गेट पर 'प्रोजेक्शन मैपिंग शो' का आयोजन

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय ने एक फरवरी को इंडिया गेट पर 'प्रोजेक्शन मैपिंग शो' का आयोजन किया। जिसमें लोकतंत्र का जश्न मनाया गया और आगामी दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 में मतदाताओं की भागीदारी को प्रोत्साहित किया गया। इस अवसर पर उप चुनाव आयुक्त हिरदेश कुमार मुख्य अतिथि रहे। इस अवसर पर दिल्ली की मुख्य निर्वाचन अधिकारी आर. एलिस वाज और डीएम/डीईओ (नई दिल्ली) सनी कुमार सिंह भी उपस्थित थे। इस अवसर पर मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि यह कार्यक्रम दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 में अधिकतम मतदाता भागीदारी सुनिश्चित करने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। सीईओ ने आगे कहा, 'जब हर आवाज़ सुनी जाती है, और हर वोट मायने रखता है, तो लोकतंत्र फलता-फूलता है। सीईओ ने आगे अपील करते हुए कहा कि सभी लोग आगे आएं और अपना वोट डालें, ताकि हमारे भविष्य को आकार देने में उनकी आवाज़ अहम हो।' इस पहल का उद्देश्य लोगों, विशेष रूप से पहली बार मतदान करने वालों को लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करना है। मुख्य निर्वाचन कार्यालय, दिल्ली स्वतंत्र, निष्पक्ष और समावेशी चुनाव सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है और अभिनव पहलों के माध्यम से मतदाता जागरूकता को बढ़ावा देने के प्रयास जारी रखेगा।

आम आदमी पार्टी बच्चों के हाथों में पेन और कॉपी पकड़ाने का काम करती है : भगवंत मान

एजेंसी

नई दिल्ली। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने दिल्ली की अलग-अलग विधानसभाओं में ताबड़तोड़ जनसभा व रोड शो कर आम आदमी पार्टी के प्रत्याशियों के समर्थन में जनता से वोट की अपील की। उन्होंने कहा कि दिल्ली की जनता एक बार फिर काम की राजनीति करने वाले केजरीवाल की सरकार बनाएंगे। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी बच्चों के हाथों में पेन और कॉपी पकड़ाने का काम करती है। वहीं भाजपा चुनाव हार रही है।

भगवंत मान ने कहा कि दिल्ली के लोगों में आम आदमी पार्टी को लेकर भारी उत्साह है। झाड़ू का बटन दबाकर दिल्ली से भाजपा का सफाया करेंगे। भगवंत मान ने संगम विहार में दिनेश मोहनिया के लिए जनसभा, जंगपुरा में मनीष सिसोदिया, मालवीय नगर में सोमनाथ भारती और राजेंद्र नगर में दुर्गेश पाठक के समर्थन में रोड शो की।

इस दौरान उन्होंने कहा कि अरविंद केजरीवाल दिल्ली के लोगों के दिलों में बसते हैं। लोगों का जोश बता रहा है कि उन्होंने एक बार फिर आम आदमी पार्टी की सरकार चुनकर अरविंद केजरीवाल को चौथी बार मुख्यमंत्री बनाने का मन बना लिया है। 05 फरवरी को झाड़ू का बटन दबाकर आपकी जिम्मेदारी खत्म और अगले पांच साल के लिए हमारी जिम्मेदारी फिर से शुरू हो जाएगी।

'आप' ने लॉन्च किया योजनाओं का बचत वेब पोर्टल

एजेंसी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आआपा) ने aap-kibachat.com नाम से वेब पोर्टल लॉन्च किया है। पार्टी का कहना है कि इससे दिल्लीवासी विभिन्न सरकारी योजनाओं से होने वाली बचत का पता लगा सकते हैं। आआपा की मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ ने रविवार को प्रेस वार्ता कर बताया कि दिल्ली के लोग इस वेब पोर्टल पर जाकर हर महीने हो रही अपनी बचत का हिसाब लगा सकते हैं। एक अनुमान के मुताबिक, दिल्ली में फ्री बिजली, पानी, शिक्षा, इलाज व महिलाओं की बस सफर से हर परिवार की कम से कम 25 हजार रुपये की बचत हो रही है। उन्होंने कहा कि आआपा सरकार बनने के बाद महिला सम्मान, संजीवनी योजना और छात्रों की फ्री बस यात्रा व मेट्रो किराए में 50 फीसद की छूट लागू की जाएगी। इसके बाद आवश्यक चीजों पर लगा जीएसटी खत्म कर दिया जाए। एक तरफ खपत वाली सरकार है, जिसने जनता

दिल्लीवालों को हर महीने कम से कम 35 हजार रुपये की बचत होगी। प्रियंका कक्कड़ ने आगे कहा कि उनकी सरकार ने कहा था कि भाजपा की सरकार घोषणा कर दे कि वह 16 लाख करोड़ रुपये माफ नहीं करेगी, ताकि लोगों की ईएमआई, इनकम टैक्स की दरें आधी हो जाएं और को वोट और नोट बैंक समझकर लोगों से केवल टैक्स निचोड़ा है। वहीं दूसरी तरफ आआप की सरकार है जिसने लोगों की बचत कराई है। आज लोगों की औसतन 25 हजार रुपये की बचत हो रही है और आने वाली योजनाओं से 10 हजार रुपये की बचत होगी।

NAME CHANGE
I Arvind Kumar S/O: Ombir,R/O Rori, PO: Govindpuri, DIST: Ghaziabad, Uttar Pradesh - 201201,declare that name of my minor son has been wrongly written as Yash kumar in my minor son namely Shiva Tanwar aged 12 years in his Adhar card .The actual name of my minor son is Shiva Tanwar, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
It is for general information that I, RAJENDER KUMAR PANDEY S/o RAM SUNDER PANDEY R/o Q-1/63E, Flat No.-106, Second Floor, Budh Vihar Phase-1, Delhi-110086 declare that name of mine and my minor daughter has been wrongly written as R K PANDEY and ANJIKA in my minor daughter ANJIKA PANDEY aged 14 years in her School Record and Birth Certificate No. MCDOLIR-0110-004384160. The actual name of mine and my minor daughter are RAJENDER KUMAR PANDEY and ANJIKA PANDEY respectively.

NAME CHANGE
I, VANDANA RANJAN PANDEY W/O RAJEEV RANJAN PANDEY R/O TOWER NO-6A, FLAT-304, VALLEY VIEW ESTATE, GWAL PAHARI, GURGAON, HARYANA-122003, HAVE CHANGED MY MINOR SON NAME URVANSH RANJAN PANDEY TO URVANSH RANJAN FOR ALL FUTURE PURPOSES.

Name Change & Dob Change
I, CHANDRA SHEKHAR is son of No. GS-167267W Rank- COOK Name- SIKANDER RAM R/O VILLAGE ARDAUNA, ARDAUNA, PO-ARDAUNA, DISTT- MAU, UTTAR PRADESH-121705, have changed my name from CHANDRA SHEKHAR to CHANDRASHEKHAR and have changed my date of birth from 27/04/1994 to 05/09/2005 for all future purposes. Vide affidavit Dated 03.02.2025 Before Sub Divisional Magistrate Delhi.

NAME CHANGE
I, MOHAMMAD EJAZ S/O MOHAMMAD TAIYAB ANSARI residing at 313/84/1 GALI NO-5 TULSI NAGAR INDER LOK DELHI 110035 have changed my name to MOHAMMAD EJAZ ANSARI for all future purpose.

NAME CHANGE
I, No-15440659L Rank-NK/AA Name-TOUSEEFAHMAD DALAWAYI R/o VILL-HUDALI, PO-HUDALI, TEH-BELAGAVI, DIST-BELAGAVI, KARNATAKA-591346 have changed my mother's name from BEBIJAN to BEEBIJAN DALAWAI for all future purposes vide Affidavit dated 03/02/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I ARYAN ANAND S/O SUNIL KUMAR SUMAN R/O D-202 RANJIT VIHAR-1 DWARKA SECTOR 22 SOUTH WEST DELHI-110077 I HAVE CHANGED NAME TO ATHARV NARAYAN

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I Ram Lagan Pal S/O: Daya Ram Pal, R/O 102, GALI NO-3, NEAR GOVT DISPENSARY, KARKARDOOMA VILLAGE, Karkardooma, East Delhi, Delhi-110092, declare that name of mine,my wife and my minor son has been wrongly written as Ramlagan Pal,Ambika and Deepak in my minor son namely Deepak Pal aged 17 years in his 10th class educational document,The actual name of mine ,my wife and my minor son are Ram Lagan Pal,Ambika Pal and Deepak Pal,which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I Kuldeep Khanna S/O Mukand Lal Khanna,R/O A-196,Double Storey,Kalkaji, VTC: Kalkaji,PO: Kalkaji, District: South Delhi,State: Delhi- 110019,declare that name of mine and my father has been wrongly written as Raghav khanna and Mukan Lal khanna in my Pan card no-ALPPK5402N.The actual name of mine and my father are Kuldeep khanna and Mukand Lal khanna.which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, KAMNI / KAMINI / KAMINI DEVI / KAMANI W/O SANJEET SINGH R/O HOUSE NO-30, GROUND FLOOR, STREET NO E-1.1, VATIKA INDIA NEXT, SECTOR-82, GURGAON, HARYANA-122004, HAVE CHANGED MY NAME TO KAMNI YADAV FOR ALL FUTURE PURPOSES.

NAME CHANGE
It is for general information that I, PRAKASH CHAND S/o BHAGWAN DAS, R/o C – 2 12, Prem Nagar Extn., Kirari Suleman Nagar, North West Delhi - 110086, declare that name of mine has been wrongly written as PRAKASH BANSAL in my minor son namely TEJAS BANSAL, aged 17 years in his 10th Class Educational Documents. The actual name of mine is PRAKASH CHAND, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, Monika Sanwaria W/O Neeraj Sanwaria R/O -175/17,4th floor Amrit Puri -B , Garhi , East of Kailash South Delhi Sriniwaspuri, Delhi -110065, have changed the name of my minor Son namely Vedant aged 16 years and he shall hereafter be known as Vedant Sanwaria

NAME CHANGE
I, No-15440659L Rank-NK/AA Name-TOUSEEFAHMAD DALAWAYI R/o VILL-HUDALI, PO-HUDALI, TEH-BELAGAVI, DIST-BELAGAVI, KARNATAKA-591346 have changed my father's name from MAHMADNEEF to MAHAMADHANIF DALAWAI for all future purposes vide Affidavit dated 03/02/2025 before Notary Public, Delhi.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I ARIMARDAN AHIRVAR S/O JHAGNOO AHIRVAR R/O H.No-110/10, Railway Colony Thomson Road, Darya Ganj, Central Delhi, Delhi -110002 declare that name of mine and my father has been wrongly written as ARIMARDAN and JHAGROO in my SC Caste Certificate No. Sc/02/31/14181/1/2/2012/9231037623 The actual name of mine and my father are ARIMARDAN AHIRVAR and JHAGNOO AHIRVAR which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, KAUSHLENDRA TRIPATHI S/O BHASKAR TRIPATHI / BHASHKAR TRIPATHI R/O MAHUISUGHARPUR, SHIVPURI SADAR, POST OFFICE SHIVPURI NEW COLONY, GORAKHPUR, UTTAR PRADESH-273016,HAVE CHANGED MY NAME TO KAUSHLENDRA N TRIPATHI FOR ALL FUTURE PURPOSES.

NAME CHANGE
I,BHASKAR TRIPATHI S/O KASHI NATH TRIPATHI R/O PHULAWARIYA TOLA, MAHUI SUGHARPUR BARGO, POST OFFICE SHIVPURI NEW COLONY, GORAKHPUR, UTTAR PRADESH-273016, HAVE CHANGED MY NAME TO BHASHKAR TRIPATHI FOR ALL FUTURE PURPOSES.

NAME CHANGE
I, No-15714915W Rank-HAV Name-PYDITHALLI NANGIREDDI Residing at KUNTINAVALASA, MENTADA, MANDALAM, VIZIANAGARAM, ANDHRA PRADESH-535580, have change my wife's name from SANTHOSHI to NANGIREDDY SANTHOSHI for all future purposes vide Affidavit dated 03/02/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, VISHAL GOEL S/o PAWAN KUMAR R/o S-217 FOURTH FLOOR, UPPAL SOUTHEND SECTOR 49, GURGAON, HARYANA-122018, have changed my name from VISHAL GOEL to VISHAL GOYAL for all future purposes.

NAME CHANGE
I, Praveen S/O Raj Kumar Gupta R/O House no - 1/9594 West Pratap pura Rohtash Nagar Shahdara Delhi - 110032 Have changed my name to Parveen Kumar Gupta for all future purposes.

NAME CHANGE
I AYUSH ANAND S/O SUNIL KUMAR SUMAN R/O D-202 RANJIT VIHAR-1 DWARKA SECTOR 22 SOUTH WEST DELHI-110077 I HAVE CHANGED NAME TO ADITYA NARAYAN

COURT NOTICE
IN THE COURT OF SH, SUDESH KUMAR PO MACT (SOUTH DISTRICT). SAKET COURTS, NEW DELHI PUBLICATION
ORDER 5 RULE 20
In Re: OMWATI VS FIROZ AND ORS MACT No.: 435/22
To,
SALMAN S/O IRFAN HNO 1538 DELHI GATE 2, HAPUR UP
Whereas PETITIONER has filed an application under section 166 and 140 of the Motor Vehicle Act for grant of compensation. You are hereby summoned total appear in person or by the pleader on 04.03.2025 at 10:00 AM failing which The application will be disposed of Ex. Parte.
Given under my hand and seal of the court on 01.02.2025
(SUDESH KUMAR)
PO, MACT (SOUTH DISTRICT)
SAKET COURT New Delhi

PUBLIC NOTICE
Notice is hereby given to the General Public on behalf of our client **(SMFG India Home Finance Co. Ltd.)** stating that Mrs. Triveni Verma is claiming to be the owner of Residential Plot bearing No. 59 and 60, area measuring 60 sq. yds., out of Khasra No. 1661, situated at Krishna Vihar, in the area of Village Behta Hazipur, Tehsil Loni, District Ghaziabad, U. P. vide Sale Deed dated 05.08.2024, executed by **Mr. Amit Bansal.** All persons are hereby informed that above mentioned owner wants to mortgage the said property and intends to obtain a loan from our client **(SMFG India Home Finance Co. Ltd.)** against the said property, if anybody has any objection/s upon the ownership of above owner over the said property, its mortgage/litigation, and any other objections, kindly inform the undersigned in writing on the below mentioned address within 07 days of the present.
Kumar & Associates
(Advocates & Consultants)
200, Second Floor, 23, Shivaji Marg, Moti Nagar, New Delhi - 15

PUBLIC NOTICE
NOTICE is hereby given to public at large that my client **Mrs. Bhavna Saini** is the owner of Commercial Shop Bearing No.99-B/17 (Property ID: 1C2NMPO4), area measuring 32 sq. yards, Situated at Waka Mauja Chaudhary Prem Singh Market, Jacobpura (within municipal limits), Tehsil & District-Gurugram, Haryana vide Sale Deed dated 09.12.2024 as doc no. 10885 and Intend to mortgage the said property with **Utkarsh Small Finance Bank Limited.** If any person(s) /Institution has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within 07 days from the date of this notice on the address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever.
Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony, New Delhi-110048, Contact no.- 49774545

NAME CHANGE
I RAMPAL BHARGAVA S/O KALI RAM BHARGAVA R/O 882 B AND 882 C GALI NO-7 BHOLA NATH NAGAR SHAHDARA DELHI-110032 I HAVE CHANGED MY NAME TO RAM PAL BHARGAVA

NAME CHANGE
I RAJESH KUMAR BHARGAVA S/O RAM PAL BHARGAVA R/O 882 B AND 882 C GALI NO-7 BHOLA NATH NAGAR SHAHDARA DELHI-110032 I HAVE CHANGED MY NAME TO RAJESH BHARGAVA

PUBLIC NOTICE
Mr. S. Pradeep and Mrs. S. Shubhada Owner of the Residential Unit no R-15142/16th Park View , 14th floor, Tower-R having a super Area of 1475 sq. Fts. , in "16th PARK VIEW" situated at Gaur Yamuna City (Pocket-3) , Mirzapur Site , Sector-19, YEIDA , Greater Noida, Gautam Budh Nagar, U.P. Mr. S. Pradeep and Mrs. S. Shubhada have lost Original last page (page no 17) of Sub-Lease Deed executed By and BETWEEN YEIDA and M/s Gaursons Realtech Pvt. Ltd. in favour of Mr. S. Pradeep and Mrs. S. Shubhada duly regd. vide doc no 6851 , vol no 40692 , page no 359-412 dated 01.04.2022, for which complaint lodged to the police. That any person(s)/Appropriate authority etc. if finds the misplaced last page (page no 17) of Sub-Lease Deed aforesaid said person may come forward and inform the undersigned within 15 days from the date of Publication.
RAHUL KUMAR GUPTA
(ADVOCATE)
Off.: 43B, Third Floor, Patpargang Village, Mayur Vihar Phase-I, Delhi-1
M-NO- 7252922875

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, Anil S/O Om Prakash R/O Plot No.-192 ,KH.No-43, Bankner, Narela, North West Delhi, Delhi -110040 declare that name of mine and my father has been wrongly written as Anil Kumar and Om Parkash respectively in my 10th class educational documents the actual name of mine and my father are Anil and Om Prakash respectively.

NAME CHANGE
I, No-14642157P HAV KAMAL RAJAK S/o NARAYAN DAS RAJAK R/o 295, VEER AWASH COLONY (SAINIK COLONY), KHURERI, GWALIOR, MADHYA PRADESH-474006 have changed my minor daughter's name from SHRISTY RAJAK to SHRISTI RAJAK for all future purposes vide Affidavit dated 03/02/2025 before Notary Public Delhi.

NAME CHANGE
I, BASAPPA Father of No-16128386Y, Rank-SPR, Name-PRASAD BASAPPA ASTAGI Residing at H.NO-181, VILL-KALAKHANB, PO-MUCHANDI, TEHSIL-BELGAUM, DIST-BELAGAVI, KARNATAKA-590016, have changed my name from BASAPPA to BASAPPA SIDRARAI ASTAGI for all future purposes and in my son's service records my date of birth wrongly mentioned as 02/08/1964 instead of my correct date of birth as 16/12/1967 vide Affidavit dated 03/02/2025 before Notary Public Delhi

NAME CHANGE
I, YALLUBAI Mother of No-16128386Y, Rank-SPR, Name-PRASAD BASAPPA ASTAGI Residing at H.NO-181, VILL-KALAKHANB, PO-MUCHANDI, TEHSIL-BELGAUM, DIST-BELAGAVI, KARNATAKA-590016, have changed my name from YALLUBAI to YALLUBAI BASAPPA ASTAGI for all future purposes and in my son's service records my date of birth wrongly mentioned as 04/07/1972 instead of my correct date of birth as 01/01/1978 vide Affidavit dated 03/02/2025 before Notary Public Delhi.

NAME CHANGE
I, ISTAQAR S/O BUDDHA residing at 313/76-C TULSI NAGAR INDER LOK DELHI 110035 have changed my name to ISTIKAR AHMAD for all future purpose.

NAME CHANGE
I, RAZIA W/O MOHD SUHALIN residing at B-9/65-C DDA FLATS INDER LOK DELHI 110035 have changed my name to RAZIYA BEGUM for all future purpose.

NAME CHANGE
I, MOHD SUALIN S/O MOHD YAQUB residing at B-9/65-C DDA FLATS INDER LOK DELHI 110035 have changed my name to MOHD SUHALIN for all future purpose.

NAME CHANGE
I hitherto known as SATPAL alias OMPAL S/O FULLU R/O KHAPRANA PO: BARNAWA DISTRICT BAGHPAT UTTAR PRADESH-250645, have changed my name and shall hereafter be known as OMPAL.

NAME CHANGE
I ANGESH KUMAR S/O LEKHRAJ SINGH R/O Gaon Chit Nagla Police station Atrauli Salarpur Aligarh Salarpur Uttar Pradesh-202281, have changed the name of my minor son DURVIN CHAUDHRY alias DEV aged 17 years and he shall hereafter be known as DEV.

PUBLIC NOTICE
Notice to public at large that my client Sh. Ved Prakash S/o Late Sh. Lallu Prasad R/o H.No. 1146, Gali No.11, Sadar Bazar, Delhi has severed the relations with his sons namely Naveen Kumar, his wife Nisha and their children and another son namely Pankaj Kumar, his wife Priyanka and their children and debarred them from all his movable/immovable property. If anybody deals with them which is at their own risk & responsibility.
AMIT GABA ADVOCATE
Ch.No. T-7, Tis Hazari Courts, Delhi

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I MOHAMMAD MERAZ KHAN S/O MOHAMMAD RIYAZ KHAN R/O 168 First Floor, Vaishali Enclave, Pitampura, Pitampura, North West Delhi, Delhi - 110034 declared the name of mine and my minor daughter has been wrongly written as MOHD MERAZ KHAN and IQRA MERAZ KHAN in my minor daughter IQRA KHAN aged 11 year in her school record the actual name of mine and my minor daughter are MOHAMMAD MERAZ KHAN and IQRA KHAN respectively which may be amended accordingly

PUBLIC NOTICE
My clients SAVITA W/O Sh. JASWANT R/O H.NO1438-A, SAINI MAHOLLA NAJAFGARH DELA/-110043 have severed all their relations with their son or my family and my Relative, and disowned them from above said properties Including the Properties i.e. Property bearing No. 80, AREA MEASURING 150 SQ YDS OUT OF KHASRA NO 87/1, SITUATED IN THE REVENUE ESTATE OF VILL LAMPUR, VILL NARELA Delhi-110040, And I would also like to tell you that, I have sold this property to Smt. USHA RANI W/O SH HUKAM SINGH, from now on she is the hole sole owner and owner of this property, and they shall not be responsible for any act, deed, thing etc. done by them. Any person dealing with them shall do so at his/her own risk and responsibility.
DEEPAK KASHYAP Advocate .

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, Ankita D/O Vijender Kumar R/O H. No-322,Gali No.-11B, Garm Sabha Gonda Road Bankner Narela ,PO: Narela Dist: North West Delhi , Delhi -110040, declare that name of my father and Mother has been wrongly written as Vijender and Kusum in my 10th and 12th class educational documents, the actual name of my father and mother are Vijender Kumar and Kusum Lata

NAME CHANGE
I, SUJATA is daughter of No. GS-167267W Rank- COOK Name-SIKANDER RAM R/O VILLAGE ARDAUNA, ARDAUNA, PO-ARDAUNA, DISTT- MAU, UTTAR PRADESH-121705, have changed my date of birth from 12/10/1993 to 05/02/1999 for all future purposes. Vide affidavit Dated 03.02.2025 Before Public Notary Delhi.

NAME CHANGE
I, SAVITA is daughter of No. GS-167267W Rank- COOK Name-SIKANDER RAM R/O VILLAGE ARDAUNA, ARDAUNA, PO-ARDAUNA, DISTT- MAU, UTTAR PRADESH-121705, have changed my date of birth from 28/02/1987 to 01/07/1996 for all future purposes. Vide affidavit Dated 03.02.2025 Before Public Notary Delhi.

NAME CHANGE
I, SUMITRA is daughter of No. GS-167267W Rank- COOK Name-SIKANDER RAM R/O VILLAGE ARDAUNA, ARDAUNA, PO-ARDAUNA, DISTT- MAU, UTTAR PRADESH-121705, have changed my date of birth from 15/02/1991 to 01/01/1998 for all future purposes. Vide affidavit Dated 03.02.2025 Before Public Notary Delhi.

PUBLIC NOTICE
Be it known to all that Mr. Vinod Sachdeva and Smt. Rashmi Sachdeva are Owner of the property Residential Entire Ground Floor AND 25% share/portion of the Entire Stilt for car parking (S) and one Servant quarter along with W.C of property bearing no. F-3, (commonly known as Property no. 3, Block-F), land measuring 530.5 sq. Yards., in the colony known as Kailash Colony, New Delhi, (hereinafter called the 'Said Floor') presently owner of the aforesaid Floor by virtue of Sale Deed dated 01/12/2022, duly registered as Reg. No. 7201, with the registrar office of Delhi. That the said Floor will be equitably mortgaged by my client in the State Bank of India, Noida, U.P for availing housing loan. That the original property Documents 1. Sale Deed dated 29/11/1954 duly registered no. 2848, 2. Sale Deed dated 22/07/1965 duly registered no. 4820, 3) death Certificate dated 07.08.2017 of Mr. Maj. Kamwaljit Singh Ahluwalia, 4) Mutation Letter/Sub Division letter dated 28.06.1991, 5). death Certificate dated 08.08.2017 of Smt. Rani Ahluwalia, 6) Mutation Letter dated 04.12.2017, 7) Surviving Member Certificate dated 19.04.2018 of Smt. Rani Ahluwalia, 8) Collaboration Agreement dated 22.09.2017, 9) Building Sanction Letter dated 10.05.2018 , 10) Occupancy Certificate dated 23.11.2020 and 11) Family Settlement Deed dated 18/02/2022 duly registered document no. 1671 , hereinafter called "the Said Plot Papers") is not available for verification or not traceable. Therefore, by way of this Public Notice it is hereby notified that any person, Attorney and/or entity, firm/company, society and/or member of the Society, Bank, HUF/member of HUF, Financial Institution having any claim, charge, interest, or lien whatsoever with respect to the Said Floor on the basis of aforesaid Plot papers or otherwise, may notify to undersigned only on his rahulkumargupta281401@gmail.com with documentary proof within 15 days from the date of this publication of notice, failing which any such claim etc. shall be deemed to be null and void, whereas title shall be deemed to be clear, and marketable without any defect or encumbrance and free to create equitable mortgage.
RAHUL KUMAR GUPTA
(ADVOCATE)
Off.: 43B, Third Floor, Patpargang Village, Mayur Vihar Phase-I, Delhi-1
M-NO- 7252922875

तावडू में मुख्य बाजार चौक पर कूड़ा न डालने को लेकर छेड़ी मुहिम

तावडू। शहर के मुख्य मार्ग मुख्य बाजार चौक पर डालने वाले कूड़े को न डाले जाने को लेकर सीएम विंडो एमिनेंट पर्सन सुरेश प्रधान ने मुहिम आरम्भ की है। कई वर्षो से कुडा उक्त चौक पर डाला जा रहा था। जिसे कोई भी नगरपालिका चेयरमैन नहीं हटा पाया था। सुरेश प्रधान ने सोहना-तावडू विधायक चौधरी तेजपाल तंवर व एस डी एम संजीव कुमार को शिकायत देकर मुहिम शुरू की तो उसका असर भी देखने को मिला।

चौक के दुकानदारों को समस्या से मिली निजात- सुरेश प्रधान ने बताया कि इस चौक पर मंदिर भी है और कॉलेज की छात्राएं इसी मार्ग से होकर जाती है। किसी भी मृत्यु के होने पर महिलाएं यहीं पर परिक्रमा करती हैं। वहीं यहां के दुकानदारों को कुडे से निकलने वाली दुर्गंध के चलते भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। जिस पर संज्ञान लेते हुए उन्होंने इस समस्या से सोहना-तावडू विधायक चौधरी तेजपाल तंवर को अवगत कराया। जिस पर संज्ञान लेते हुए एसडीएम तावडू को निर्देश दिए कि उक्त समस्या का समाधान प्राथमिकता से कराया जाए। प्रशासन के एक्शन में आते ही समस्या पर अंकुश लगता नजर आ रहा है। वहीं सुरेश प्रधान ने मौका मुआयना किया और पाया कि समस्या को प्रशासन प्राथमिकता से ले रहा है।

एनसीसी कैडेट्स की बी प्रमाण पत्र की लिखित परीक्षा आयोजित

नारनौल। स्थानीय 16 हरियाणा बटालियन के तत्वाधान में एनसीसी कैडेट्स की बी प्रमाण पत्र की लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें 15 संस्थाओं के 374 एनसीसी कैडेट्स ने हिस्सा लिया। दो दिवसीय इस परीक्षा में के प्रथम दिन 1 फरवरी 2025 को इन्हीं एनसीसी कैडेट्स की प्रायोगिक परीक्षा आयोजित की गई थी। ज्ञात रहे एनसीसी बी प्रमाण पत्र परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही कैडेट्स सी प्रमाण पत्र के लिए योग्य माना जाता है। इन दोनों दिन परीक्षा करवाने का जिम्मा एनसीसी ग्रुप हेड क्वार्टर रोहतक द्वारा 11 हरियाणा बटालियन भिवानी को दिया गया था। जिसके कमांडिंग ऑफिसर कर्नल राजेश दहिया व उनके बोर्ड मेंबर के रूप में कैप्टन विपिन पाल सिंह, सूबेदार मेजर डी. गोपाल कृष्णन, गर्ल्स कैडेट इंस्ट्रक्टर ज्योति व अन्य पी.आई. स्टाफ के सदस्यों की उपस्थिति में परीक्षा का सफलतापूर्वक संचालन किया गया। 16 हरियाणा बटालियन के अंतर्गत आने वाले विभिन्न संस्थाओं के एनसीसी अधिकारी मेजर वीरेंद्र सिंह, कैप्टन नीरज चौहान, कैप्टन शमशेर सिंह, कैप्टन नरेंद्र, लेफ्टिनेंट विक्रम सिंह, मनप्रीत कौर, सूबेदार जसवीर सिंह, बी.एच.एम. विजय सिंह, पीआई स्टाफ तथा सिविल स्टाफ के सदस्य उपस्थित थे।

चौधरी धज्जाराम सांगवान की सोच थी कि सभी शिक्षित हों : प्रदीप सांगवान

सोनीपत। बरोदा से भाजपा नेता प्रदीप सांगवान ने कहा है कि चौधरी धज्जाराम सांगवान चाहते थे सभी शिक्षित हों। वे अपने पैतृक गांव नूरनखेो में जनता शिक्षण संस्थान के संस्थापक चौधरी स्व.धज्जाराम सांगवान की 122 वीं जयंती के अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। उपस्थित जनसमूह को संबोधन में कहा कि चौधरी स्व.धज्जाराम सांगवान ज्ञान के उजाले से जीवन को रोशन करना चाहते थे। इसी वैचारिक क्रांति के साथ सन् 1950 में जनता शिक्षण संस्थान की ग्रामीणों के सहयोग से नींव रखी। एक उच्च विद्यालय की शुरुआत से शुरू हुए संस्थान में आज महाविद्यालय के साथ साथ वीएलडी, बी फार्मेसी, डी फार्मेसी, डीएमएलटी आदि कोर्स करवाए जाते हैं। उनके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्यों को हमेशा याद किया जाएगा। प्रदीप ने मख्यमंत्री नायब सैनी से मिलकर जनता शिक्षण संस्थान को यूनिवर्सिटी बनवाने का ग्रामीणों को आश्वासन भी दिलाया। समारोह में जनता शिक्षण संस्थान के पूर्व प्रधान अजीत सांगवान, सरपंच रामनिवास सांगवान, डॉ. राममेहर राठी, सरपंच मनोज कुंडू, सरपंच पवन कोहला, सरपंच राजू मातंड, हेडमास्टर कृष्ण सांगवान, सचिव जगदीप सांगवान, अनिल सांगवान, सूरत सिंह, कृष्ण सांगवान, सचिव हंसराज, नरेन्द्र सांगवान आदि उपस्थित रहे।

सोनीपत में अनिल विज की मांग, इस्तीफा दे बडौली

सोनीपत। हरियाणा के ऊर्जा एवं परिवहन मंत्री अनिल विज ने सोनीपत में भाजपा हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल बड़ौली से इस्तीफा देने की मांग की। उन्होंने कहा कि सवाल किया कि जिस व्यक्ति पर धारा 376 (दुष्कर्म) का आरोप हो, वह महिलाओं की बैठक कैसे ले सकता है? अनिल विज ने कहा कि हम यह नहीं कह सकते कि महिलाओं को भाजपा से बैन कर दिया गया है। बल्कि हम तो पार्टी में महिलाओं की भागीदारी 30 प्रतिशत तक बढ़ाने की बात कर रहे हैं। ऐसे में 376 का आरोपी व्यक्ति अध्यक्ष पद पर नहीं रह सकता। विज ने उदाहरण देते हुए कहा कि भाजपा के बड़े नेताओं पर भी आरोप लग चुके हैं, लेकिन उन्होंने नैतिकता के आधार पर इस्तीफा दिया था। आडवाणी जी पर भी आरोप लगे थे, उनका नाम आया था और उन्होंने तुरंत त्यागपत्र दे दिया था। बड़ौली उनसे बड़े तो नहीं हैं। उन्हें भी पार्टी की पवित्रता और सिद्धांत बनाए रखने के लिए तुरंत इस्तीफा देना चाहिए। अनिल विज ने आगे कहा कि बड़ौली खुद को निर्दोष बता रहे हैं।

दक्षता प्राप्त युवाओं के लिए नहीं है रोजगार की कमी : रितु हुड्डा

रोजगार विभाग ने मनाया व्यावसायिक मार्गदर्शन सप्ताह

एजेंसी

गुरुग्राम। रोजगार विभाग की ओर से चलाए जा रहे व्यावसायिक मार्गदर्शन सप्ताह का समापन कार्यक्रम एसडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खांडसा में आयोजित किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों को कौशल विकास तथा रोजगार के अवसरों के बारे में जानकारी दी गई।

इस अवसर पर जिला रोजगार अधिकारी रितु हुड्डा ने कहा कि युवाओं के लिए व्यवसायिक क्षेत्र में रोजगार की कोई कमी नहीं है। युवा अभी से अपनी कुशलता और पढ़ाई की ओर ध्यान देंगे तो वे अपनी आजीविका के योग्य रोजगार अवश्य प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में विभिन्न विभागों और बैंकों के द्वारा स्वरोजगार के लिए स्टार्ट अप इंडिया, मुद्रा, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन जैसे अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। युवा पीढ़ी को अपनी व्यावसायिक दक्षता की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। सहायक रोजगार

अधिकारी रणजीत रावत, रूडसेट संस्थान के निदेशक निर्मल यादव, रंजीत किरण, एटीडीसी की कमलेश राजोरिया, होंडा फाउंडेशन की प्रतिनिधि रोशनी, अरूणा यादव, हारट्रोन के राजेश दलाल, एमएसएमई से कैलाश आदि वक्ताओं ने विद्यार्थियों को फैशन टेक्नोलॉजी, स्वरोजगार के लिए ऋण योजनाएं, कंपनी सचिव, प्रशासनिक सेवाएं, शॉर्ट टर्म कोर्स के बारे में विस्तार से जानकारी दी। प्राचार्य गीतिका जाखड़ ने इस कैंप के लिए जिला रोजगार अधिकारी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर सुनील, प्रवीण, वीरेंद्र सिंह सहित स्कूल स्टाफ के सदस्य मौजूद रहे।

सेक्टर-43 वजीराबाद के खोखरा जोहड़ हनुमान मंदिर में मनाया गया वसंत पंचमी पर्व

हवन-यज्ञ करने के साथ किया गया विशाल भंडारा आयोजित

एजेंसी

गुरुग्राम। यहां वजीराबाद सेक्टर-43 स्थित खोखरा जोहड़ हनुमान मंदिर में वसंत पंचमी का पर्व धूमधाम से मनाया गया। हवन यज्ञ के साथ सबकी सुख-शांति की कामना की गई। साथ ही विशाल भंडारा भी लगाया गया, जिसमें सैकड़ों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।

इस अवसर पर पंडित इंद्रजीत शर्मा, विमल शर्मा, केशव शर्मा, परमजीत जून, वरुण धवन, गणेश, मुकेश यादव, हिमानी बरेला, अलंकृता घोष, अदिति वशिष्ठ आदि श्रद्धालु मौजूद रहे। समाजसेवी मयंक शर्मा एवं परिवार की ओर से खोखरा जोहड़ हनुमान मंदिर में पूरे विधि-विधान के साथ पूजा-अर्चना की गई। मयंक शर्मा ने कहा कि पौराणिक कथाओं के अनुसार, वसंत पंचमी के दिन ब्रह्मा जी ने अपने कमंडल से जल छिड़ककर सरस्वती माता को उत्पन्न किया था, इसलिए इस तिथि पर घर, मंदिर और सभी शैक्षणिक संस्थानों में मां शारदा की पूजा का भव्य आयोजन किया जाता है। वसंत पंचमी के दिन नया काम शुरू करना

बेहद शुभ माना जाता है। बसंत पंचमी के दिन कोई भी नया काम शुरू किया जाए तो सफलता निश्चित होती है। उन्होंने कहा कि जिन लोगों को उनके गृह प्रवेश के लिए शुभ मुहूर्त नहीं मिल रहा होता है, वह बसंत पंचमी के दिन गृह प्रवेश कर सकते हैं। इसके अलावा अगर कोई व्यक्ति नया व्यवसाय शुरू करने का विचार कर रहा हो तो उसके लिए भी बसंत पंचमी का दिन बेहद ही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

समाजसेवी मयंक शर्मा ने कहा कि मां सरस्वती का जन्म बसंत पंचमी के दिन हुआ था, इसलिए हर वर्ष इस दिन उनकी विधिपूर्वक पूजा की जाती है। लोग इस अवसर पर विद्या, कला, संगीत और बुद्धि के वरदान के लिए मां सरस्वती की पूजा और अनुष्ठान करते हैं।

सरस्वती मां को ज्ञान, बुद्धि, विवेक और कला-संगीत की जननी माना जाता है। मां सरस्वती की पूजा करने से बुद्धि में वृद्धि होती है और विवेक जागृत होता है। उनकी विधिपूर्वक पूजा से व्यक्ति को समाज में कला और संगीत के माध्यम से मान-सम्मान प्राप्त होता है।

निगमायुक्त ने जोन-1 क्षेत्र के आरडब्ल्यूए प्रतिनिधियों व नागरिकों के साथ बैठक कर जानी समस्याएं

बैठक में नागरिकों की शिकायतें सुनकर मौके पर ही संबंधित अधिकारियों को दिए गए त्वरित समाधान के निर्देश

एजेंसी

गुरुग्राम। सेक्टर-9 स्थित सामुदायिक केंद्र में निगमायुक्त अशोक कुमार गर्ग की अध्यक्षता में जोन-1 क्षेत्र के आरडब्ल्यूए प्रतिनिधियों और नागरिकों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। इस बैठक का उद्देश्य क्षेत्रीय समस्याओं पर विचार-विमर्श करना और उनके समाधान के लिए तत्काल कार्रवाई की योजना बनाना था।

बैठक में आरडब्ल्यूए प्रतिनिधियों ने कई महत्वपूर्ण मुद्दों को उठाया, जिनमें वरिष्ठ नागरिकों के लिए निगम कार्यालय में विशेष सहायता काउंटर बनाने, सफाई और सीवर व्यवस्था में सुधार, बरसाती पानी की निकासी के बेहतर प्रबंध, सडक़ों की स्थिति में सुधार और पेयजल आपूर्ति की स्थिति को बेहतर बनाने के सुझाव शामिल थे। इसके अलावा, नाले और सीवर के टूटे ढक्कन दुरुस्त करने, खुले में घूमने वाले पशुओं की समस्या का समाधान, और अतिक्रमण के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की भी आवश्यकता जताई गई। निगमायुक्त ने सभी समस्याओं को सुना और मौके पर उपस्थित अधिकारियों को

त्वरित कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने नागरिकों को आश्वासन दिया कि सभी शिकायतों का समाधान समयबद्ध तरीके से किया जाएगा। निगमायुक्त ने नगर निगम के कार्यों में नागरिकों की सक्रिय भागीदारी की भी अपील की और कहा कि नागरिक अपने क्षेत्रों में होने वाले कार्यों की निगरानी करें ताकि बेहतर परिणाम मिल सकें। उनका उद्देश्य है कि नागरिकों को बेहतर मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं।

उन्होंने कहा कि सीवरेज सफाई की मशीनों का शेड्यूल बनाकर कार्य शुरू किया जाएगा, ताकि सभी क्षेत्रों की सीवर संबंधी समस्या का समाधान किया जा सके। अगर अतिरिक्त मशीनरी की जरूरत होगी तो लगाई जाएगी। उन्होंने कहा कि जिस गली में सीवर की सफाई होगी, वहां के 2 निवासियों के हस्ताक्षर अनिवार्य होंगे कि सफाई कार्य सही ढंग से हुआ है। आरडब्ल्यूए प्रतिनिधियों ने निगमायुक्त की पहल पर शुरू किए गए विचार-विमर्श अभियान की भी सराहना की तथा कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम से एक ओर जहां अधिकारियों व आमजन के बीच की दूरी कम होगी वहीं समस्याओं का समाधान होने में भी मदद मिलेगी। इस मौके पर संयुक्त आयुक्त विशाल कुमार, चीफ इंजीनियर मनोज यादव, सीएमओ डॉ. आशीष सिंगला, कार्यकारी अभियंता संजीव कुमार व प्रवीण दलाल, सहायक अभियंता वसीम अकरम व प्रेमसिंह, वरिष्ठ सफाई निरीक्षक संदीप कुमार, निवर्तमान निगम पार्षद सीमा पाहुजा व संजय प्रधान सहित सेक्टर-9, 9ए, 7, 4, लक्ष्मण विहार, विश्वकर्मा कॉलोनी, सरस्वती एनक्लेव, ज्योति पार्क, शिवपुरी, न्यू कॉलोनी, भवानी एनक्लेव, कृष्णा नगर, बसई एनक्लेव, सेक्टर 37डी, फिरोज गांधी कॉलोनी आदि क्षेत्रों के आरडब्ल्यूए प्रतिनिधि व नागरिक उपस्थित थे।

बजट-2025 भारत के सुनहरे भविष्य का बजट : अरविंद सैनी

एजेंसी

गुरुग्राम भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी अरविंद सैनी ने बजट-2025 को भारत के सुनहरे भविष्य का बजट बताया। उन्होंने कहा कि समाज के मध्यम वर्ग और श्रमिक वर्गों के उत्थान के लिए यह बजट ऐतिहासिक और क्रांतिकारी साबित होगा। अरविंद सैनी ने कहा कि यह बजट विकसित भारत के सपने को साकार करने में सहायक बनेगा। भाजपा प्रदेश मीडिया प्रभारी ने कहा कि यह आम आदमी का बजट है। यह गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी शक्ति का बजट है। यह बजट देश की अर्थव्यवस्था को विश्व में नंबर-1 बनाने और विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में मददगार साबित होगा। अरविंद सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकार सशक्त, समृद्ध और शक्तिशाली भारत के निर्माण की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि इस बजट ने सिद्ध कर दिया है कि आने वाला समय भारत का है और भारत का स्वर्णिम युग शुरू हो गया है। भारत अब विश्व का नेतृत्व करेगा यह तय हो गया है।अरविंद सैनी ने कहा कि मोदी सरकार ने बजट में 12 लाख रुपये की इंकम को टैक्स फ्री करके कर्मचारियों और मध्यम वर्ग को बड़ी राहत पहुंचाई है। उन्होंने कहा कि इस आम बजट में आगामी 5 वर्षों में 5 लाख महिलाओं, अनुसूचित जाति और जनजाति वर्ग के उद्यमियों को टर्म लोन देने की योजना, सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता और समृद्धि की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। श्री सैनी ने कहा कि वित्त मंत्री ने किसानों के लिए प्रधानमंत्री धनधान्य योजना का ऐलान किया जो किसानों को समृद्ध बनाएगी। सर्वस्पर्शी, और समावेशी बजट पेश करने पर अरविंद सैनी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण व पूरी टीम की सराहना करते हुए आभार जताया।

मेवात में स्वास्थ्य,शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है: विपुल गोयल

- **अब 2014 से पहले वाला नहीं रहा मेवात जिला : विपुल गोयल**

एजेंसी

नूंह। हरियाणा सरकार ने राजस्व एवं शहरी स्थानीय निकाय मंत्री विपुल गोयल ने कहा है कि अब मेवात 2014 से पहले वाला नहीं रहा है और मेवात में स्वास्थ्य,शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। मेवाती

युवा पढ़ लिखकर अब देश-दुनिया के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चल रहे हैं।

कैबिनेट मंत्री विपुल गोयल ने सायं को नूंह में तावडू रोड़ स्थित मैक्स चिल्ड्रन अस्पताल के शुभारंभ के अवसर पर बतौर मुख्यातिथि शिरकत की । उन्होंने आयोजित कार्यक्रम के दौरान कहा कि मेवात में तेजी से स्वास्थ्य सेवाएं बढ़ रही है, इतना ही नहीं यह अस्पताल क्षेत्रवासियों की उम्मीदों पर पूरा खरा उतरेगा। उन्होंने कहा कि डा0 रफीक आजाद परिवार का यह अस्पताल क्षेत्र के लोगों की सेवा के लिए खुला है। इस मौके पर उनका फूल मालाओं व पगड़ी बांधकर स्वागत किया। इस अवसर पर किसान नेता डा0 रफीक आजाद के पुत्र एडवोकेट बाहुदीन आजाद ने भाजपा का दामन थामने पर मंत्री ने उनको पार्टी पटका पहनाकर मेवात के विकास के लिए अभी से जुटने की बात कही। एक सवाल के जवाब में उन्होंने माना कि कल आये केन्द्रीय बजट में पिछडे, किसान, मजदूर, व्यापारी, महिला सभी वर्ग का पूरा ख्याल रखा गया हैं और यह विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में बेहतर कदम हैं। इस मौके पर फकरूदीन चंदेनी, डा0 रफीक आजाद, एडवोकेट मकसूद खान नंगली, हरीश मलिक, गौ सेवा आयोग के मेंबर हकीम आस मौ0, मौलाना मोहम्मद सलीम कासमी, नूंह बार के प्रधान जाकिर हुसैन गोलपुरी, डा0 इकलास खान, डा0 तमन्ना आजाद, अब्दुस समी आजाद, मनोज माथुर, मोनू माथुर, मुब्बा मुबारिक, आसिफ मालब, वर्मा जी, असरफ मेवाती सहित भाजपा, कांग्रेस, इनेलो आदि दलों से जुड़े नेता भी मौजूद रहे।

बसंत पंचमी के पर्व पर नामदेव सभा भवन में किया गया हवन,नामदेव छीपा समाज ने निकली प्रभात फेरी

- **प्रयागराज महाकुंभ से लाएं गए गंगाजल के छीटे लगाकर करवाया सांकेतिक अमृत स्नान**

एजेंसी

नारनौल। श्री नामदेव समाज समिति रजिस्टर्ड नारनौल के तत्वाधान में बसंत पंचमी पर्व आज बड़ी धूमधाम एवं श्रद्धा भाव के साथ नामदेव भवन रविदास मार्ग पुरानी सराय नारनौल में मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्रभात फेरी एवं हवन किया गया।

जिसमें यजमान के रूप में प्रदीप कुमार वर्मा, पवन कुमार वर्मा, ओमप्रकाश लोहारिया, शिवकुमार वर्मा, धर्मवीर गोठरवाल, नरेंद्र कुमार छिपा तथा रविंद्र कुमार लखमरा सहपत्नी शामिल हुए। हवन से पूर्व नामदेव छीपा समाज समिति नारनौल के सदस्यों ने एक प्रभात फेरी प्राचीन

हनुमान मंदिर मोहल्ला नलापुर से शुरू की जिसका समापन नामदेव भवन रविदास मार्ग नारनौल पर हुआ। प्रभात फेरी एवं हवन में उपस्थित रहे सभी लोगों पर प्रयागराज महाकुंभ से लाएं गए गंगाजल के छीटे लगाकर सांकेतिक अमृत स्नान करवाया गया। समिति सचिव डॉ संजय कुमार वर्मा ने बताया कि बसंत पंचमी पर्व जहां विद्या एवं ज्ञान की देवी सरस्वती की उपासना एवं ऋतु परिवर्तन का पर्व है, वहीं इस पर्व को समस्त नामदेव समाज अपने आराध्य संत शिरोमणि नामदेव जी के ज्ञानोदय दिवस के रूप में भी मनाता है, इस दिन का हमारे समाज के लिए बहुत बड़ा आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व है।

बसंत उत्सव कार्यक्रम में श्री नामदेव समाज समिति एवं चैरिटेबल ट्रस्ट के संरक्षक सुभाष चंद्र वर्मा ठेकेदार,ट्रस्ट के अध्यक्ष बाबूलाल वर्मा, समिति के प्रधान जुगेन्द्र कुमार वर्मा, ट्रस्ट सचिव सत्यनारायण वर्मा, बृजमोहन गोठवाल, कैलाश चंद चौधरी, सत्यनारायण, पूरणमल, मुकेश कुमार, दयानंद वर्मा, हेमंत रतन, सतीश कुमार वर्मा, सुभाष कश्यप, हरद्वारी लाल कश्यप, योगेंद्र कुमार, दिनेश कुमार, सुरेश कुमार वर्मा, मनोहर लाल वर्मा, सुभाष चंद्र रोहिल्ला, राहुल वर्मा, सुरेंद्र लखमरा, उमेश कुमार, सुरेंद्र झेडु, ब्रह्मप्रकाश थेपडा, सूबेदार रामनिवास आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

फ्लड कंट्रोल बोर्ड की बैठक में महेन्द्रगढ़ क्षेत्र के 7 गांवों के गंदे पानी के जोहड़ों की पानी निकासी के लिए 10 करोड़ मंजूर

एजेंसी

महेंद्रगढ़। महेंद्रगढ़ क्षेत्र के 7 गांवों में गंदे पानी के 7 जोहड़ों के बरसात के दिनों में ओवरफ्लो की समस्या के समाधान का रास्ता खुल गया है। इस बारे में जानकारी देते हुए विकास एवं निगरानी समिति सदस्य संदीप मालड़ा ने बताया कि हरियाणा फ्लड कंट्रोल बोर्ड की बैठक में इन गांवों के लिए 10 करोड़ रूपये मंजूर हुए हैं। इन गांवों में पल्ह, बवानिया, बसई, आकोदा, खेड़ी, खेड़ा एवं खातोद गांव शामिल हैं।

इन सभी गांवों में बरसात के समय गंदे पानी का जोहड़ ओवरफ्लो होकर गंदा पानी गाँवों की गलियों एवं घरों में घुस जाता है। इससे ना सिर्फ भारी परेशानी होती है बल्कि जान माल के नुकसान का डर भी बना रहता है। सांसद धर्मबीर सिंह के पिछली लोकसभा के कार्य काल के दौरान विभिन्न जन संवाद कार्यक्रमों में इस समस्या के समाधान की बात उठी थी तथा हाल ही में नव निर्वाचित विधायक कंवर सिंह यादव के धन्यवादी दौरों के दौरान भी इस समस्या के समाधान की मांग उठी थी। इन सभी गांवों में ऐसे गंदे पानी

- **बरसात के दिनों में गांवों में घुस जाता है ओवरफ्लो पानी**

के जोहड़ के साथ मोटर लगाकर पानी को दूर ले जाया जाएगा तथा किसानों की सहमति से इस पानी को फव्वारा सिस्टम से सिंचाई के काम में भी लिया जाएगा। जिसके लिए सिंचाई विभाग की तरफ से विभिन्न प्रकार के उपकरण आदि भी लगाये जायेंगे। संदीप मालड़ा ने बताया कि इससे ना सिर्फ पानी के घरों में घुसने की समस्या से निजात मिलेगी बल्कि खेती की सिंचाई के लिए भी पानी मिलेगा।

बसंत पंचमी के उपलक्ष्य में आलदौका गांव में लगाया निशुल्क आयुष स्वास्थ्य कैम्प डा. यशबीर गहलावत

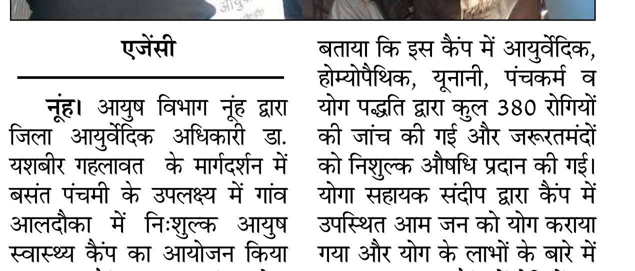

एजेंसी

नूंह। आयुष विभाग नूंह द्वारा जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डा. यशबीर गहलावत के मार्गदर्शन में बसंत पंचमी के उपलक्ष्य में गांव आलदौका में निःशुल्क आयुष स्वास्थ्य कैंप का आयोजन किया गया इस कैंप का शुभारंभ रमेश मानुवास, जिला अध्यक्ष किसान मोर्चा बीजेपी , जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डा. यशबीर गहलावत, डॉ. शशांक, डॉ मनोज, दिनेश देशवाल द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया और मां सरस्वती की फोटो पर पुष्प अर्पित किए।

डॉ. यशबीर गहलावत ने बताया कि इस कैंप में आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, यूनानी, पंचकर्म व योग पद्धति द्वारा कुल 380 रोगियों की जांच की गई और जरूरतमंदों को निशुल्क औषधि प्रदान की गई। योगा सहायक संदीप द्वारा कैंप में उपस्थित आम जन को योग कराया गया और योग के लाभों के बारे में बताया गया। इस कैंप में रोगियों का ब्लड प्रेशर और मधुमेह की जांच की गई। इस कैंप में डॉ. अरशद, डॉ. संजय, डॉ. राशिद, डॉ. हेमराज, डॉ. विकास डॉ. जुबेर, डॉ. तरुण, मिनाक्षी फार्मासिस्ट, सोहेब फार्मासिस्ट जफ़र, ज़ावेद, हामिद सहित अन्य आयुष स्टॉफ उपस्थित रहा।

मशीनों की डिलीवरी में धोखाधड़ी के दो आरोपी गिरफ्तार

एजेंसी

सोनीपत। सोनीपत जिले के थाना मुरथल पुलिस ने मशीनों की डिलीवरी में धोखाधड़ी कर करोड़ों रुपये हड़पने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी मनोज और सन्नी दोनो निवासी चेन्नई, तमिलनाडु के हैं। शिकायतकर्ता हरिओम, जो एम/एस रॉम्बस इम्पेक्स के मालिक हैं और गांव भिगान, सोनीपत में चिपकाने वाली टेप बनाने का व्यवसाय करते हैं, ने थाना मुरथल में शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया कि उन्हें अपनी फैक्ट्री के लिए पीवीसी कोटिंग मशीनों की आवश्यकता थी। मनोज नामक व्यक्ति ने एक सामान्य मित्र के माध्यम से उनसे संपर्क किया और मशीनें उपलब्ध कराने का प्रस्ताव दिया। मनोज ने 8 नवंबर 2023 को मशीनों का कोटेशन व विवरण दिया, जिसकी कीमत 1.87 करोड़ रुपये थी। हरिओम ने उक्त प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और कुल 3.60 करोड़ रुपये का भुगतान किया। कोटेशन के अनुसार, मशीनों की डिलीवरी 120-150 कार्य दिवसों में होनी थी। हालांकि, पहली किश्त का भुगतान 22 अक्टूबर 2023 को करने के बावजूद, मार्च 2024 तक मशीनों की डिलीवरी नहीं हुई। अगस्त 2024 से मशीनों के पुर्जे भेजे जाने लगे और 6 सितंबर 2024 को अंतिम डिलीवरी की गई। मशीनों की स्थापना के लिए आए इंजीनियर बिना काम किए 23 सितंबर को वापस चले गए।3 अक्टूबर को कुछ तकनीकी कर्मचारियों ने पुनः प्रयास किया, लेकिन 10-15 दिनों की मेहनत के बावजूद मशीनें ठीक से कार्य नहीं कर सकीं। 20 अक्टूबर 2024 को वे यह कहकर चले गए कि कुछ महत्वपूर्ण पुर्जे गायब हैं।

शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया कि उन्होंने 1.73 करोड़ रुपये अतिरिक्त भुगतान किया था, लेकिन फिर भी मशीनें पूरी तरह कार्यरत

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, MANIT KUMAR S/O GIAN CHAND R/O 648 Near Chopal Bhang Rola(122), Bhangrola Gurgaon Haryana - 122505 declare that name of my mother has been wrongly written as MITLESH KUMARI in my Army service record The actual name of my mother is KAMLESH which may be amended accordingly

पेट्रोल और डीजल की कीमतें अपरिवर्तित

एजेंसी

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेजी जारी रहने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम आज अपरिवर्तित रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा।वैश्विक स्तर पर सप्ताहांत पर अमेरिकी क्रूड 1.48 प्रतिशत उबलकर 73.81 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। इसी तरह लंदन ब्रेंट क्रूड 1.10 प्रतिशत की तेजी के साथ 76.50 डॉलर प्रति बैरल पर रहा।

वेतनभोगी को 12.75 लाख रुपये तक आयकर नहीं लगेगा

नई दिल्ली। वित्त मंत्री सीतारमण ने मध्यम वर्ग विशेषकर वेतनभोगियों को बड़ी राहत देते हुये वित्त वर्ष 2025-26 के आम बजट में जो प्रस्ताव किये हैं उससे 12.75 लाख रुपये तक की आय पर अब कोई आयकर नहीं लगेगा और 24 लाख रुपये या उससे अधिक आय वालों को 1.10 लाख रुपये की बचत होगी वहीं इस प्रस्ताव से सरकार को एक लाख करोड़ रुपये का राजस्व घट जायेगा। श्रीमती सीतारमण ने राष्ट्र निर्माण में मध्यम वर्ग पर भरोसा जताते हुए बजट में नई आयकर व्यवस्था के तहत नए प्रत्यक्ष कर स्लैब और दरों का प्रस्ताव किया गया है, ताकि प्रति वर्ष 12 लाख तक की कुल आय के लिए कोई आयकर न देना पड़े, यानी पूंजीगत लाभ जैसी विशेष दर आय को छोड़कर प्रति माह एक लाख की औसत आय और 75,000 रुपये की मानक कटौती के कारण प्रति वर्ष 12.75 लाख रुपये तक कमाने वाले वेतनभोगी व्यक्ति को आयकर नहीं देना होगा। नई कर संरचना और अन्य प्रत्यक्ष कर प्रस्तावों के कारण, सरकार को लगभग एक लाख करोड़ का राजस्व खोना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में सरकार ने लोगों की जरूरतों को समझने के लिए कदम उठाए हैं। प्रत्यक्ष कर प्रस्तावों में मध्यम वर्ग पर विशेष ध्यान देने के साथ व्यक्तिगत आयकर सुधार, टीडीएस-टीसीएस को युक्तिसंगत बनाना, अनुपालन बोझ में कमी के साथ स्वैच्छिक अनुपालन को प्रोत्साहन, व्यापार करने में आसानी और रोजगार और निवेश को प्रोत्साहित करना शामिल है। बजट में नई कर व्यवस्था के तहत संशोधित कर दर अब इस प्रकार होगी।

आम बजट में 36 जीवन रक्षक दवाओं पर आयात शुल्क में छूट

नयी दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आम बजट 2025-26 में जीवन रक्षक दवाओं को सस्ता बनाने के लिये इस तरह की 36 आयातित दवाओं और उनको बनाने में काम आने वाले बल्क ड्रग्स (बड़ी मात्रा में) पर आधार आयात शुल्क (बीसीडी) को खत्म करने की घोषणा की है। श्रीमती सीतारमण ने आम बजट 2025-26 के अपने बजट भाषण में कहा कि छह जीवन रक्षक दवाओं को पांच प्रतिशत शुल्क की रियायती दर के तहत लाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि 37 अन्य दवाओं तथा 13 नए रोगी सहायता कार्यक्रमों को बीसीडी से मुक्त रखा जाएगा, बशर्तें ये दवाइयां और सहायता कार्यक्रम मरीजों को मुफ्त में उपलब्ध कराये जाते हों।

बजट देश के बुनियादी ढांचे के परिदृश्य में क्रांतिकारी बदलाव लाएगाः आईआईएफसीएल एमडी

नई दिल्ली। इंडिया इन्फ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनी लिमिटेड (आईआईएफसीएल) के प्रबंध निदेशक पी आर जयशंकर ने रविवार को कहा कि इस साल के बजट से यह स्पष्ट है कि सरकार ने देश के बुनियादी ढांचे के परिदृश्य में क्रांतिकारी बदलाव लाने की महत्वाकांक्षी यात्रा शुरू की है। उन्होंने बजट में की गई कुछ प्रमुख घोषणाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि बजट में रेखांकित रणनीतिक निवेश और नीतिगत सुधार 2047 तक देश को विकसित करने, सतत आर्थिक वृद्धि, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और सभी नागरिकों के लिए जीवन की बेहतर गुणवत्ता सुनिश्चित करने की मजबूत प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। सरकार ने विभिन्न उपायों की घोषणा की है, जिसमें परिसंपत्ति मौद्रीकरण योजना (2025-2030) भी शामिल है। इसका उद्देश्य नियामकीय और राजकोषीय सुधारों के माध्यम से नए बुनियादी ढांचे के विकास में 10 लाख करोड़ रुपये की राशि को वापस डालना है। उन्होंन कहा कि बजट में भूमि अभिलेखों, शहरी नियोजन और बुनियादी ढांचे के डिजायन को आधुनिक बनाने, परियोजना निष्पादन दक्षता बढ़ाने के लिए पीएम गतिशक्ति का लाभ उठाने की योजना की भी घोषणा की गई। उन्होंने कहा कि बुनियादी ढांचे के लिए दीर्घकालिक पूंजी आकर्षित करने को सरकार ने सॉवरेन संपदा कोष और पेंशन कोष के लिए निवेश अवधि को पांच साल के लिए बढ़ा दिया है।

समावेशी और विकासोन्मुखी बजट : ईईपीसी

एजेंसी

नई दिल्ली।इंजीनियरिंग निर्यात संवर्धन परिषद (ईईपीसी) ने केंद्रीय बजट को साहसिक, समावेशी और विकासोन्मुखी बताया और कहा कि उच्च सार्वजनिक निवेश से निजी क्षेत्र के निवेश को भी बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। ईईपीसी के अध्यक्ष पंकज चड्ढा ने बजट पर अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि सरकार ने बजट में बुनियादी ढांचे के विकास पर अपना ध्यान केंद्रित रखा है और इसके लिए 11.21 लाख करोड़ रुपये का पूंजीगत व्यय निर्धारित किया है। उच्च सार्वजनिक निवेश से निजी क्षेत्र के निवेश को भी बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि इंजीनियरिंग निर्यात क्षेत्र के लिए निर्यात संवर्धन मिशन और भारत ट्रेडनेट की शुरूआत से अनुपालन बोझ कम होगा और रसद दक्षता में सुधार आएगा, जिससे निर्यातकों को लाभ मिलेगा। इसके अलावा

एमएसएमई को समर्थन देने के लिए क्रेडिट गारंटी विस्तार और ईवी उत्पादन में इस्तेमाल होने वाली सामग्रियों पर सीमा शुल्क सुधार किए गए हैं, जिससे इनपुट लागत घटेगी और लागत प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ेगी। श्री चड्ढा ने कहा कि हालांकि कुछ मुद्दे अभी भी चिंता का विषय बने हुए हैं। ब्याज समानीकरण योजना पर किसी अपडेट की अनुपस्थिति निर्यात ऋण को महंगा बना सकती है। साथ ही निर्यात संवर्धन गतिविधियों के लिए वित्तीय सहायता की कमी, प्रमुख बाजारों में ऊंची रसद लागत और गैर-टैरिफ बाधाओं से निपटने की जरूरत बनी हुई है। उन्होंने कहा कि इंजीनियरिंग सामान क्षेत्र के विभिन्न उप-क्षेत्रों को बजट से लाभ मिलेगा, क्योंकि भारत को वैश्विक विनिर्माण हब बनाने के लिए कई योजनाएं, प्रोत्साहन और व्यापार सुविधा उपाय घोषित किए गए हैं। मेक इन इंडिया पहल के तहत एक नया विनिर्माण मिशन शुरू किया गया है, जो छोटे, मध्यम और बड़े उद्योगों को व्यापक नीति समर्थन और विस्तृत रूपरेखा के माध्यम से सहयोग प्रदान करेगा। इसका मुख्य उद्देश्य सौर पीवी सेल, इलेक्ट्रोलाइजर और ग्रिड-स्केल बैटरियों के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना है।

उन्होंने कहा कि सरकार ने एमएसएमई की निवेश और टर्नओवर सीमा को क्रमशः 2.5 गुना और दो गुना बढ़ाने का निर्णय लिया है। इससे यह क्षेत्र नवाचार को प्रोत्साहित करने और अधिक रोजगार के अवसर पैदा करने में सक्षम होगा।

अधिकांश खाद्य तेलों में गिरावट, दालें सस्ती

एजेंसी

नई दिल्ली। विदेशी बाजारों में सप्ताहिक तेजी के बावजूद बीच स्थानीय स्तर पर मांग कमजोर रहने से बीते सप्ताह दिल्ली थोक जिंस बाजार में अधिकांश खाद्य तेलों के साथ ही दालें सस्ती हो गई वहीं वहीं अन्य जिंसों में टिकाव रहा।

तेल-तिलहनः वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का फरवरी वायदा सप्ताहांत पर 73 रिंगिट चढ़कर 4561 रिंगिट प्रति टन पर पहुंच गया। इसी तरह फरवरी का अमेरिकी सोया तेल वायदा 1.00 सेंट की तेजी के साथ 45.66 सेंट प्रति पौंड बोला गया।

इस दौरान सरसों तेल में 1099 रुपये प्रति क्विंटल की बढ़त को छोड़कर अन्य खाद्य तेलों में गिरावट रुख रहा। मूंगफली तेल 622 रुपये, सोया रिफाइंड 1465 रुपये, पाम ऑयल 1319 रुपये और वनस्पति तेल 841 रुपये प्रति क्विंटल सस्ता रहा। वहीं, सूरजमुखी तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ और वह पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर

पड़ा रहा। सप्ताहांत पर सरसों तेल 16484 रुपये प्रति क्विंटल, मूंगफली तेल 17692 रुपये प्रति क्विंटल, सूरजमुखी तेल 15897 रुपये प्रति क्विंटल, सोया रिफाइंड 14286 रुपये प्रति क्विंटल, पाम ऑयल 12967 रुपये प्रति क्विंटल और वनस्पति तेल 16374 रुपये प्रति क्विंटल पर रहा।

जनवरी में जीएसटी संग्रह से सरकार के खजाने में आए 1.96 लाख करोड़ रुपये

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने संसद में 50,65,345 करोड़ रुपये का केंद्रीय बजट पेश किया। वहीं, जनवरी, 2025 में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) राजस?व संग्रह सालाना आधार पर 12.3 फीसदी उछल कर 1.96 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया। इसकी तुलना में दिसंबर, 2024 में जीएसटी राजस्व संग्रह 1.76 लाख करोड़ रुपये रहा था। जीएसटी महानिदेशालय ने जारी आंकड़ों में बताया कि सरकार के खजाने में केंद्रीय बजट पेश होने के बाद जनवरी में जीएसटी राजस्व संग्रह के जरिए 1.96 लाख करोड़ रुपये आए हैं। इसमें घरेलू स्तर पर वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री से प्राप्त राजस्व में 10.4 फीसदी की वृद्धि के साथ 1.47 लाख करोड़ रुपये और आयातित वस्तुओं से प्राप्त कर राजस्व में 19.8 फीसदी की वृद्धि के साथ 48,382 करोड़ रुपये शामिल हैं। आंकड़ों के मुताबिक जनवरी में कुल सकल जीएसटी राजस्व 1,95,506 करोड़ रुपये रहा, जो पिछले साल की तुलना में 12.3 फीसदी अधिक है। इसमें केंद्रीय जीएसटी संग्रह (सीजीएसटी) 36,100 करोड़ रुपये रहा, जबकि राज्य जीएसटी (एसजीएसटी)

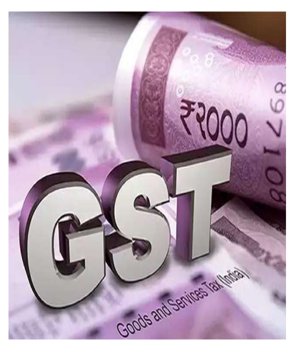

44,900 करोड़ रुपये रहा। इसके अलावा एकीकृत जीएसटी संग्रह आईजीएसटी 1.01 लाख करोड़ रुपये रहा। इसके अलावा जीएसटी उपकर संग्रह 13,400 करोड़ रुपये रहा है। जीएसटी महानिदेशालय के मुताबिक जनवरी के दौरान 23,853 करोड़ रुपये का रिफंड जारी किया गया है, जो 24 फीसदी की वृद्धि है। रिफंड को समायोजित करने के बाद कुल शुद्ध जीएसटी राजस्व 1.72 लाख करोड़ रुपये रहा है, जो पिछले साल की तुलना में 10.9 फीसदी अधिक है। मौजूदा वित्त वर्ष 2024-25 में जीएसटी राजस्व संग्रह ने 5वीं बार 1.80 लाख करोड़ रुपये का आंकड़ा पार किया है। इससे पहले अप्रैल में यह आंकड़ा 2 लाख करोड़ रुपये पार कर गया था। वहीं जुलाई, अक्टूबर, नवंबर में जीएसटी राजस्व संग्रह 1.80 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा देखने को मिला था।

उल्लेखनीय है कि अब तक सर्वाधिक जीएसटी राजस्व संग्रह अप्रैल 2024 में 2.10 लाख करोड़ रुपये से अधिक रहा है। वित्त मंत्री ने आज पेश केंद्रीय बजट 2025-26 में जीएसटी राजस्व संग्रह 11 फीसदी बढ़कर 11.78 लाख करोड़ रुपये (केंद्रीय जीएसटी और मुआवजा उपकर सहित) होने का अनुमान जताया है।

बजट में खुदरा क्षेत्र को नई ऊर्जा : आरएआई

एजेंसी

नई दिल्ली। रिटेलर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (आरएआई) ने केंद्रीय बजट को स्वागतयोग्य बताया और कहा कि आयकर छूट की सीमा 12 लाख रुपये तक बढ़ाने का फैसला इस उद्योग के लिए राहतभरा कदम है।

आरएआई के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) कुमार राजगोपालन ने बजट 2025-26 पर अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि बजट ने खुदरा क्षेत्र की कई अहम उम्मीदों को पूरा किया है। आयकर छूट की सीमा 12 लाख रुपये तक बढ़ाने का फैसला इस उद्योग के लिए राहतभरा कदम है।

बढ़ती खपत का सीधा लाभ खुदरा विक्रेताओं को मिलेगा, जिससे उनके कारोबार में सुधार होगा। बजट में एमएसएमई क्षेत्र को सशक्त बनाने के लिए क्रेडिट सुविधा का विस्तार किया गया है, जिसमें आसान ऋण पहुंच, कस्टमाइज़्ड क्रेडिट कार्ड और नए फंड ऑफ फंड्स शामिल हैं। इससे नए उत्पादों और नवाचार को बढ़ावा मिलेगा, जिससे बाजार में प्रतिस्पर्धा और आपूर्ति दोनों में सुधार होगा। श्री राजगोपालन ने कहा कि सरकार ने व्यापार करने में आसानी को प्राथमिकता दी है। नियामकीय प्रक्रियाओं को सरल बनाने और

RETAILERS ASSOCIATION OF INDIA

राज्य-स्तरीय सुधारों को प्रोत्साहित करने से खुदरा उद्योग के संचालन में सुधार की उम्मीद है। इसके अलावा, ई-श्रम आईडी कार्ड और स्वास्थ्य कवर के साथ गिग वर्कर्स की मान्यता से अंतिम-मील डिलीवरी और डिजिटल कॉमर्स को मजबूती मिलेगी, जिससे ओमनीचैनल रिटेल इकोसिस्टम को लाभ होगा।आरएआई के सीईओ ने कहा कि फुटवियर, चमड़ा, खिलौने और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योगों के लिए विशेष समर्थन उपाय लागू किए गए हैं, जो इन क्षेत्रों के विकास को गति देंगे। इसके अलावा, कार्यरत महिलाओं के लिए छात्रावास और क्रेच जैसी पहलें खुदरा क्षेत्र में महिला श्रमिकों की भागीदारी को बढ़ावा देंगी। उन्होंने कहा कि कुल मिलाकर यह बजट एक प्रगतिशील और विकासोन्मुखी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो खुदरा उद्योग को मजबूती देता है, व्यवसायों को सशक्त बनाता है।

बजट से दीर्घकालिक आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगाः आईसीएसआई

एजेंसी

नई दिल्ली। द इंस्टीट्यूट ऑफ कंपनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया (आईसीएसआई) ने आज पेश हुए आम बजट को संतुलित बजट बताते हुए कहा है कि इस बजट की मदद से दीर्घकालिक आर्थिक विकास और देश की समृद्धि को बढ़ावा मिल सकेगा। इंस्टीट्यूट के अध्यक्ष सीएस धनंजय शुक्ला का कहना है कि ये बजट देश के संतुलित आर्थिक विकास के लिए मील का पत्थर साबित होने वाला है। इससे देश के हर नागरिक के जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में काम किया जा सकेगा। आईसीएसआई की ओर से जारी की गई जानकारी में बताया गया है कि इस बजट में कमजोर समुदायों के लिए सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों का विस्तार किया गया है। इसके साथ ही बजट में कमजोर वर्गों की शिक्षा, स्वास्थ्य और आवासीय सुविधा के लिए धनराशि की व्यवस्था करने की भी कोशिश की गई है। इंस्टीट्यूट ने बजट को समावेशी बताते हुए कहा है कि इसमें कौशल विकास, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की शिक्षा को बढ़ावा देने और भारतीय भाषा पुस्तक योजना के जरिये युवाओं को बढ़ावा देने की कोशिश की गई है। इसके साथ नए उद्यमियों के लिए सहायक योजना पेश की गई, वहीं पीएम रिसर्च फेलोशिप और निजी क्षेत्रों की मदद से चलाए जाने वाले शोध कार्यक्रम के जरिये नवाचार को बढ़ावा देने का काम किया गया है।

बजट की सराहना करते हुए सीएस धनंजय शुक्ला ने कहा है कि ये बजट पॉलिसी मेकर्स, इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स और आम जनता के प्रतिनिधियों के बीच निरंतर होने वाले संवाद का भी प्रतिबिंब है, जिससे भविष्य में अर्थव्यवस्था के विकास का रास्ता और मजबूत होगा।

सर्राफा बाजार में सोने की कीमत में तेजी जारी, चांदी में गिरावट

एजेंसी

नई दिल्ली। सर्राफा बाजार में सोने के भाव में तेजी का रुख बना हुआ है। हालांकि चांदी के भाव में आज मामूली गिरावट आई है। देश के ज्यादातर सर्राफा बाजार में आज सोने की कीमत मे 140 से 150 रुपये प्रति 10 ग्राम तक की तेजी आई है। कीमत में आई इस तेजी के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना आज 84,490 रुपये से लेकर 84,640 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना भी आज 77,450 रुपये से लेकर 77,600 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। दूसरी ओर, चांदी की कीमत में गिरावट आने की वजह से ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में 99,500 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर पहुंच गई है। दिल्ली के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) कार्यालय ने इंडिया गेट पर 'प्रोजेक्शन मैपिंग शो' का आयोजन किया

देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना 84,640 रुपये प्रति 10

ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 77,600 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है।

वहीं, देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 84,490 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 77,450 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 84,540 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 77,500 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 84,490 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 77,450 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 84,490 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 77,450 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है।लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 84,640 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 77,600 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। वहीं, पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 84,540 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 77,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह जयपुर में 24 कैरेट सोना 84,640 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 77,600 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी आज सोने की कीमत में तेजी दर्ज की गई है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 84,490 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजारों में 22 कैरेट सोना 77,450 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

टॉप 10 में शामिल 7 कंपनियों के मार्केट कैप में 1.83 करोड़ का इजाफा, सबसे अधिक फायदे में रही एचयूएल

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में सोमवार से कारोबारी सप्ताह के दौरान हुई खरीद-बिक्री के कारण देश की टॉप 10 मोस्ट वैल्यूड कंपनियों में से 7 के मार्केट कैप में बढ़ोतरी हो गई, वहीं 3 के मार्केट कैप में गिरावट आ गई। मुनाफे में रहने वाली कंपनियों में हिन्दुस्तान यूनिलीवर सबसे ज्यादा फायदे में रही। फायदा कमाने वाली 7 कंपनियों के मार्केट कैप में पूरे सप्ताह के कारोबार के बादव कुल 1,83,322.54 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हो गई। दूसरी ओर नुकसान में रहने वाली 3 कंपनियों के मार्केट कैप में कुल मिलाकर 48,923.23 करोड़ रुपये की गिरावट आ गई। इसमें सबसे अधिक नुकसान टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) को हुआ। इस सप्ताह के कारोबार के दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक,

आईसीआईसीआई बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई), हिन्दुस्तान यूनिलीवर, आईटीसी और भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) के मार्केट कैप में बढ़ोतरी हो गई। वहीं, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस), भारती एयरटेल और इंफोसिस के मार्केट कैप में गिरावट आ गई। टॉप 10 में शामिल कंपनियों के मार्केट कैप की ये स्थिति तब हुई, जब पिछले कारोबारी सप्ताह के दौरान बीएसई का सेंसेक्स साप्ताहिक आधार पर 1,315.5 अंक यानी 1.72 प्रतिशत चढ़ गया। इसी तरह एनएसई का निफ्टी 389.95 अंक यानी 1.68 प्रतिशत की साप्ताहिक मजबूती के साथ बंद हुआ। बीच हुए कारोबार के दौरान हिंदुस्तान यूनिलीवर का मार्केट कैप 32,471.36 करोड़ रुपये चढ़ कर 5,89,066.03 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया। इसी तरह आईसीआईसीआई बैंक का मार्केट कैप 32,305.56 करोड़ रुपये बढ़ कर 8,86,247.75 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इसके अलावा, एचडीएफसी बैंक का मार्केट कैप 30,822.71 करोड़ रुपये बढ़ कर 12,92,450.60 करोड़ रुपये के स्तर पर, आईटीसी का मार्केट कैप 26,212.04 करोड़ रुपये बढ़ कर 5,78,604.05 करोड़ रुपये के स्तर, रिलायंस इंडस्ट्रीज का मार्केट कैप 25,373.2 करोड़ रुपये उछल कर 17,11,371.54 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया।

भारतीय रुपया 67 पैसा लुढ़क कर 87.29 प्रति डॉलर के सर्वकालिक निचले स्तर पर

एजेंसी

नई दिल्ली। बजट के बाद हफ्ते के पहले कारोबारी दिन शुरुआती कारोबार में भारतीय मुद्रा रुपया में गिरावट देखने को मिल रहा है। रुपया 67 पैसे की गिरावट के साथ 87.29 प्रति डॉलर के सर्वकालिक निचले स्तर पर पहुंच गया है।

अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 87.00 प्रति डॉलर पर खुला और शुरुआती कारोबार के बाद भारतीय रुपया 67 पैसे की गिरावट के साथ डॉलर के मुकाबले 87.29 पर आ गया। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 1.30 फीसदी की बढ़त के साथ 109.77 पर रहा। विदेशी मुद्रा कारोबारियों का कहना है कि विदेशी पूंजी की निरंतर निकासी तथा तेल आयातकों की ओर से डॉलर की निरंतर मांग के कारण विदेशी बाजारों में अमेरिकी मुद्रा की व्यापक मजबूती से रुपये पर दबाव जारी है। आशंकाओं के बीच रुपया में यह गिरावट आई है। उल्लेखनीय है कि पिछले हफ्ते भारतीय मुद्रा रुपया अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले 86.62

पर बंद हुआ था। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कनाडा और मैक्सिको पर 25 फीसदी तथा चीन पर 10 फीसदी का शुल्क लगाया है। कारोबारियों का कहना है कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के कनाडा, मेक्सिको और चीन पर शुल्क लगाने संबंधी आदेश पर हस्ताक्षर के बाद व्यापार संघर्ष की

बजट में पूरी तरह से तैयार औद्योगिक पार्कों की नई योजना के लिए 2,500 करोड़ रुपये आवंटित

मुंबई। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट 2025-26 में पूरी तरह से तैयार औद्योगिक पार्क की एक नई योजना के लिए 2,500 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। नई योजना पूर्ण बुनियादी ढांचे के साथ निवेश के लिए तैयार औद्योगिक पार्कों के विकास की सुविधा के लिए तैयार की गई है। वित्त मंत्री ने उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) के लिए बजटीय आवंटन में उल्लेखनीय वृद्धि की है। डीपीआईआईटी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) नीति, स्टार्टअप और विनिर्माण को बढ़ावा देने जैसे मुद्दे देखता है। बजट दस्तावेजों के अनुसार, विभाग को आवंटन 2025-26 के लिए 64 प्रतिशत बढ़ाकर 13,145.06 करोड़ रुपये कर दिया गया है, जबकि 2024-25 में इसका संशोधित अनुमान 8,011 करोड़ रुपये था। अगले वित्त वर्ष के लिए जिन खंडों में आवंटन बढ़ाया गया है उनमें बौद्धिक संपदा से संबंधित कार्य (321.34 करोड़ रुपये), फुटवियर (जूता-चप्पल), चमड़ा और सहायक उपकरण विकास कार्यक्रम (350 करोड़ रुपये), राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास और कार्यान्वयन ट्रस्ट (2,500 करोड़ रुपये), फंड ऑफ फंड्स 2.0 (2,000 करोड़ रुपये) और बड़े इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादों के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना (444.54 करोड़ रुपये) शामिल हैं।

अगले सप्ताह 5 आईपीओ की लॉन्चिंग, 2 कंपनियों के शेयरों की होगी लिस्टिंग

एजेंसी

नई दिल्ली। शुरू हो रहे कारोबारी सप्ताह के दौरान पांच कंपनियों के आईपीओ लॉन्च होने वाले हैं। आईपीओ लॉन्च करने वाली पांचों कंपनियां एसएमई सेगमेंट की हैं। मेनबोर्ड सेगमेंट में इस सप्ताह कोई नया पब्लिक इश्यू नहीं आने वाला है। इसके अलावा इस सप्ताह दो कंपनियों के शेयरों की स्टॉक मार्केट में लिस्टिंग होने वाली है। सप्ताह के दूसरे कारोबारी दिन 4 फरवरी को चामुंडा इलेक्ट्रिकल्स का 14.60 करोड़ रुपये का पब्लिक इश्यू सब्सक्रिप्शन के लिए खुल रहा है। इस आईपीओ में 6 फरवरी तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 47 से 50 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है। निवेशक इस आईपीओ में 3,000 शेयर के लॉट में बोली लगा सकेंगे। कंपनी के शेयर 11 फरवरी को एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर लिस्ट होंगे। इसके अगले दिन 5 फरवरी को केन इंटरप्राइजेज का 83.65 करोड़ रुपये का पब्लिक इश्यू सब्सक्रिप्शन के लिए खुल रहा है। इस आईपीओ में 7 फरवरी तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 94 रुपये प्रति शेयर का प्राइस तय किया गया है। निवेशक इस आईपीओ में 1,200 शेयर के लॉट में बोली लगा सकेंगे। कंपनी के शेयर 12 फरवरी को बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर लिस्ट होंगे। इसी दिन एमविल हेल्थकेयर का 59.98 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुल रहा है। इस आईपीओ में 7 फरवरी तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 105 से 111 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है। निवेशक इस आईपीओ में 1,200 शेयर के लॉट में बोली लगा सकेंगे। कंपनी के शेयर 12 फरवरी को बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर लिस्ट होंगे। इसके अगले दिन गुरुवार 6 फरवरी को रेडी मिक्स कंस्ट्रक्शन का 37.66 करोड़ रुपये का पब्लिक इश्यू सब्सक्रिप्शन के लिए खुल रहा है। इस आईपीओ में 10 फरवरी तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 121 से 123 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है। निवेशक इस आईपीओ में 1,000 शेयर के लॉट में बोली लगा सकेंगे। कंपनी के शेयर 13 फरवरी को एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर लिस्ट होंगे। इसके अलावा कारोबारी सप्ताह के आखिरी दिन 7 फरवरी को एलेगांज इंटीरियर्स का 78.07 करोड़ रुपये का पब्लिक इश्यू सब्सक्रिप्शन के लिए खुल रहा है। इस आईपीओ में 11 फरवरी तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 123 से 130 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है। निवेशक इस आईपीओ में 1,000 शेयर के लॉट में बोली लगा सकेंगे। कंपनी के शेयर 14 फरवरी को एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर लिस्ट होंगे। अगले कारोबारी सप्ताह में 2 कंपनियां लिस्टिंग के जरिए स्टॉक मार्केट में एंट्री करेंगी। इनमें मालपानी पाइप्स के शेयर 4 फरवरी को बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर लिस्ट होंगे। इसी तरह 5 फरवरी को डॉक्टर अग्रवाल हेल्थ केयर के शेयरों की बीएसई और एनएसई पर लिस्टिंग होगी।

आखिर किस तरह तैयार होता है 'व्हाइट गोल्ड' मखाना जान लीजिए पूरा प्रोसेस

मखाने को सुपरफूड कहा जाता है. वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बिहार में मखाना बोर्ड के गठन का ऐलान किया है. लेकिन क्या आप जानते हैं कि तालाबों में उगने वाला मखाना किस तरह प्रोसेस किया जाता है. चलिए यहां हम आपको इसी के बारे में बताते हैं.

केंद्रीय वित्त मंत्री ने अपना आठवां बजट पेश करते हुए मखाने का भी जिक्र किया है. रिपोर्ट्स की मानें तो दुनियाभर में 90 फीसदी मखाने का उत्पादन भारत करता है. वहीं, केवल 80 फीसदी मखाना सिर्फ बिहार ही उत्पादन करता है. वित्त मंत्री ने बिहार में मखाना बोर्ड के गठन की बात भी कही है. सरकार मखाने के उत्पादन पर जोर देने की कोशिश कर रही है.और व्यापारियों को फायदा होगा.

आपको बता दें कि बिहार के 10 जिलों में मखाने की खेती की जाती है. बिहार के सीतामढ़ी, मधुबनी, दरभंगा, सुपौल, सहरसा, मधेपुरा, अररिया, पूर्णिया, कटिहार और किशनगंज में मखाना उगाया जाता है. यहां से आने वाले मखानों को त्रढ्ढ ञ्जड्डद्द भी दिया गया है.

कैसे उगता है मखाना

आपको बता दें कि मखाना कमल के पौधे का हिस्सा होता है. ये कमल के फूल का बीज होता है, जिसे प्रोसेस किया जाता है. प्रोसेस करके मखाना तैयार किया जाता है. इसके बीज को दिसंबर के महीने में तालाब या गड्ढे में बोए जाते हैं. बीज को बोने से पहले तालाब की सफाई करनी जरूरी होती है.

इसके बीज बोने के दौरान यह ध्यान रखा जाता है कि इनके बीच की दूरी ज्यादा न हो. 30 दिनों के अंदर यह देखा जाता है कि बीज में अंकुर आ रहा है कि नहीं.

साफ की जाती है गंदगीइन्हें इकट्ठा करने का काम आसान नहीं होता है. इन्हें गोता लगाकार या बांस के जरिए पानी से निकाला जाता है. इसके बाद इन्हें बड़े-बड़े बर्तनों में रखकर लगातार हिलाया जाता है. ऐसा करके मखाने के ऊपर लगी गंदगी साफ हो जाती है. इसके बाद इन्हें पानी से धोया जाता है. अब साफ हो चुके बीज को बैग्स में भरकर सिलेंड्रिकल कंटेनर में इन्हें भरा जाता है.इस कंटेनर को काफी देर तक जमीन पर रोल किया जाता है, जिससे बीज स्मूद बन जाएं। इसके बाद इन बीजों को अगले दिन के लिए तैयार किया जाता है. इसके बाद बीज को अगले दिन कम से कम 3 घंटे के लिए सुखाया जाता है.

फ्राई करते होता है तैयार

जब मखाने अच्छी तरह से सूख जाते हैं, तो उन्हें फ्राई किया जाता है. एक तय समय तक इस पूरे प्रोसेस को करना होता है. इन्हें फ्राई करने के बाद बांस के कंटेनर में स्टोर किया जाता है, जिसे खास कपड़े से ढका जाता है. तापमान को सही रखने के लिए उसपर गोबर का लेप लगाया जाता है. कुछ घंटे के बाद फिर से इन्हें फ्राई किया जाता है और यही प्रोसेस फॉलो किया जाता है. एक बार बीज फट गया तो उसमें से सफेद मखाना निकलता है.

बेहद फायदेमंद है मखाना

मखाने को हर उम्र के लोग खा सकते हैं. ये लाइट स्नैक्स के तौर पर भी जाना जाता है. इसे खाने से मोटापा, डायबिटीज, हाई बीपी और दिल की बीमारियों में फायदा होता है.

जलवायु परिवर्तन से बच्चों का जीवन संकट में

संयुक्त राष्ट्र बाल कोष यानी यूनिसेफ की रिपोर्ट 'लर्निंग इंटरप्टेड रू ग्लोबल स्नैपशॉट ऑफ क्लाइमेट-रिलेटेड स्कूल डिसरप्शंस इन 2024' में चौंकाने वाले तथ्यों एवं खुलासे ने बच्चों को लेकर चिन्ता को बढ़ा दिया है। अब तक कृषि व मौसम के चक्र पर ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों के अध्ययन निष्कर्ष तो सामने आते रहे हैं, लेकिन जलवायु परिवर्तन का बच्चों के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, शैक्षणिक एवं स्वास्थ्य विषयक ऐसा संवेदनशील अध्ययन पहली बार सामने आया है, जिसने जहां नीति-निर्माताओं और शिक्षाविदों को चिन्ता में डाला है वहीं अभिभावकों की परेशानियों को बढ़ा दिया है। सरकार पर भी दबाव बनाया कि वह बच्चों व शिक्षा पर जलवायु परिवर्तन से होने वाले घातक असर को कम करने के लिये कारगर नीतियां बनाये एवं उन्हें तत्परता से लागू करें। इस रिपोर्ट के अनुसार गत वर्ष सिर्फ भारत में लगभग पांच करोड़ छात्र लू एवं अत्यधिक गर्मी के कारण प्रभावित हुए। जलवायु परिवर्तन सिर्फ हमारे पर्यावरण पर ही असर नहीं डाल रहा है बल्कि बच्चों की शिक्षा पर भी गहरा और खतरनाक असर डाल रहा है। ओस्लो विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की पोस्ट डॉक्टरल फेलो डॉ केटलिन एम प्रेंटिस और उनके सहयोगियों ने इस बारे में विस्तृत अध्ययन किया है। 'नेचर क्लाइमेट चेंज' पत्रिका में प्रकाशित इस अध्ययन के अनुसार दक्षिण एशिया, खासकर भारत, बांग्लादेश और कंबोडिया जैसे देशों में अप्रैल महीने में गरम हवा की लहरों (हीटवेव) ने शिक्षा व्यवस्था को बुरी तरह से प्रभावित कर दिया।यह वीनर्स नकली दांतों से 300 गुना बेहतर है! और कीमत बहुत सस्ती हैऔर जानें

जलवायु परिवर्तन के लिहाज से भारत को बेहद संवेदनशील देश करार दिया गया। वर्ष 2024 में दुनिया के 85 देशों में 24.2 करोड़ बच्चों की पढ़ाई चरम मौसम के कारण बाधित हुई। इसका अर्थ यह है कि वर्ष 2024 में दुनिया भर के स्कूल जाने वाले हर सात बच्चों में से एक बच्चा मौसमी बाधाओं के कारण कभी न कभी स्कूल नहीं जा सका। शोध के अनुसार बढ़ती गर्मी एवं गर्म दिनों की अधिक संख्या ने न केवल बच्चों के स्वास्थ्य को बल्कि परीक्षा परिणामों को खराब किया। मौसमी बाधाओं का असर बच्चों की शिक्षा पर लंबे समय तक रहता है। यूनिसेफ ने अपनी रिपोर्ट में चेताया है कि यदि ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन ऐसे ही जारी रहा, तो वर्ष 2050 तक बच्चों के गरम हवाओं के संपर्क में आने की संभावना आठ गुनी बढ़ जाएगी। सार्वभौमिक तापमान में लगातार होती इस वृद्धि के कारण विश्व के पर्यावरण पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है, उससे मुक्ति के लिये जागना होगा, संवेदनशील होना होगा एवं विश्व के शक्तिसम्पन्न राष्टों को सहयोग के लिये कमर कसनी होगी तभी हम जलवायु परिवर्तन से जुड़े बच्चों के संकट से निपट सकेंगे अन्यथा यह विश्व के बच्चों के प्रति बड़ा अपराध होगा, उनके विनाश का कारण बनेगा।ग्लोबल वार्मिंग के खतरों ने दुनिया को चिन्ता में डाला है, इसने भारतीय जनजीवन, पर्यावरण, जीवजंतु, एवं कृषि के दरवाजे पर ऐसी दस्तक दी है, जो न केवल चिन्ताजनक है बल्कि अनेक खतरों की टंकार है। रिकॉर्ड तोड़ गर्मी से जहां सामान्य जन-जीवन बाधित है, पीने के शुद्ध पानी के स्रोत सूखने लगे है, वहीं खेती किसानी पर भी नया संकट मंडरा रहा है। गत वर्ष भारत मौसम विज्ञान विभाग ने जानकारी दी थी कि वर्ष 2024 में भारत में गर्मी के सारे पुराने रिकॉर्ड टूट गये थे। यह वर्ष 1901 के बाद से सबसे गर्म साल के तौर पर दर्ज हुआ था। यूनिसेफ ने स्पष्ट किया है कि जलवायु संकट न केवल बच्चों की शिक्षा, बल्कि उनके पूरे भविष्य को खतरे में डाल रहा है। यदि इस संकट से निपटने के लिए तत्काल प्रभावी एवं जरूरी कदम नहीं उठाये गये, तो इसके बुरे असर को लंबे समय तक महसूस किया जाएगा और नयी पीढ़ी का जीवन अनेक खतरों से घिर जायेगा। अब जरूरी हो गया है कि सरकार शिक्षा पर जलवायु परिवर्तन के असर को कम करने के लिए ठोस रणनीतियां बनाने को आगे आये। लवायु परिवर्तन से बच्चों की शिक्षा ही नहीं, बल्कि अन्य कई तरह के प्रभाव पड़ते हैं। जलवायु परिवर्तन से बच्चों का शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, और शिक्षा प्रभावित होती है। विशेषतः गर्मी से होने वाली बीमारियां और मौतों का खतरा बढ़ता है और हैज़ा, मलेरिया, डेंगू, और जीका जैसी बीमारियां खतरनाक तरीके से जीवन को घेरती है। गर्भावस्था के दौरान अत्यधिक गर्मी के संपर्क में आने से जन्म के समय कम वज़न के बच्चे पैदा होने की संभावनाएं बढ़ जाती है। पर्यावरण विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आने का खतरा बढ़ता है। अत्यधिक गर्मी की वजह से होने वाली आपदाओं में मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है और अवसाद, चिंता, नींद संबंधी विकार और सीखने की कठिनाइयां उग्रतर हो जाती है। इन्हीं सब कारणों से बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होती है एवं परीक्षा परिणाम अपेक्षानुसार नहीं आ पाते हैं। बच्चे वयस्कों की तुलना में जलवायु और पर्यावरणीय झटकों के प्रति शारीरिक और शारीरिक रूप से अधिक संवेदनशील होते हैं। वे बाढ़, सूखा, तूफान और गर्मी जैसी चरम मौसम की मार झेलने और उससे बचने में कम सक्षम होते हैं। बच्चों को जलवायु परिवर्तन का सर्वाधिक खामियाजा उठाना पड़ता हैं क्योंकि यह उनके अस्तित्व, संरक्षण, विकास और भागीदारी के मौलिक अधिकारों को प्रभावित करता है।बच्चों पर जलवायु परिवर्तन के अन्य संभावित प्रभाव पड़ते हैं, जैसे- अनाथ, तस्करी, बाल श्रम, शिक्षा और विकास के अवसरों की हानि, परिवार से अलग होना, बेघर होना, भीख मांगना, आघात, भावनात्मक व्यवधान, बीमारियाँ आदि हैं। यह संकट यूं तो पूरी दुनिया में है लेकिन दक्षिण एशिया के अन्य देशों के मुकाबले दुनिया की सर्वाधिक जनसंख्या वाले भारत में इसका ज्यादा प्रभाव देखा गया है। ग्लोबल वार्मिंग के भयावह संकट को नियंत्रित करना सबसे बड़ी चुनौती है। चिन्ताजनक तथ्य यह भी है कि यदि देश-दुनिया में ग्रीन हाउस गैसों के नियंत्रण के लिये वैश्विक सहमति शीघ्र नहीं बनती तो आने वाले वर्षों में तापमान में और वृद्धि हो सकती है। जलवायु परिवर्तन के संकट से निपटने के लिए अमीर एवं शक्तिशाली देशों की उदासीनता एवं लापरवाहपूर्ण रवैया भी विडम्बनापूर्ण है। दुनिया में जलवायु परिवर्तन की समस्या जितनी गंभीर होती जा रही है, इससे निपटने के गंभीर प्रयासों का उतना ही अभाव महसूस हो रहा है। जलवायु परिवर्तन से पिछले एक साल में दुनिया में हालात ज्यादा गंभीर हुए है, बिगड़े हैं। दरअसल कार्बन उत्सर्जन घटाने एवं जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर अमीर देशों ने जैसा रुख अपनाया हुआ है, वह इस संकट को गहराने वाला है। जलवायु परिवर्तन के घातक प्रभावों ने भारत ही नहीं पूरी दुनिया की चिंताएं बढ़ा दी हैं। अभी भी नहीं चेते तो यह समस्या हर देश, हर घर एवं हर व्यक्ति के जीवन पर अंधेरा बनकर सामने आयेगी। विशेषतः बच्चों के बचपन पर इससे गहरे धुंधलके छाने वाले हैं। वैज्ञानिक और पर्यावरणविद चेतावनी दे रहे हैं कि आने वाले दशकों में वैश्विक तापमान और बढ़ेगा इसलिए अगर दुनिया अब भी नहीं सर्तक होगी तो इक्कीसवीं सदी के बच्चों को भयानक आपदाओं से कोई नहीं बचा पाएगा।जलवायु परिवर्तन के बढ़ते घातक परिणाम को नियंत्रित करने के लिये भारत सरकार को जागना होगा एवं प्रभावी कदम उठाने होंगे। विशेषतः अनुकूलित और संवेदनशील सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों का मापन करना जैसे- गर्भवती महिलाओं और बच्चों के लिये अनुदान प्रदान करना, बच्चों और उनके परिवारों पर जलवायु परिवर्तन द्वारा पड़ने वाले प्रभावों की पहचान करना है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से पीड़ित देशों को बाल अधिकारों पर सम्मेलन में अपनी प्रतिबद्धता बढ़ाने की आवश्यकता है ताकि प्रत्येक बच्चे को गरीबी से संरक्षित किया जा सके, उदाहरण के लिये बच्चों के जीवन को बेहतर और लचीलापन बनाने के लिये सार्वभौमिक बाल लाभयोजनाओ को क्रियान्वित करना होगा। निस्संदेह, यह अध्ययन देश के नीति-नियंताओं को चेताता है कि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से बच्चों को बचाने के लिये शिक्षा ही नहीं स्वास्थ्य आदि अन्य क्षेत्रों में व्यापक पैमाने पर काम करने की जरूरत है। शिक्षाविदों के साथ ही चिकित्सा बिरादरी के लोगों को भी इस ज्वलंत मुद्दे पर मंथन करने की जरूरत है। इसके अलावा देश में जलवायु परिवर्तन प्रभावों का हमारे जन-जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों के मूल्यांकन के लिये व्यापक अध्ययन व शोध करने की जरूरत महसूस की जा रही है। यदि समय रहते कदम नहीं उठाए गए तो इसके प्रभाव दीर्घकालीन हो सकते हैं।

संपादकीय

सरकारी स्कूलों पर भरोसा

निर्विवाद रूप से आम लोगों की धारणा सरकारी स्कूलों के प्रति अच्छी नहीं रहती। थोड़ी आर्थिक स्थिति सुधरते ही लोग अपने बच्चों को महंगे निजी स्कूलों में भेजने को आतुर हो जाते हैं। कोरोना संकट ने बताया था कि जब तमाम लोगों की आर्थिक स्थिति खराब हुई और नौकरियां गई, तो सरकारी स्कूलों ने उनके बच्चों को सहारा दिया। आंकड़े बताते हैं कि कोरोना संकट के दौरान व बाद में सरकारी स्कूलों में बच्चों के दाखिलों में खासी तेजी आई थी। लेकिन यह सवाल नीति-नियंताओं के लिये विचारणीय है कि बेहतर संरचनात्मक सुविधाओं व ऊंचे वेतनमान वाले शिक्षकों के बावजूद सरकारी स्कूल जनमानस की आकांक्षाओं की कसौटी पर खरे क्यों नहीं उतरते। समाज के संपन्न तबके व अधिकारियों के बच्चे सरकारी स्कूलों में जाने से गुरेज क्यों करते हैं? बहरहाल, एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट यानी असर 2024 के जो निष्कर्ष बीते मंगलवार को दिल्ली में जारी किए गए, वे नई उम्मीद जगाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों को लेकर किए गए अध्ययन वाली असर की रिपोर्ट बताती है कि देश में छह से चौदह वर्ष के बच्चों के पढ़ने की क्षमता और गणितीय कौशल में कोरोना संकट के बाद सुधार देखा गया है। सरकारी स्कूलों में तीसरी कक्षा के बच्चों के पढ़ने की बुनियादी क्षमता में पहले से सुधार हुआ है। जो पिछले दो दशकों में सर्वोत्तम स्तर पर है। अच्छी बात यह है कि सरकारी व निजी दोनों स्तर पर स्कूलों में विद्यार्थियों के बुनियादी गणितीय कौशल में सुधार देखा गया। जो पिछले एक दशक में बेहतर है। अब कक्षा तीन के छात्र घटाव के प्रश्न हल करने में सक्षम हैं। वहीं कक्षा पांच के बच्चे भाग के प्रश्न हल कर सकते हैं। अच्छी बात यह भी कि देशभर के स्कूलों में सीखने के स्तर में भी सुधार आया है। यह स्तर 2010 तक स्थिर था, फिर इसमें गिरावट का ट्रेंड देखा गया था।दरअसल,कोरोना काल में बच्चों के सीखने की क्षमता में गिरावट देखी गई। महामारी के चलते स्कूल बंद होने के बाद बच्चे पढ़ नहीं पाए। अधिकांश बच्चों के पास स्मार्टफोन नहीं थे। वहीं घर में माता पिता के कम पढ़े-लिखे होने या अनपढ़ होने से बच्चों का सीखने का मूलभूत कौशल प्रभावित हुआ था। बच्चे पहले का सीखा भूल गए और बड़ी संख्या में बच्चों को स्कूल भी छोड़ना पड़ा। असर की रिपोर्ट बताती है कि जहां नामांकन प्रतिशत में वृद्धि हुई है,वहीं डिजिटल साक्षरता की दर में भी वृद्धि देखी गई है। सुखद है कि कोरोना काल के बाद स्कूलों में पढ़ाई को लेकर गंभीरता देखी गई है। जागरूकता अभिभावकों के स्तर पर भी देखी गई है। हालांकि, बीते वर्ष के मुकाबले छह से चौदह वर्ष तक के बच्चों के दाखिलों में कमी देखी गई है। जिसकी वजह है कि कोरोना संकट के चलते रोजगार प्रभावित होने से जो बच्चे सरकारी स्कूलों की तरफ आए थे, वे फिर आय बढ़ने पर निजी स्कूलों की ओर रुख करने लगे हैं। दरअसल, सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर भरोसा कायम करने की जरूरत है।

वैसे सरकारी स्कूलों में भी स्मार्टफोन इस्तेमाल करने वाले बच्चों की संख्या बढ़ी है। वहीं दूसरी असर की रिपोर्ट में पंजाब को लेकर कहा गया है कि स्कूली बच्चे पंजाबी पढ़ने को लेकर निराशाजनक प्रदर्शन कर रहे हैं। पंजाब सरकार के स्कूलों में कक्षा तीन के केवल 34 फीसदी छात्र ही दूसरी कक्षा की पाठ्य पुस्तकें पढ़ सकते हैं।

हालांकि, पढ़ने की क्षमता और अंकगणित की समस्याओं के हल करने के मामले में सरकारी स्कूलों ने निजी स्कूलों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया । लेकिन चौंकाने वाली बात यह कि सरकारी व निजी स्कूलों के तीसरी कक्षा के 15 फीसदी से अधिक छात्र ही गुरुमुखी लिपि के अक्षर पढ़ सकते हैं, शब्द नहीं। वहीं 4.6 फीसदी छात्र पंजाबी के अक्षर भी नहीं पढ़ सकते। हालांकि, बुनियादी ढांचे के मोर्चे पर पंजाब राष्ट्रीय औसत से बेहतर स्थिति में रहा है। राष्ट्रीय स्तर से बेहतर 97.4 स्कूलों मे मध्याह्न भोजन परोसा गया। वहीं राष्ट्रीय औसत 11.1 के मुकाबले 32.7 फीसदी स्कूलों में छात्र कंप्यूटर का उपयोग करते हैं। लेकिन अभी सुधार की बहुत गुंजाइश है।

विश्वव्यापी आर्थिक अस्थिरता और घरेलू मंदी के साए में बजट

विकास की गति में नरमी साफ झलकती है क्योंकि यह पिछले साल के 8.2 फीसदी से घटकर इस साल 6.4 प्रतिशत रह जाएगी। वित्त मंत्री को नीतियों एवं खर्च की प्राथमिकताओं का संकेत देना होगा जो इसे अगले साल 8 प्रतिशत नहीं तो कम से कम 7 फीसद पर वापस ले जाएगा, लेकिन जैसा कि पिछले कुछ वर्षों में प्रवृत्ति रही है, इसे केवल राजकोषीय विस्तार द्वारा हासिल नहीं किया जा सकता है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 1 फरवरी को संसद में अपना रिकॉर्ड आठवां बजट पेश करेंगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के तीसरे कार्यकाल के दौरान यह उनका दूसरा बजट है। उनके पिछले सात बजटों में अनेक उतार-चढ़ाव देखे गए हैं जिनमें सबसे बड़ा व्यवधान कोविड महामारी के दौरान अर्थव्यवस्था के प्रमुख हिस्सों को बंद करना है। उस वर्ष सकल घरेलू उत्पाद में लगभग सात प्रतिशत की गिरावट आई थी। पिछले चार दशकों में कोविड के वर्ष ऐसा समय रहा है जिसमें भारत की अर्थव्यवस्था संकुचित रही यानी जिसमें नकारात्मक विकास दर दर्ज की गई। वित्त मंत्री के रूप में उनके शासनकाल के दौरान विकास सकारात्मक रहा है। इस समय अर्थव्यवस्था कई चुनौतियों का सामना कर रही है जो विकट हैं। अर्थव्यवस्था के सामने मंदी की घरेलू चुनौती के साथ-साथ कई वैश्विक बाधाएं भी हैं।अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के निर्णयों और कार्यों से वैश्विक उथल-पुथल होती है। राष्ट्रपति पद संभालने के बाद पहले दो हफ्तों में उन्होंने कई कार्यकारी आदेश पारित किए हैं जिनके संभावित अस्थिर प्रभाव हो सकते हैं। उदाहरण के लिए उन्होंने कई देशों को धमकी दी है कि यदि वे अपने देश से आए अवैध नागरिकों के प्रत्यावर्तन को स्वीकार नहीं करते हैं तो उनके खिलाफ व्यापार प्रतिबंध लगाए जाएंगे। उन्होंने विश्व स्वास्थ्य संगठन से अमेरिका की सदस्यता वापस ले ली है। चीन, कनाडा और मेक्सिको के खिलाफ कड़े व्यापार शुल्क जारी हैं। प्रमुख कार्यक्रमों के लिए धन में कटौती की गई है तथा हजारों सरकारी अधिकारियों की नौकरियां खतरे में हैं। विदेशी सहायता में कटौती की जा रही है। चीन के साथ अमेरिकी व्यवसाय-युद्ध का मतलब है भारत जैसे तीसरे देशों में चीनी सामान कम कीमत पर डम्प किया जाएगा। चीन भी मंदी का सामना कर रहा है। यहां तक कि उच्च आयात व्यापार बाधाएं भी भारत में चीनी सामानों की बाढ़ को रोक नहीं पायेगी। भारत-चीन द्विपक्षीय व्यापार घाटा लगभग 100 अरब डॉलर है। देखना होगा कि हम इसे कैसे पाटते हैं या कम से कम इसे कैसे घटा सकते हैं?

दूसरी बड़ी बाधा %डीपसीक' नामक एक चीनी ऐप से आयी है जिसने चैट जीपीटी बेचने वाली अमेरिकी कंपनी ओपन एआई के

एकाधिकार को ध्वस्त कर दिया है। डीपसीक एआई प्रोग्राम वह सब कुछ करता है जो चैट जीपीटी जैसे प्रोग्राम करते हैं लेकिन डीपसीक एक ओपन सोर्स है और दुनिया में कोई भी इसे अपना सकता है, अपने अनुसार ढाल सकता है, संशोधित और सुधार सकता है। इसकी लागत ओपन एआई की लागत से बहुत कम है। डीपसीक की भारी सफलता के कारण एआई में इस्तेमाल होने वाले मुख्य चिप को बनाने वाली कंपनी एनवीडिया का शेयर बाजार मूल्य आधा खरब डॉलर गिर गया। इस स्टॉक क्रैश का असर पूरी दुनिया पर पड़ रहा है। भारत में भी शेयर बाजार करीब दस फीसदी नीचे है। डॉलर की विनिमय दर तेजी से गिरकर 89 रुपये हो गई है। भारत से डॉलर का बाहर जाना चिंताजनक है। शुद्ध प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) तेजी से नीचे है।

वित्त मंत्री की चिंता यहीं पर नहीं थम रही है। बैंकिंग प्रणाली में नकदी की भारी कमी हो गई है। इनमें से कुछ का समाधान भारतीय रिजर्व बैंक के नए गवर्नर द्वारा युद्ध स्तर पर किया जा रहा है। आरबीआई बॉन्ड व डॉलर खरीदकर और बैंकों को 56 दिनों के लोन के जरिए टर्म लोन जारी कर नगदी डाल रहा है। लोन दरों में ढील का संकेत देने के लिए मौद्रिक नीति समिति की अगली बैठक में शायद रेपो रेट में कटौती की जा सकती है।विकास की गति में नरमी साफ झलकती है क्योंकि यह पिछले साल के 8.2 फीसदी से घटकर इस साल 6.4 प्रतिशत रह जाएगी। वित्त मंत्री को नीतियों एवं खर्च की प्राथमिकताओं का संकेत देना होगा जो इसे अगले साल 8 प्रतिशत नहीं तो कम से कम 7 फीसद पर वापस ले जाएगा, लेकिन जैसा कि पिछले कुछ वर्षों में प्रवृत्ति रही है, इसे केवल राजकोषीय विस्तार द्वारा हासिल नहीं किया जा सकता है। राजकोषीय घाटे को वादे के मुताबिक 4.5 फीसदी से नीचे लाने की जरूरत है। इसका मतलब राजकोषीय समेकन पर विचार करना होगा अन्यथा राजकोषीय विस्तार उच्च ब्याज दरों, मुद्रास्फीति के दबाव और अंततः अस्थिर ऋण की ओर जाता है। पारिवारिक ऋण की स्थिति भी बड़ी चिंता का विषय है। जीडीपी अनुपात में घरेलू ऋण जीडीपी के 43 फीसदी पर सबसे अधिक है। शुद्ध वित्तीय बचत यानी परिवारों की वित्तीय देनदारियों की ताजा स्थिति भी पचास वर्षों के सबसे निचले स्तर, सकल घरेलू उत्पाद का मुश्किल से 5 प्रतिशत पर था। बचत, आर्थिक विकास की संचालक है और हमें घरेलू बचत को प्रोत्साहित करने, पुनर्जीवित करने की सख्त जरूरत है। हाल ही में आरबीआई ने शायद खराब ऋणों तथा चूक के बढ़ने की आशंका से असुरक्षित ऋणों और माइक्रोफाइनेंस पर लगाम कसी है। उपभोक्ता खर्च ठंडा पड़ा है तथा मुश्किल से 3 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है जबकि इसे कम से कम दोगुना होना चाहिए था।

शुक्र है कि कुंभ मेले पर खर्च खपत के लिए एक बूस्टर है। उम्मीद की जा रही है कि करीब 40 करोड़ लोगों की आवाजाही एवं प्रति व्यक्ति 5000 रुपये खर्च मान कर कुंभ मेले में करीब 2 लाख करोड़ रुपये खर्च हो सकते हैं जो जीडीपी के लिए अच्छी खबर है। वृद्धि को गति देने के लिए निजी निवेश पर खर्च को बढ़ाने की जरूरत है। यह जीडीपी का कम से कम 28 प्रतिशत होना चाहिए लेकिन यह अभी बहुत कम है। क्या केंद्रीय बजट में निजी निवेशकों को नए व्यवसायों, कारखानों और नई क्षमता में निवेश शुरू करने के लिए कुछ उत्साह, मानवीय संवेदनाओं और जिंदादिली का संचार किया जा सकता है?

यह याद रखना चाहिए कि वित्त मंत्री के पास बजट में खेलने के लिए बहुत अधिक जगह नहीं है क्योंकि बजट का 77 फीसदी खर्च ऋण पर ब्याज, वेतन, पेंशन और प्रतिबद्ध सब्सिडी आदि जैसे राजस्व मदों पर होता है। इसलिए न केवल खर्च की मात्रा पर बहुत कुछ निर्भर करता है बल्कि उन संकेतों पर भी निर्भर करता है जो वे अपनी सरकार के नीतिगत रुख के संदर्भ में देती हैं। यह एक कठिन वर्ष है और हम वित्त मंत्री से एक ऐसा बजट प्रस्तुत किए जाने की अपेक्षा रखते हैं जो राजकोषीय विवेक के साथ विकास को बढ़ावा देने के उपायों को जोड़ता है।

इंसेफेलाइटिस लक्षण देखते ही हो जाएं सचेत

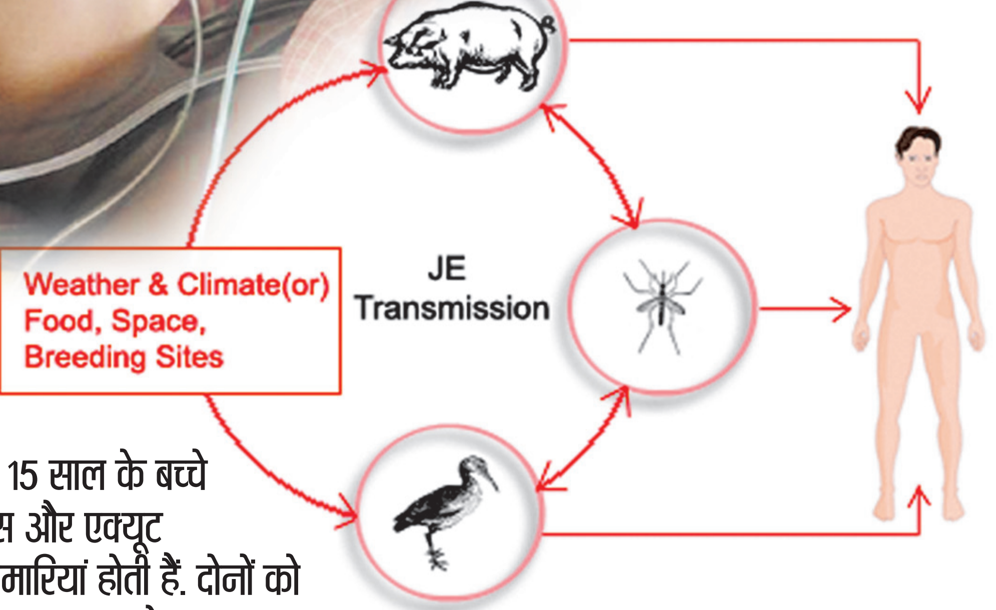

इंसेफेलाइटिस यानी दिमागी बुखार एक खतरनाक बीमारी है. इससे सबसे अधिक शिकार तीन से 15 साल के बच्चे होते हैं. इसमें जापानी इंसेफेलाइटिस और एक्यूट इंसेफेलाइटिस सिंड्रोम नामक दो बीमारियां होती हैं. दोनों को ही सामान्य भाषा में इंसेफेलाइटिस कहा जाता है.

सेफेलाइटिस के कहर का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पिछले चार दशक में इस बीमारी से बीस हजार से अधिक मौतें हो चुकी हैं. हर साल पांच-छह सौ बच्चे सरकारी रिकॉर्ड में मरते हैं जबकि हकीकत कुछ और ही है. वहीं इस बीमारी से लकवाग्रस्त हुए लोगों का कोई रिकॉर्ड ही नहीं रखा जाता. इंसेफेलाइटिस के सबसे अधिक शिकार तीन से 15 साल के बच्चे होते हैं. यह बीमारी जुलाई से दिसम्बर के बीच फैलती है. सितम्बर-अक्टूबर में बीमारी का कहर सबसे ज्यादा होता है. आंकड़े बताते हैं कि जितने लोग इंसेफेलाइटिस से ग्रसित होते हैं, उनमें से केवल 10 प्रतिशत में ही दिमागी बुखार के लक्षण जैसे झटके आना, बेहोशी और कोमा जैसी स्थिति दिखाई देती है. इनमें से 50 से 60 प्रतिशत मरीजों की मौत हो जाती है. बचे हुए मरीजों में से लगभग आधे लकवाग्रस्त हो जाते हैं और उनके आंख और कान ठीक से काम नहीं करते हैं. जिंदगीभर दौरे आते रहते हैं. मानसिक अपंगता हो जाती है.

बचाव घर को साफ-सुथरा रखें

मच्छरों से बचाव के लिए कीटनाशक का प्रयोग करें. रात में सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग करें. इंसेफेलाइटिस रोग पैदा करने वाले मच्छर शाम को ही काटते हैं, इसलिए शाम को बाहर निकलते समय शरीर को ढककर ही निकलने को कहें. बच्चों को इंसेफेलाइटिस का टीका जरूर लगवाएं. इस टीके के तीन डोज होते हैं. यह शून्य से 15 साल तक के बच्चों को लगाया जाता है.

इलाज - इंसेफेलाइटिस के लिए कोई ऐसी दवा नहीं बनी है, जिसे खाने के बाद मरीज ठीक हो जाएं. डॉक्टर लक्षणों को देखकर इलाज करते हैं. बीमारी की जितनी जल्दी जानकारी होती है, मरीज के बचने की संभावना उतनी ही अधिक रहती है. इंसेफेलाइटिस में झटके, दिमाग में संक्रमण, डायरिया, ब्लड प्रेशर और न्यूमोनिया के लिए अलग-अलग दवाइयां दी जाती हैं . इंसेफेलाइटिस के मरीजों को अकसर वेंटीलेटर पर रखने की आवश्यकता पड़ती है. ऐसे में, मरीजों को उन्हीं हॉस्पिटलों में भर्ती किया जाना चाहिए जहां वेंटीलेटर और दूसरे आधुनिक उपकरणों की व्यवस्था हो अन्यथा जान जा सकती है.

कारण - इंसेफेलाइटिस फैलने के स्पष्ट कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है, लेकिन अब तक मुख्य कारणों में साफ-सफाई का अभाव माना जा रहा है. गंदगी की वजह से यह बीमारी एक-दूसरे में फैलती है. यह वायरस और बैक्टीरिया के माध्यम से फैलती है लेकिन जो बीमारी यहां पाई जाती है वह वायरस से फैलती है. जो सूअर और हिरोनस नामक पानी की चिड़िया के शरीर पर पाये जाते हैं. अगर इन्हें काटने के बाद मच्छर किसी मनुष्य को काट लें तो उसे इंसेफेलाइटिस होने की पूरी आशंका होती है. दूषित पानी से भी इस बीमारी के वायरस लारवा के रूप में फलते-फूलते हैं.

लक्षण - शुरुआत के 15 दिनों तक आम फ्लू जैसे रहना. बुखार, सिर दर्द, उल्टी, डायरिया और जुकाम आदि की शिकायत. बाद में मरीज को झटके आना, बेहोशी छा जाना. मेमोरी लॉस और व्यावहारिक परिवर्तन होना. कुछ मरीजों को लकवा मार जाना.

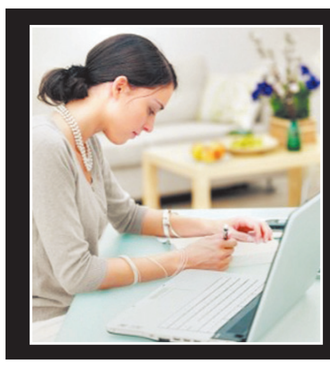

देर से सोना और कम सोना मोटापे को दावत

देर से सोने और कम नींद लेने वालों के लिए सावधान हो जाने की खबर है क्योंकि ऐसा करने से वे मोटापे का शिकार हो सकते हैं. अमेरिकी शोधकर्ताओं ने पाया कि देर से और कम सोने वाले युवा लोगों के मोटापे की चपेट में आने की आशंका बहुत ज्यादा होती है क्योंकि वे देर रात के समय में कैलोरी का अधिक उपभोग करते हैं.एक अध्ययन में यह बात सामने आई है. पेन्सिलवेनिया विश्व विद्यालय में यह अध्ययन किया गया है. इसमें 225 स्वस्थ लोगों की शामिल किया गया जिनकी उम्र 22 से 50 साल के बीच थी. अध्ययन में पाया गया कि सिर्फ चार घंटे की नींद लगातार पांच रातों तक लेने वालों का वजन उन लोगों के मुकाबले ज्यादा बढ़ा जिन्होंने 10 घंटे की नींद ली. शोध में शामिल आंद्रिया स्पैथ का कहना है, ''पहले के अध्ययनों में भी यह कहा गया था कि कम सोने और वजन बढ़ने का संबंध होता है. परंतु हम इस अध्ययन में इससे हैरान रह गए कि कम सोने और देर से सोने वालों का वजन इतना अधिक बढ़ गया.''

सावधान !

खामोश हत्यारा है खर्राटा

नींद में खर्राटे आना, सोने पर सांस रुकना, दिन में ऊंघते रहना, थकान महसूस करना ये सभी लक्षण स्लीप एपनिया के हो सकते हैं. नींद में खर्राटे आना, सोने पर सांस रुकना या बेचैनी महसूस करना, दिन में अधिक नींद आना या लगातार ऊंघते रहना, दिन में थकान महसूस करना, सिरदर्द और सिर का भारी बने रहना, एकाग्रता की कमी और चिड़चिड़ापन, उदासीनता या अवसाद. ये सभी लक्षण स्लीप एपनिया के हो सकते हैं. हृदय रोग विशेषज्ञ बताते हैं कि यह घातक बीमारी है. यह एक आम समस्या है, लेकिन दुर्भाग्य से आम लोगों में इसके बारे में जानकारी का बहुत अभाव है. क्या है खर्राटा सोते समय शरीर की मांसपेशियों का लचीलापन अपेक्षाकृत बढ़ जाता है. यह प्रक्रिया श्वास-नली को खुला बनाए रखनेवाली मांसपेशियों में भी होती है. जब मांसपेशियों का यह लचीलापन एक स्तर से ज्यादा हो जाता है, तो श्वास-नली संकीर्ण हो जाती है. सांस लेने के दौरान खड़खड़ाहट की आवाज आने लगती है. यही आवाज खर्राटे के नाम से जानी जाती है. यह प्रक्रिया कुछ और बढ़ती है तो श्वास-नली पूरी तरह अवरुद्ध हो जाती है. इसके परिणामस्वरूप कई बार सांस रुक जाती है और शरीर को आवश्यक ऑक्सीजन मिलना बंद हो जाता है. यह रुकावट दस सेकंड या उससे ज्यादा समय के लिए भी हो सकती है. यह प्रक्रिया रात भर में सैकड़ों बार लगातार होती रहती है. इसके फलस्वरूप दिमाग, हृदय, गुर्दा, लीवर, पाचनतंत्र, जननतंत्र आदि अंग ऑक्सीजन की कमी से त्रस्त रहते हैं. ऑक्सीजन की कमी का सीधा परिणाम होता है कि नींद सुचारू रूप से पूरी नहीं हो पाती और दिन भर थकान, ऊंघ, सिरदर्द, चिड़चिड़ापन, एकाग्रता की कमी आदि महसूस करते हैं. घबराएं नहीं, इलाज कराएं. यह बीमारी लाइलाज नहीं है. इसकी चिकित्सा सहज एवं सुगम है. इसके लिए जरूरी है कि अनुभवी चिकित्सक को समस्या से अवगत कराया जाए. इलाज के दौरान बताए चिकित्सकीय निर्देशों का सावधानी से पालन करें. छोटी सी मशीन सीपैप का उपयोग सोते समय करने से भी इस बीमारी से छुटकारा पाया जा सकता है. इसके उपयोग से पहले अनुभवी चिकित्सक द्वारा जांच एवं उनकी सलाह अवश्य लेनी चाहिए.

इन्हें भी आजमाएं - वजन नियंत्रित रखें, अधिक मोटापा भी हो सकता है.

बीमारी का कारण - देर रात तक टीवी नहीं देखें, सोने से एक या आध घंटा पहले ही टीवी बंद कर दें. देर रात तक चाय-कॉफी का सेवन न करें. सोने के लिए बिस्तर की साफ-सफाई जरूरी है, बिस्तर आरामदायक हो. अधिक मोटा तकिये का उपयोग न करें.

नीम की पत्तियां कैंसर में कारगर

कोलकाता के चितरंजन नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने नीम की पत्तियों से प्रारम्भिक परीक्षण में सफलता पाई है. भारतीय डॉक्टरों का दावा है कि नीम से कैंसर का इलाज भी संभव है. चूहों पर प्रयोग के बाद उनका उत्साह और बढ़ा है. नीम के औषधीय गुण तो सदियों से जगजाहिर हैं हीं. अब तक इसकी पत्तियों का इस्तेमाल रोजमर्रा के जीवन में होने वाली छोटी-मोटी बीमारियों के इलाज के अलावा जीवाणुओं और कीटाणुओं से लड़ने में किया जाता है. अब कोलकाता स्थित चितरंजन नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट (सीएनसीआई) के वैज्ञानिकों ने नीम को कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी के खिलाफ लड़ने का एक असरदार हथियार बनाने का प्रयास किया हैं. चूहों पर इसके सफल परीक्षण के बाद अब जल्दी ही मनुष्यों पर भी इसका परीक्षण किया जाएगा.

नीम में है नीम लीफ ग्लाइकोप्रोटीन

कोलकाता स्थित संस्थान के वैज्ञानिकों की एक टीम ने लंबे अरसे तक चले परीक्षण के बाद छपे अपने दो पर्चो में बताया है कि नीम की पत्तियों से निकलने वाले एक खास किस्म के संशोधित प्रोटीन नीम लीफ ग्लाइकोप्रोटीन यानी (एनएलजीपी) के जरिए चूहों में ट्यूमर कोशिकाओं की वृद्धि रोकने में कामयाबी मिली है. यह प्रोटीन कैंसर से सीधे लड़ने की बजाय ट्यूमर से निकलने वाले जहरीले व घातक रसायनों के खिलाफ शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत कर देता है. प्रतिरोधक कोशिकाओं कैंसर जैसी घातक बीमारियों से शरीर की रक्षा करती है. इस शोध टीम ने अध्ययन में पाया कि एनएलजीपी में ट्यूमर कोशिकाओं और ट्यूमर के विकास में सहायक गैर परिवर्तित कोशिकाओं से जुड़ी ट्यूमर की सूक्ष्म पारिस्थितिकी को सामान्य करने की शक्ति मौजूद है. मूल रूप से एनएलजीपी ट्यूमर की सूक्ष्म पारिस्थतिकी में ऐसे बदलाव लाता है, जिससे उसका विकास रुक जाता है. वह कहते है कि कैंसर कोशिकाएं धीरे-धीरे विकसित होने पर प्रतिरोधक कोशिकाओं पर नियंत्रण कर लेती हैं. ऐसे में रोग से बचाने की जगह यह कोशिकाएं उल्टे कैंसर को फैलने में सहायता देने लगती हैं.

सुरक्षित साबित हुआ नीम का इलाज

शोध रिपोर्ट में इन वैज्ञानिकों ने सर्वाइकल कैंसर से पीड़ित 17 मरीजों की कैंसर कोशिकाओं पर किए प्रयोग के नतीजे का भी खुलासा किया है. इस अध्ययन से उन्हें नीम की पत्तियों की सहायता से कैंसर के विकास पर अंकुश लगाने के तरीके का पता लगाया है. इससे पहले के कुछ वैज्ञानिक अध्ययनों में कहा गया था कि नीम प्रजनन तंत्र पर प्रतिकूल असर डाल सकता है. लेकिन हमने अपने शोध के जरिए इस संभावना को खारिज कर दिया है. इस शोध से अब तक के नतीजे काफी उत्साहजनक रहे हैं. जानवरों पर किए गए परीक्षणों में यह यौगिक बेहद सुरक्षित साबित हुआ है. कोई 13 साल पहले जब इस टीम ने नीम की पत्तियों के कैंसर रोधक गुणों का पता लगाने की दिशा में पहल की थी तो सबसे पहले कुछ प्रयोग किए गए. प्रयोगशाला में तैयार की गई कैंसर कोशिकाओं के अध्ययन पर उनके विचारों को बल मिला. इस पर टीम के सदस्यों ने बर्दवान विश्वविद्यालय के केमेस्ट्री के प्रोफेसर के साथ मिल कर ग्लाइकोप्रोटीन की पहचान की. उनकी टीम अब इस प्रोटीन की और बारीकी से जांच करके पता लगाएगी कि इसका कौन सा तत्व सही मायने में सक्रिय है. इसकी वजह यह है कि इस प्रोटीन में तीन हिस्से हैं. टीम की कोशिश यह पता लगाने की है कि यह प्रोटीन रेजिस्टेंट कैंसर के मामलों में भी प्रभावशाली होगा या नहीं. वह कहते हैं, एक खास चरण के बाद कैंसर वाले ट्यूमर लाइलाज हो जाते हैं. उन पर रेडियोथेरेपी या कीमोथेरेपी का भी कोई असर नहीं होता. उम्मीद है कि नीम लीफ ग्लाइकोप्रोटीन ऐसे मामलों में कैंसर के इलाज को प्रभावशाली बना सकेगा. प्रतिरोधक कोशिकाओं में कैंसर को मारने वाली कोशिकाओं का एक समूह होता है जिसे सीडी-8 प्लस टी कोशिकाएं कहते हैं. ट्यूमर कोशिकाओं की वृद्धि के साथ ही एनएलजीपी की वजह से टी कोशिकाओं की तादाद भी बढ़ जाती है. इससे कैंसर को विकसित होने से रोकने में सहायता मिलती है. यही प्रोटीन टी कोशिकाओं को निष्क्रिय होने से भी बचाता है. परीक्षण की इस प्रक्रिया को ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया समेत विभिन्न नियामक संस्थाओं के सामने पेश किया जाएगा. वहां से अनुमोदन मिलने के बाद मनुष्यों पर इसका परीक्षण शुरू किया जाएगा. वैज्ञानिकों के ताजा शोध के नतीजों से इस जानलेवा बीमारी से पीड़ित लोगों में उम्मीद की एक नई किरण पैदा हुई है.

बालों को कैसे बनाएं मजबूत

बालों का गिरना एक आम समस्या है, जो आज की लाइफ स्टाइल की वजह से और भी बढ गई है। बालों की देखभाल के प्रति यदि शुरू से ही सजग रहा जाए और उनकी सही देखभाल की जाए तो उन्हें मजबूत बनाए रखा जा सकता है। बालों की उम्र को बढाने और उन्हें रेशमी, काला, घना बनाने के लिए आप क्या-क्या करें, आइए जानें।

- शरीर में पित्त दोष अधिक होने के कारण बालों संबंधी समस्या पैनी होती है। पित्त चाय, कॉफी, एल्कोहॉल, मीट और धूम्रपान के अधिक सेवन से बढता है। वह अधिक ऑयली, चिकनाईयुक्त, तीखे-खट्टे और चटपटे भोजन से भी बढता है। बालों के गिरने के और भी कारण हो सकते हैं, जैसे एनीमिया, निम्न रक्तसंचार, तनाव, चिंता और लंबी बीमारी के बाद कमजोरी।
- अपनी डाइट से ऐसी चीजें हटा दें, जो आपके पित्त दोष को बढाती हैं। बालों को धोने के लिए नैचरल शैंपू का इस्तेमाल करें।
- बालों को गिरने से रोकने के लिए सिर की त्वचा का मसाज और तेल मालिश बहुत महत्वपूर्ण है। हफ्ते में तीन बार इसके लिए नारियल का तेल या सरसों का तेल इस्तेमाल करें।
- अगर आपका पेट ठीक से साफ नहीं होता है और कब्ज रहता है तो भी आप नियमित रूप से फ्रेश होने के लिए जरूर जाएं। आप चाहें तो त्रिफला चूर्ण या ईसबगोल ले सकती हैं। पेट की खराबी और पेट साफ न होने का बालों पर बुरा असर पडता है, इसलिए इस ओर ध्यान देना सबसे जरूरी है।
- बालों को धोने के बाद उन्हें पोंछकर सुखाने के बजाय अपनी उंगलियों से झाडते हुए और सिर की त्वचा को हलके हाथों से कुछ देर रगडते हुए सुखाएं। यह सिबेशियस ग्लैंड की प्रक्रिया को सक्रिय कर देता है और रक्त-संचार को बढाता है।
- अपने आहार में हरी पत्तेदार सब्जियां, सैलेड, दूध, फल और स्प्राउट्स, शामिल करें। अधिक से अधिक प्रोटीन, दूध, बटर, मिल्क, यीस्ट, सोयाबीन और विटमिन ए का सेवन करें।

स्किन को कैसे दें नैचरल लुक

रेग्युलर नहाने से बॉडी के बैक्टीरिया तो दूर हो जाते हैं। लेकिन बॉडी से नेचरल फ्लूड और ऑयल भी चला जाता है। इससे स्किन ड्राई हो जाती है, इसलिए जरूरी है कि आप इन टिप्स को जरूर अपनाएं -

- नहाने के बाद बॉडी लोशन जरूर लगाएं।
- बालों के लिए हमेशा नैचरल प्रॉडक्ट यूज करने चाहिए। बाजार में कई हर्बल शैंपू हैं, जिन्हें आप यूज कर सकती हैं।
- बैक्टीरिया हाथों में सबसे पहले फैलते हैं। आपको जब भी समय मिले, तो हाथों को अच्छे से धोएं। इससे आप हाइजीन की प्रॉब्लम से बचेंगे।
- आप फेस वॉश, शैंपू, बॉडी लोशन, क्रीम आदि में हर्बल प्रॉडक्ट इस्तेमाल करें।
- आप डेली रूटीन बना लें कि बेड पर सोने से पहले मेकअप साफ करके सोएं।

ब्यूटी टिप्स

- पके हुए केले का पेस्ट बना कर त्वचा पर लगभग बीस मिनट तक लगाएं। यह पेस्ट चेहरे पर उत्पन्न झुर्रियों की समस्या का समाधान करता है।
- आधा चम्मच मलाई में थोड़ा-सा शहद मिलाएं और इसमें कुछ बूंदें नींबू के रस की मिला कर चेहरे पर पेस्ट की तरह लगाएं, इसका नियमित प्रयोग आपकी त्वचा में आश्चर्यजनक निखार लाएगा।
- तुलसी को पानी के साथ मिक्स करके चेहरे की त्वचा पर लगाने से भी त्वचा के दाग, धब्बे नष्ट होते हैं। साथ ही त्वचा की रंगत में भी आश्चर्यजनक निखार आता है।

सेजवान दही पूरी

सामग्री : 6 पानी पूरी, 1 आलू, 1-1 टीस्पून सेजवान सॉस, चिली सॉस चाट मसाला, लाल मिर्च पाउडर, बारीक सेव, लहसुन कटी हुई, 1-1 टेबलस्पून तेल और टोमैटो सॉस, आधा टीस्पून अदरक कटा हुआ, 30 ग्राम बूंदी, नमक स्वादानुसार।

विधि : कड़ही में तेल डालकर लहसुन और अदरक डालें। लहसुन सुनहरा हो जाए तो चिली सॉस, टोमैटो सॉस और लाल मिर्च पाउडर डालकर 5 मिनट तक भूनें। आलू को उबालकर स्लाइस में काट लें। इसे लाल मिर्च और नमक के मिश्रण में मेरिनेट कर लें। बूंदी को भिगोकर पानी निचोड़ लें। पूरी को तोड़कर उसमें आलू-बूंदी डालें। फिर उपरोक्त मिश्रण और सेजवान सॉस डालें। इसके ऊपर से दही, चाट मसाला, सेव और हरी धनिया डालकर सर्व करें।

चुनें मेकअप अपनी आंखों के अनुरूप

न जाने कितनी कविताएं और गीत आंखों पर लिखे गए हैं। अंतर्मन का झरोखा हैं आंखें। हर आंख खास है, अलग है, इसलिए हर आंख चाहती है अपने लिए कुछ अलग मेकअप। यहां दिए गए चित्रों के जरिये जानें क्या है आपकी आंखों का शेप और उसके अनुसार करें अपना आई-मेकअप।

गहरी आंखें (डीप-सेट) : ऐसी आंखें भीतर की ओर धंसी हुई दिखती हैं और ब्रो बोन (आंखों और भौंहों के बीच की हड्डी) कम उभरी होती है। इसलिए मेकअप ऐसा करें, जिससे आंखें उभरी दिखें। पलकों पर हलका दबा हुआ पिंक या बेज शैडो लगाएं और आंखों की ऊपरी रेखा (क्रीज) की तरफ उसे हलका करें। अब मीडियम-टोंड आई शैडो लें और ब्रो बोन से शुरू करके ब्रो के किनारों तक ले जाएं। आंखों के ऊपरी हिस्से में बनी रेखा को स्मोकी-कलर शैडो से गहरा करें। यह पूरे मेकअप से मैच करने वाला हो। अंत में ब्लैक या ब्राउन पेंसिल से काजल लगाएं।

उभरी आंखें (कॉन्वेक्स आई) : ये बाहर की तरफ निकली हुई आंखें होती हैं। इसलिए इन्हें बल्जिंग या प्रोट्रूडिंग आईज भी कहा जाता है। मीडियम कलर से गहरे रंग तक के आई शैडो से पलकों पर शेड दें। कभी भी फ्रॉस्टेड शेड्स या हाईलाइटर न प्रयोग करें, क्योंकि इससे आंखें और ज्यादा उभरी नजर आएंगी। आंखों के निचले किनारों पर काजल पेंसिल लगाएं। ऊपरी आईलैशेज पर मसकारा के एक-दो हलके कोट्स लगा सकती हैं।

उनींदी आंखें (हूडेड आई) : इसमें आईलैशेज बहुत कम नजर आती हैं जिससे आंखें उनींदी लगने लगती हैं। इसलिए इसमें ऐसे मेकअप की जरूरत होती है जिससे आंखें थोडी सजग दिखें, यानी सोई-सोई सी या नशीली सी न दिखें। पलकों के भीतरी आधे हिस्से पर मैट या न्यूट्रल कलर का आई शैडो लगाएं। उसके आसपास के हिस्से पर थोडा गहरा रंग लगाएं, लेकिन बाहरी हिस्से में इसे न लगाएं। गहरे रंग के प्रयोग से बचें, क्योंकि इससे पलकें भारी लगने लगेंगी। आंखों के ऊपरी और निचले किनारों परभी गहरे रंग न लगाएं। ऊपरी लैशेज को थोडा कर्ल करें और मसकारा के एक-दो कोट्स लगाएं।

क्लोज-सेट आई : इनमें दोनों आंखों के बीच की दूरी कम दिखती है। यानी नाक से इनकी दूरी कुछ कम होती है। पलकों के भीतरी हिस्से पर हलका और बीच के हिस्से पर मीडियम शेड प्रयोग करें। ऊपरी पलकों के बाहरी किनारों पर रेखा सी खींचें। अब ब्रो बोन के बाहरी यानी कान की तरफ वाले हिस्से पर गहरा शैडो लगाकर उसे अच्छी तरह एकसार करें। आंखों में ब्लैक काजल लगा सकती हैं। मसकारा लगाना चाहती हैं तो भीतरी लैशेज पर हलके रंग का और बाहरी तरफ थोडा गहरे रंग का मसकारा प्रयोग करें। बाहरी तरफ उसे थोडा उभारने की कोशिश करें और भौंहों की ओर थोडा कम उभारें। भीतरी लैशेज पर ब्राउन और बाहरी लैशेज पर हलका काला मसकारा प्रयोग करें।

वाइड सेट आईज : क्लोज-सेट आई की तुलना में इनकी दूरी नाक से थोडी ज्यादा होती है। इसलिए ऐसे मेकअप की जरूरत होती है जो आंखों को संतुलित दर्शाए। सबसे पहले आंखों और नाक के बीच वाले हिस्से पर छोटे ब्लशर ब्रश से अपने स्किन टोन से थोडा गहरे टोन वाला पाउडर लगाएं। नाक की तरफ ब्रश करते हुए पाउडर को एकसार कर लें। ब्रो की बाहरी रेखा पर न्यूट्रल-टोंड हाईलाइटर प्रयोग करें। क्रीज लाइन (आंखों के ऊपरी हिस्से पर पडने वाली रेखा) पर शेड दें और आंख के भीतरी किनारे यानी नाक की तरफ वाले हिस्से को उभारें। आंख के बाहरी किनारे पर हलके मैट शैडो से ब्रश करके आई मेकअप को पूर्णता दें। मसकारा लगाते समय लैशेज सीधी रखें। उसके बाहरी हिस्से पर दाहिनी तरफ ज्यादा मसकारा लगाएं।

एशियन आई : ये आंखें नाक की तरफ भीतरी किनारों की ओर थोडी झुकी हुई नजर आती हैं। इनमें शैडो का प्रयोग करते समय लेयरिंग इफेक्ट देने के लिए तीन रंगों का प्रयोग करें। आई लैशेज के पास हलका शैडो लगाएं, पलकों पर मीडियम कलर और ब्रो बोंस पर बेहद हलके रंग का प्रयोग करें। आंखों के किनारे रेखा या ऊपरी तरफ क्रीज बनाने से बचें। आई लाइनर का प्रयोग केवल आंखों के ऊपरी हिस्से पर करें।

आमंड शेप्ड आई : बादाम के शेप वाली ये आंखें सर्वोत्तम मानी जाती हैं। इनमें कई तरह का मेकअप किया जा सकता है। जैसे बारीक आई लाइनर, कृत्रिम आई लैशेज, ब्राइट कलर्स।

सबसे पहले ब्रो बोन में स्किन टोन के मुताबिक हलके रंग का शैडो इस्तेमाल करें। आई लिड (पलकों) से कुछ शेड गहरा रंग चुनें। आंख के निचले किनारों पर ब्लैक या ब्राउन काजल पेंसिल से रेखा बनाएं। इसे आंखों के बाहरी किनारों की तरफ उभारने की कोशिश करें। अगर आपकी आंखें नीली हैं तो ब्लू पेंसिल भी प्रयोग कर सकती हैं।

राउंड आई : गोल आंखों के लिए गहरे रंग का शैडो चुनें। नाक की ओर से शुरू करके ब्रो के बाहरी तरफऊपर ले जाते हुए शैडो को अच्छी तरह एकसार करें। निचली पलक पर हलके टोंड शैडो या पेंसिल का प्रयोग करें और इसे ऊपर की ओर बाहरी हिस्से तक ले जाएं। ब्रो लाइन के पास म्यूटेड हाईलाइटर लगाएं।

छोटी आंखें : आंखें यदि ये छोटी हैं तो इन्हें बडा दिखाने के लिए पलकों के बाहरी किनारे पर ऊपर की तरफ हलके रंग का पाउडर शैडो छोटे ब्लशर की मदद से लगाएं। क्रीज के पास गहरा शैडो प्रयोग करें। लेकिन नाक की तरफ आंखों के भीतरी हिस्से पर कोई रंग न प्रयोग करें, क्योंकि इससे आंखें और छोटी दिखने लगेंगी। किनारों पर शैडो लगाने के लिए ब्रश का प्रयोग करें। इसके बाद आंख के निचले हिस्से पर हलकी ग्रे कलर की काजल पेंसिल से रेखा बनाएं।

निस्तेज आंखें : ड्रूपिंग या निस्तेज आंखों के लिए आई मेकअप आंख के भीतरी हिस्से से शुरू किया जाना चाहिए। ऊपरी और बाहरी तरफ मीडियम टोंड शैडो ब्रश की मदद से लगाएं। इसे ब्रो लाइन के ठीक पास तक लाकर छोड दें। पलकों की बाहरी रेखा पर किसी भी रंग का प्रयोग न करें। लेकिन आंख की ऊपरी क्रीज लाइन को थोडा उभारने की कोशिश करें, मीडियम ब्राउन आई शैडो से रेखा बनाएं, फिर अपनी पलकों को थोडा कर्ल करें। मसकारा के कुछ कोट्स भी इसमें मदद करेंगे।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): व्यर्थ की भाग-दौड़ से बचा जाए तो अच्छा है। दुर्लभ स्वप्न साकार होंगे। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंग। शुभांक-2-4-6

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध होंगे। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। मातृपक्ष के लोगो का सहयोग मिलेगा। शुभांक-5-7-9

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। उतावलेपन से बचें। मध्याह्न से ही आशाएं बलवती होंगी। महत्त्वपूर्ण कार्यों को आज ही निबटा लें उसके बाद समय व्ययकारी सिद्ध होगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। कामकाज की अधिकता रहेगी। शुभांक-3-6-8

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक उपक्रम में उलटफेर की शुरूआत हो सकती है। शुभांक-1-5-9

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): खान-पान में विशेष सावधानी बरतें। मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। नैतिक दायरे में रहें। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। वाहन चालन में सावधानी बरतें। बातचीत में संयम बरतें। शुभांक-4-7-8

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): मन प्रसन्न बना रहेगा। अचल संपति की खरीद अथवा कृषि उद्यम में रुचि पैदा होगी। परिवार के साथ मनोरांजनिक स्थल की यात्रा होगी। आपसी प्रेम-भाव में बढ़ोतरी होगी। भविष्य की योजनाओं पर विचार विमर्श होगा। अपने आपको अधिक सक्रिय पायेगें। चिंतनीय वातावरण से मुक्ति मिलेगी। शुभांक-5-8-9

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। बाहरी सहयोग की अपेक्षा रहेगी। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। शुभांक-4-6-7

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। पद-प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। शुभांक-1-4-7

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): कल का परिश्रम आज लाभ देगा। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। शुभांक-2-4-5

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): परिवार में किसी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अपनी गतिविधियों पर पुनर्विचार करें। वैचारिक द्वन्द्व और असंतोष बना रहेगा। किसी सूचना से पूर्ण निर्णय सम्भव। सुख आरोग्य प्रभावित होगा। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शुभांक-3-5-6

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ भी होगा और पुराने मित्रों का समागम भी। व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताए भी बढ़ेगी। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूति मिलेगी। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। शुभांक-4-6-7

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। शुभांक-2-5-7

काकुरो पहेली - 1977

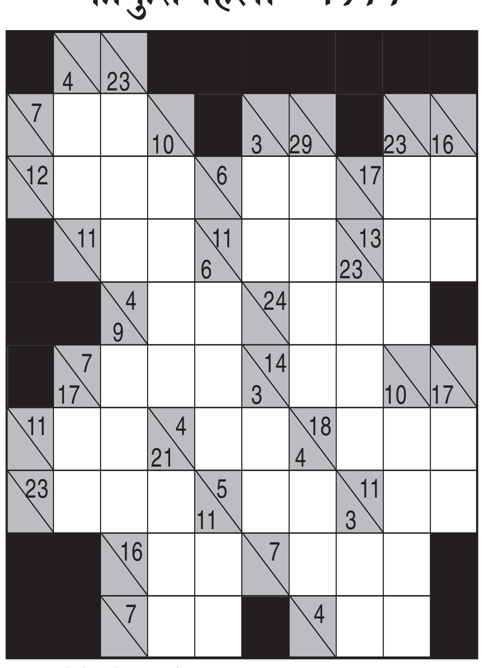

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

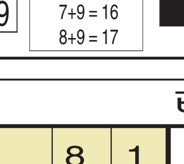

1+2 = 3
1+3 = 4
7+9 = 16
8+9 = 17

काकुरो - 1976 का हल

हंसी के फूव्वारें

ज्यादातर फिल्में शादी होने का दृश्य दिखाकर ही क्यों खत्म हो जाती हैं ?

ताकि शादी के बाद के दुखद दृश्य न देखने पड़ें.

□ □ □

नर्स, मैं तुमसे बेहद प्यार करता हूँ, मैं अब अच्छा नहीं होना चाहता.

नर्स बोली-तुम अब अच्छे हो भी नहीं सकते क्योंकि डॉक्टर भी मुझसे प्रेम करता है और उसने मुझे तुमसे प्यार करते हुए देख लिया है.

□ □ □

अविवाहिता-क्या तुम अपनी किसी सबसे बड़ी बेवकूफी का प्रमाण दे सकते हो?

अविवाहित-तुमने प्यार कर लिया, यह क्या छोटा प्रमाण है?

□ □ □

सुनीता-पता नहीं इस बार साड़ियों के कौन-कौन से नये डिजाइन निकलेंगे ?

मोहन-वही दो ! एक जो तुम्हें पसन्द नहीं आयेगा. दूसरा वह जिसे खरीदने के लिए मेरे पास रुपये नहीं होंगे.

□ □ □

एक पति ने अपनी घरवाली से पूछा- युधिष्ठिर भी जुआ खेले थे, फिर तू मुझे क्यों रोकती है ?

घरवाली ने कहा -नहीं रोकूंगी, लेकिन याद रखना कि द्रौपदी के भी पांच पति थे.

□ □ □

फिल्म वर्ग पहेली- 1977

बायें से दायें:-

१. राजकुमार, राजेश खन्ना, माला की फिल्म-३
३. 'साथिन' की सच्ची घटना पर आधारित रघुवीर यादव, नंदिता की फिल्म-४
७. ऋषिकपूर, शाहरूख, दिव्या भारती की फिल्म-३
८. 'मेरे दिल ने जो मांगा मिल गया' गीत वाली फिल्म-४
९. बलराज, श्यामा की 'तारों की चूनर' गीत वाली फिल्म-२,१
११. 'क्या मैंने सोचा' गीत वाली संजय, अभिषेक, बिपाशा की फिल्म-२
१२. संजय, अभिषेक, जायेद, एशा, राइमा, शिल्पा की 'उन से पूछें' गीत वाली फिल्म-२
१३. 'सलमा को मिल' गीत वाली जैकी, पूनम की फिल्म-३
१४. ऋषिकपूर, जयाप्रदा की 'कोयल बोली दुनिया डोली' गीत वाली फिल्म-४
१६. 'दिल डूबा डूबा नीली' गीत वाली अमिताभ, अजय, अक्षय, ऐश्वर्याराय का फिल्म-२
१९. अक्षय, करिश्मा की 'माथे पे चमके' गीत वाली फिल्म-४
२१. 'ये चाँद सा' गीत वाली शम्मी, शर्मिला की फिल्म-३,१,२
२४. अरूण गोविल, साहिला की 'मेरी चढ़ती जवानी समझे' गीत वाली फिल्म-२
२७. 'मेरा कुछ सामान' गीत वाली शशिकपूर, नसीर, रेखा की फिल्म-४
२९. अक्षय, रवीना की 'सुबह से लेकर' गीत वाली फिल्म-३
३०. 'तू ने कहा जब से' गीत वाली अक्षय, करीना कपूर की फिल्म-३
३१. अजय, पूजा, सोनाली की 'हम यहाँ तुम यहाँ' गीत वाली फिल्म-२

ऊपर से नीचे:-

१. अमिताभ, वहीदा, जीनत की फिल्म-३
२. अशोक, बीना की 'जाता हूँ मैं' गीत वाली फिल्म-२,१
३. 'इश्क में दिल' गीत वाली नसीर, डिम्पल की फिल्म-४
४. सनी, शाहरूख, जूही की फिल्म-२
५. १९९४ में आई मिथुन, गोविंदा, योगिता की एक फिल्म-४
६. जीतेंद्र, बबीता की फिल्म-३
१०. 'आगे सुख तो' गीत वाली अनिल, विजया की फिल्म-३
१२. विवेक, दीया की 'दिल ही दिल में' गीत वाली फिल्म-२
१३. राजकुमार, मीना की फिल्म-३
१४. संजयदत्त, पूजा की 'जब जब प्यार' गीत वाली फिल्म-३
१५. 'घर आजा परदेसी' गीत वाली फिल्म-३
१७. राजेंद्रकुमार, वहीदा रहमान की 'ये मौसम भीगा भीगा है' गीत वाली फिल्म-३
१८. 'दो नैनों के पंख' गीत वाली फिल्म-२
२०. सनी, समीरा की 'नशा है आज' गीत वाली फिल्म-२
२२. 'गैर से अंख लड़ाई' गीत वाली फिल्म-३
२३. विनोद, डिम्पल की 'चंपई धूप के' गीत वाली फिल्म-२
२५. 'मेरा मन भंवरा' गीत वाली फिल्म-३
२६. मिथुन, अतुल, पूजा की फिल्म-३
२७. 'देखो देखो जानम हम' गीत वाली फिल्म-२
२८. सुनीलदत्त, आशा की फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 1976

सूडोकु -1977

	8	1				2	5	
2								9
5			1		7	4		
9	5			4			2	
		3	9		6	7		
	7			8			1	5
		7	2		5			1
6								7
	1	5				6	9	

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -1976 का हल

5	9	4	2	3	6	1	8	7
8	7	3	1	4	5	2	9	6
6	1	2	8	7	9	3	5	4
1	6	7	9	8	2	4	3	5
3	8	5	4	1	7	6	2	9
2	4	9	6	5	3	7	1	8
7	5	6	3	9	1	8	4	2
4	2	1	5	6	8	9	7	3
9	3	8	7	2	4	5	6	1

शब्द पहेली - 1977

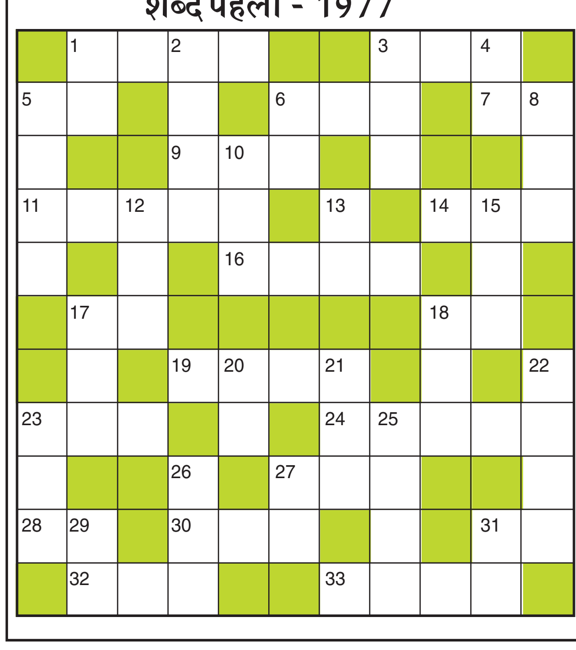

बाएँ से दाएँ

1.असभ्यता,मूर्खता-4
3.निर्भय,बहादुर-3
5.प्याला-2
6.सहारा,शरण-3
7.मां का भाई-2
9.साठ वर्ष की अवधि-3
11.परतंत्रता,गुलामी-5
14.दानव,दैत्य-3
16.लूटपाट-4
17.वाद्य यंत्र-2
18.परछाई,छाया-2
19.आदत,स्वभाव(उर्दू-4)
23.जंगल,वन-3
24.सेंधमार-5
27.गजल लिखने वाला-3
28.मोटा आटा,सूजी-2
30.गुलिस्तां,बाग-3
31.एक ग्रह,शनिश्चर-2
32.दबाना,कुचलना-3
33.रोब वाला, ठसके वाला-4

ऊपर से नीचे

1.मंत्रों का पाठ-2
2.उद्देश्यहीन-4
3.अनूठा,अनोखा-3
4.लक्ष्मी,कमला-2
5.खीजना,रोना-4
6.एक पौधा,अकुवा, आकड़ा-2
8.दक्ष,होशियार-3
10.जमीकंद,एक सब्जी-3
12.धैर्य,संयम-3
13.अस्थमा-2
15.एक गायिका-3
17.वर्षा ऋतु-3
18.महोदय-3
20.पैंदा,तला-2
21.पुत्र,बेटा-3
22.अवमानना-4
23.नास्तिक (उर्दू-3)
25.करामात-4
26.प्रतिज्ञा-3
27.ठाठ-बाट-2
29.अदालत में प्रस्तुत दावा-2
31.तीर,बाण-2

शब्द पहेली - 1976 का हल

दिल्ली में वायु गुणवत्ता 'बहुत खराब' श्रेणी में पहुंची

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार, दिल्ली की हवा की गुणवत्ता 'बहुत खराब' श्रेणी में पहुंच गई है। सोमवार सुबह 6 बजे वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 313 था। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने दिल्ली में घने कोहरे के कारण येलो अलर्ट जारी किया है। इसमें कहा गया है कि विजिबिलिटी कम हो सकती है, जिससे ट्रैफिक में दिक्कतें आ सकती हैं। आने वाले दिनों में बादल छाए रह सकते हैं और हल्की बारिश या बूंदाबांदी हो सकती है। पिछले कुछ दिनों में एक्यूआई का स्तर तेजी से बढ़ा है, जो खराब स्थिति की ओर इशारा करता है। प्रदूषण में ये बढ़ोतरी खराब मौसम के कारण हुई है, जिससे स्थिति को और खराब बना दिया है। सोमवार सुबह तक दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में एक्यूआई की चिंता बढ़ाने वाली रीडिंग मिली। आनंद विहार में एक्यूआई 357 था, जबकि अशोक विहार में 335 था। वहीं, जहांगीरपुरी, पंजाबी बाग, पटपड़गंज और वजीरपुर जैसे इलाकों में एक्यूआई 322 से 347 के बीच रहा। इस बीच, विवेक विहार में सबसे अधिक एक्यूआई 359 दर्ज किया गया, जो दिल्ली में वायु प्रदूषण की गंभीरता को दिखाता है। आर के पुरम, चांदनी चौक और नजफगढ़ जैसे इलाकों में भी एक्यूआई 300 से ऊपर रहा, जिससे इन इलाकों को 'बहुत खराब' श्रेणी में रखा गया।

बजट से आम जनता निराश, किसानों और जवानों के लिए कुछ खास नहीं : हनुमान बेनीवाल

जोधपुर। आरएलपी सुप्रीमो और सांसद हनुमान बेनीवाल ने कहा कि केंद्रीय बजट आम लोगों की उम्मीदों को पूरा करने वाला नहीं है। बजट से लोगों को काफी उम्मीदें थीं, लेकिन उन्हें निराशा हाथ लगी है। इसमें देश के किसानों और जवानों के लिए कुछ खास प्रावधान नहीं किया गया है। उन्होंने कहा कि मध्यम वर्ग को साधने का प्रयास करते हुए 12 लाख तक की इनकम पर टैक्स में छूट दी है, लेकिन पेट्रोल-डीजल की बड़ी कीमतें, सरकारी नौकरी, जवानों को रोजगार, एमएसपी पर फसलों की खरीद को लेकर बजट में जिक्र नहीं किया गया है। खास तौर से राजस्थान की बात करें, तो राजस्थान का बजट में जिक्र नहीं किया गया है। जो उम्मीद थी, वह पूरी नहीं हुई। राजस्थान से तीन-तीन, चार-चार मंत्री केंद्र में हैं, उसके बावजूद राजस्थान को बजट में कुछ खास नहीं दिया गया। राजस्थान में आरपीएससी (राजस्थान लोक सेवा आयोग) द्वारा आयोजित की गई परीक्षाओं में कथित घोटालों का आरोप लगाते हुए बेनीवाल ने सख्त टिप्पणी की है। बेनीवाल ने कहा कि 2005 से लेकर 2024 तक जितनी भी आरपीएससी की परीक्षाएं आयोजित की गई हैं, उनकी जांच की जानी चाहिए।

बसंत पंचमी पर भीलवाड़ा के तिरुपति बालाजी मंदिर में 14वां पाट्टोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया

भीलवाड़ा। तिरुपति सेवा समिति के तत्वावधान में सरस डेयरी के सामने, लक्ष्मीपुरा स्थित भीलवाड़ा के एकमात्र तिरुपति बालाजी मंदिर में बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर 14वां पाट्टोत्सव धूमधाम से मनाया गया। समिति अध्यक्ष महेशपुरी, सचिव सुरेश तोषनीवाल और संयोजक मुकेश गुर्जर ने जानकारी देते हुए बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत भगवान तिरुपति बालाजी के दुग्ध अभिषेक से हुई। इसके पश्चात वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पंडितों द्वारा विधि-विधानपूर्वक हवन व शांति अनुष्ठान संपन्न किया गया। दोपहर 12 बजे महाआरती के पश्चात प्रसाद वितरण किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से सहभागिता की। इस अवसर पर दक्षिण भारत स्थित चित्तूर जिले के प्रसिद्ध श्री तिरुपति बालाजी मंदिर की परंपराओं के अनुरूप सभी अनुष्ठान संपन्न किए गए। भक्तगण पारंपरिक पीत वस्त्र धारण कर कार्यक्रम में शामिल हुए, जिससे मंदिर परिसर भक्ति और आस्था से ओतप्रोत हो गया। समारोह में भीलवाड़ा के सैकड़ों श्रद्धालु एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में समिति के अशोक जोशी, अनिल बांगड़, प्रवीण अग्रवाल, राधेश्याम तोषनीवाल, संजय डाड सुशील तम्बोली सहित अन्य सदस्यों का विशेष योगदान रहा।

राम मंदिर के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास की हालत नाजुक, लखनऊ रेफर

अयोध्या। अयोध्या राम मंदिर के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास की तबीयत अचानक बिगड़ गई है। उन्हें सांस लेने में कठिनाई महसूस होने पर तुरंत श्री राम अस्पताल अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां से बेहतर इलाज के लिए उन्हें पहले ट्रामा सेंटर और फिर लखनऊ पीजीआई रेफर किया गया। अयोध्या सिटी के न्यूरो सेंटर के डॉक्टर अरुण कुमार सिंह ने बताया कि आचार्य सत्येंद्र दास की स्थिति थोड़ी नाजुक है। सीटी स्कैन में पता चला कि उन्हें ब्रेन हेमरेज हुआ है और वह कई सेगमेंट्स में है। डॉक्टर अरुण कुमार सिंह ने बताया कि हमने उन्हें लखनऊ रेफर कर दिया है ताकि वहां पर उन्हें और बेहतर चिकित्सा सुविधा मिल सके। शुरुआती जानकारी के मुताबिक आचार्य सत्येंद्र दास को सांस लेने में कठिनाई महसूस होने पर अस्पताल में भर्ती कराया गया।

बसंत पंचमी के अमृत स्नान पर त्रिवेणी में उमड़ा जन समुद्र

एजेंसी

महाकुम्भनगर। बसंत पंचमी के पवित्र अवसर पर त्रिवेणी संगम में अमृत स्नान के लिए आस्था का जनसमुद्र उमड़ पड़ा। महाकुम्भ के तीसरे अमृत स्नान पर करोड़ों श्रद्धालु देर रात से ही पुण्य की कामना के साथ संगम की रेत पर एकत्रित होने लगे।

हर-हर गंगे, बम बम भोले और जय श्री राम के गगनभेदी उद्घोष से पूरा मेला क्षेत्र गूंज उठा। सीएम योगी के विशेष निर्देश पर सुरक्षा के ऐसे पुख्ता इंतजाम रहे कि परिंदा भी पर न मार सके। यहां डीआईजी और एसएसपी खुद मैदान में उतरकर व्यवस्थाओं की निगरानी कर रहे थे। श्रद्धालुओं के साथ साधु-संत, महामंडलेश्वर और देश-विदेश से

आए भक्त संगम में पवित्र डुबकी लगाते नजर आए। इसके साथ ही सुरक्षा के बेहद कड़े इंतजाम किए गए थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर अमृत स्नान के लिए अद्भुत और दिव्य महाकुम्भ की सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई। यातायात पूरी तरह सुचारु रहा और श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ा। स्नान के बाद श्रद्धालु दान-पुण्य करते दिखे। बसंत पंचमी पर अमृत स्नान के दौरान महाकुम्भ का डिजिटल स्वरूप भी आकर्षण का केंद्र रहा।

जहां हर व्यक्ति इस दिव्य अनुभूति को अपने कैमरे में सुरक्षित करने के लिए उत्साहित नजर आया। संगम तट पर फूल-मालाओं से लदे संतों पर उत्साहित श्रद्धालुओं ने पुष्प वर्षा कर उनका स्वागत किया। जिससे पूरे महाकुम्भ का माहौल और भव्य बन गया।

पार्वती अरगा एक नया प्रकृति संस्कृति पर्यटन का कॉरिडोर बनेगा – कीर्तिवर्धन सिंह

एजेंसी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पार्वती अरगा पक्षी विहार को अंतर्राष्ट्रीय स्तर के रामसर स्थल के रूप में सन् 2019 में मान्यता मिली। गोंडा में 100 से अधिक छोटे ब? वेटलैंडस हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि गोंडा की वेटलैंडस सिटी के रूप में पहचान बनने की पूरी संभावना है। इस ऐतिहासिक अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने इस स्थान के महत्व को बनाने एवं कार्यक्रम को आयोजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह केन्द्रीय पर्यावरण वन और उत्तर प्रदेश वन विभाग के संयुक्त प्रयास से जिला गोंडा के पार्वती अरगा पक्षी विहार में वर्ल्ड वेटलैंड्स डे के अवसर पर 'हम सभी के भविष्य के लिए आर्द्रभूमियों का संरक्षण' विषय पर आयोजित गोष्ठी में बोल रहे थे।

इस दौरान केन्द्रीय पर्यावरण वन व जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री कीर्तिवर्धन सिंह ने कहा कि पार्वती अरगा का समग्र विकास मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में हो रहा है। अयोध्या के निकट होने के कारण पार्वती अरगा में पर्यटन की अपार सम्भावना है। अयोध्या से देवी पाटन के बीच पार्वती अरगा एक नया प्रकृति संस्कृति पर्यटन का कॉरिडोर बनेगा, जिससे रोजगार को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वजों को प्रकृति की महत्ता का भली भांति ज्ञान था। इसी कारण से अलग-अलग कालखंडो में पैदा हुए महापुरुषों ने पर्यावरण एवं जल संरक्षण का विशेष ध्यान रखा।

चार मई को खुलेंगे बदरीनाथ धाम के कपाट

एजेंसी

नरेंद्र नगर। उत्तराखंड के चार धामों में से एक श्री बदरीनाथ धाम के कपाट इस वर्ष वैशाख मास शुक्ल पक्ष सप्तमी, पुष्य नक्षत्र में 04 मई (रविवार) को प्रातः 6 बजे खुलेंगे। तेलकलश गाडू घड़ा यात्रा 22 अप्रैल मंगलवार को नरेंद्र नगर राजदरबार से शुरू होगी। बसंत पंचमी पर्व पर नरेंद्र नगर राजदरबार में पंचांग गणना के बाद श्री बदरीनाथ धाम के कपाट खुलने की तिथि तय हुई। इस कार्यक्रम की शुरुआत प्रातः साढ़े दस बजे राजमहल में पूजा अर्चना और समारोह से हुई, जिसमें श्री डिमरी धार्मिक केंद्रीय पंचायत ने गाडू घड़ा तेल कलश राजमहल के सुपुर्द किया। महाराजा मनुजयेंद्र शाह, बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति अधिकारियों और डिमरी पंचायत की उपस्थिति में राजपुरोहित कृष्ण प्रसाद उनियाल ने पंचांग गणना और राजा की जन्मपत्री वाचन के पश्चात बदरीनाथ धाम के कपाट खुलने की तिथि तय की गई। महाराजा मनुजयेंद्र शाह की ओर से कपाट खुलने की तिथि की घोषणा होते ही राजमहल जय बदरीविशाल के उदघोष से गुंजायमान हो गया। बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी)मुख्य कार्याधिकारी

विजय प्रसाद थपलियाल ने बताया कि बदरीनाथ धाम के कपाट खुलने की तिथि तय हुई है।मंदिर समिति अधिक तत्परता से बदरीनाथ धाम और केदारनाथ धाम यात्रा तैयारियों व्यवस्थाओं को चाक चौबंद करने में जुटी है। शिवरात्रि पर श्री केदारनाथ धाम के कपाट खुलने की तिथि भी घोषित हो जाएगी।

उन्होंने बताया कि शासन प्रशासन से समन्वयकर आगामी यात्रा तैयारियां की जा रही है। शीघ्र ही मंदिर समिति अधिकारियों का दल बदरी-केदार जाएगा और यात्रा पूर्व तैयारियों का खाका तैयार करेगा।

यात्रा को देखते हुए मंदिर समिति के विश्रामगृहों में मेंटनेंस कार्य जनवरी माह से शुरू हो चुके हैं। बीकेटीसी मीडिया प्रभारी डा हरीश गौड़ ने बताया कि केदारनाथ धाम के कपाट खुलने की तिथि शिवरात्रि बुधवार 26 फरवरी को पंचांग गणना पश्चात तय होगी। कपाट खुलने की तिथि तय करने के लिए श्री ओंकारेश्वर मंदिर उखीमठ में 26 फरवरी को प्रातः 9.30 बजे से समारोह शुरू होगा। वहीं द्वितीय केदार मद्महेश्वर औए तृतीय केदार तुंगनाथ के कपाट खुलने की तिथि वैशाखी के दिन तय होगी। चारधाम यात्रा की शुरुआत 30 अप्रैल (अक्षय तृतीया) से होगी। इस दिन श्री गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के कपाट खुलने की परंपरा अनुसार घोषणा की जाएगी।

सड़क दुर्घटना में छत्तीसगढ़ के चार लोगों सहित छह की मौत, तीन गंभीर

एजेंसी

सोनभद्र। हाथीनाला थाना क्षेत्र के वाराणसी शक्तिनगर मार्ग पर रानीताली क्षेत्र में एक तेज रफ्तार हाईवा ट्रक अनियंत्रित होकर सड़क पार करके रमानुगंज छत्तीसगढ़ से वाराणसी जा रहे क्रेटा कार सवार को टक्कर मारते हुए एक अन्य व्यक्ति को कुचल दिया। टक्कर इतनी तेज थी कि कार सवार छत्तीसगढ़ के चार लोगों समेत कुल छह लोगों की मौके पर मौत हो गई, जिनमें हाईवा ट्रक चालक भी है। वहीं तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।

पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा ने बताया कि रविवार शाम 19.30 बजे थाना हाथीनाला थाने क्षेत्र में वाराणसी शक्तिनगर मार्ग पर रानिताली क्षेत्र में एक हाईवा ट्रक डिवाइडर पार करके विपरीत लेन में चला गया और एक क्रेटा कार में टक्कर मार दी। इस दुर्घटना में कार सवार छत्तीसगढ़ निवासी चार लोग, हाईवा ट्रक चालक व सड़क पर टहल रहा एक अन्य व्यक्ति समेत कुल छह लोगों की मौत हो गई, जबकि तीन लोग गंभीर रूप से

घायल हो गए। इस घटना में कार सवार 40 वर्षीय सनाउल्ला खलीफा पुत्र असलम खलीफा निवासी रामानुज गंज छत्तीसगढ़, 45 वर्षीय रवी मिश्रा पुत्र ओमप्रकाश मिश्रा मेडिकल कॉलेज अम्बिकापुर छत्तीसगढ़, चाय पीकर जा रहा अन्य ट्रक चालक 40 वर्षीय उमाशंकर पटेल ऊर्फ गुड्डू पुत्र स्व बनारसी पटेल निवासी ग्राम मदनपुरा थाना अदलहाट जनपद मिर्जापुर, मिर्जापुर निवासी हाईवा ट्रक चालक दयाशंकर पाल व दो कार सवार अज्ञात लोगों की मौत हो गई। मृतक के परिजनों को सूचना दे दी गई है और तीनों घायलों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

सीएम योगी के सघन टीबी अभियान के 56 दिन बेमिसाल, 53251 मरीज चिन्हित

एजेंसी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश के बाद एक जनवरी से पूरे प्रदेश में विस्तारित दिवसीय सघन टीबी अभियान बेमिसाल रहा है। पहले एक महीने के अंदर तकरीबन 40 हजार टीबी मरीजों की पहचान हुई है। सात दिसंबर से शुरू हुए अभियान में अब तक कुल 53,251 टीबी मरीजों की पहचान हो चुकी है। इसी बीच केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव ने मथुरा का भ्रमण कर अभियान के प्रति संतोष जताया है। राज्य क्षय रोग अधिकारी डॉ. शैलेन्द्र भटनागर ने बताया कि सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव ने शनिवार शाम को मथुरा में आयुष्मान आरोग्य मंदिर बांदी में लगे निक्षय शिविर व सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बलदेव का निरीक्षण किया। इसके अलावा निक्षय वाहन का अवलोकन व कई टीबी मरीजों से बात की। उन्होंने बलदेव सीएचसी में निक्षय

मित्र द्वारा विकसित आईडी कम कैलेंडर को सराहा और साथ ले गईं। डॉ. भटनागर ने बताया कि प्रदेश में सर्वाधिक 15222 टीबी मरीज मथुरा जिले में निक्षय मित्रों द्वारा गोद लिए गए हैं। इस पर उन्होंने खुशी जताई। डॉ. भटनागर ने बताया कि अभियान में अब तक कुल 53,251 टीबी मरीजों की पहचान हुई है जिनमे से 36,295 का इलाज शुरू कर दिया गया है। सभी 75 जनपदों में लगभग तीन करो? की उच्च जोखिम की जनसंख्या को आच्छादित कर 1.72 करो? लोगों की टीबी के संभावित लक्षणों के आधार पर स्क्रीनिंग की गई और एक्सरे, नॉट या माइक्रोस्कोपिक जांच की गई। अब तक अभियान में सर्वाधिक 2057 टीबी के मरीज आगरा में और सबसे कम 131 संत रविदास नगर में मिले हैं। सीतापुर में 2045, लखनऊ में 1818, अलीगढ़ में 1582 व कानपुर में 1536 टीबी के मरीजों की पहचान हुई है। इसके साथ ही अभियान के दौरान कुल 3,24,2026 निक्षय शिविर लगाकर टीबी की स्क्रीनिंग की गई और जागरूकता का काम किया गया। औसतन प्रतिदिन 4604 निक्षय शिविर लगाए गए। 60998 निक्षय मित्रों द्वारा लगभग 182182 टीबी मरीजों को गोद लिया गया है और 306477 पोषण पोटली का वितरण किया गया है। सात दिसंबर से उन 15 जनपदों में 100 दिवसीय टीबी सघन अभियान शुरू हुआ था, जहां टीबी से होने वाली मौतों की संख्या अधिक थी। यहां नए टीबी रोगियों और संभावित टीबी रोगियों की पहचान दर राष्ट्रीय औसत से कम थी। दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में मुख्यमंत्री ने अभियान की समीक्षा करते हुए इस अभियान को सभी 75 जनपदों में लागू करने के निर्देश दिए थे।

मुंबई एयरपोर्ट पर 50 करोड़ रुपये का सोना, हीरा और गांजा जब्त, 8 गिरफ्तार

एजेंसी

मुंबई। सीमा शुल्क विभाग (कस्टम) की टीम ने पिछले पांच दिनों में मुंबई एयरपोर्ट पर 50 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य का हाइड्रोपोनिक गांजा, सोना और हीरे जब्त करके आठ लोगों को गिरफ्तार किया है।

कस्टम विभाग के एक अधिकारी ने रविवार को मीडिया को बताया कि उनकी टीम ने मुंबई एयरपोर्ट पर 28 जनवरी से 1 फरवरी के बीच एक विशेष अभियान चलाया था। इस दौरान कस्टम टीम ने 50.116 करोड़ रुपये मूल्य का 50.11 किलोग्राम हाइड्रोपोनिक गांजा, 93.8 लाख रुपये मूल्य के हीरे और 1.5 करोड़ रुपये मूल्य का 2.073 किलोग्राम सोना जब्त किया है। अभियान के दौरान सीमा शुल्क अधिनियम के तहत छह मामले दर्ज करके आठ लोगों को गिरफ्तार किया गया है। अधिकारी ने बताया कि इसी तरह कस्टम टीम ने 24-25 जनवरी को ड्रग्स, सोने की धूल और विदेशी मुद्रा जब्त की थी। ऑपरेशन के दौरान 7.51 करोड़ रुपये कीमत की 751 ग्राम संदिग्ध कोकीन पकड़ी, जिसे एक यात्री ने छिपाकर खाया था। मुंबई सीमा शुल्क टीम ने यात्री के बैग में छिपाकर रखे गए 1,010 ग्राम सोने की धूल भी जब्त की थी, जिसकी अनुमानित कीमत 75.47 लाख रुपये है। कस्टम टीम ने एक छिपे हुए डिब्बे में 22.40 लाख रुपये की विदेशी मुद्रा जब्त की। इसी तरह 1 फरवरी को कस्टम टीम ने मुंबई एयरपोर्ट पर 1.649 किलोग्राम कोकीन बरामद की, जिसका अनुमानित बाजार मूल्य करीब 16.49 करोड़ रुपये है।

जिससे सनातन धर्म का गौरव बढ़ता हो, सपा को उससे पीड़ा होती हैः सीएम योगी

एजेंसी

अयोध्या। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने समाजवादी पार्टी को खूब धोया। बोले कि 'एक्स' पर दो महीने से सपा अध्यक्ष के पोस्ट को देखिए, यह प्रयागराज महाकुम्भ का विरोध करते हुए आए हैं। अब तक 34 करोड़ श्रद्धालुओं ने पावन त्रिवेणी के संगम पर आस्था की डुबकी लगाई है। शनिवार को उप राष्ट्रपति, कई देशों के राजदूत-हाई कमिश्नर आए थे। पूरी दुनिया आकर अभिभूत है, लेकिन सपा को इससे पीड़ा हो रही है। जिससे सनातन धर्म का गौरव बढ़ता हो, भारतीयों का सीना चौड़ा होता हो, उससे सपा को पीड़ा होती है। सपा सनातन धर्म और सामाजिक न्याय के पुरोधाओं की विरोधी है। सीएम ने कहा कि परसों (शुक्रवार) हेलीकॉप्टर से जा रहा था, अयोध्या धाम में हर तरफ जनसैलाब दिखाई दे रहा था। भाजपा की डबल इंजन सरकार ने फोरलेन

सड़कें, रेलवे लाइन को डबल, स्टेशनों का सुदृढ़ीकरण, इंटरनेशनल एयरपोर्ट का विस्तार नहीं किया होता तो प्रतिदिन लाखों श्रद्धालु यहां नहीं आ पाते। केंद्र व राज्य सरकार का पैसा और हमारे जनप्रतिनिधियों का प्रयास रहा तो अयोध्या का विकास व व्यवसाय बढ़ रहा है। जब भी हमने अयोध्या के विकास की कार्ययोजना को बढ़ाया तो सपा ने विरोध किया। सड़क चौड़ीकरण के दौरान 1700 करोड़ से अधिक का मुआवजा दिया गया। राम मंदिर का शिलान्यास और राम मंदिर में रामलला विराजमान हुए, तब भी सपा ने विरोध किया। एयरपोर्ट का नामकरण महर्षि वाल्मीकि, रैन बसेरों का नाम निषादराज गुह्य के नाम पर किया गया, रसोई का नाम मां शबरी के नाम पर रखा गया, तब भी सपा को पीड़ा हुई। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने यूपी में पीएसी की तीन महिला बटालियन (वीरांगना उदा देवी, झलकारी बाई, अवंती बाई लोधी) गठित की। सपा ने तब भी विरोध किया था।

यह वही सपा है, जो बहराइच में महाराज सुहेलदेव के विजय स्मारक का विरोध करती है, यह कहती है कि वहां गाजी का स्मारक होना चाहिए। सपा को गाजी व पाजी (बदमाश) प्यारे हैं। इन्हें बेटियों की इज्जत पर हाथ डालने वाला मिल्कीपुर का मोईद खान और कन्नौज का नवाब सिंह यादव प्यारा है। सपा गरीब, किसान, बेटी-बहन, व्यापारी, युवा के साथ नहीं, बल्कि माफिया, दुष्चरित्र व पेशेवर अपराधी के साथ खड़ी होती है। कोई घटना घटित होती है तो सपा का हाथ होता है या वह षडयंत्र में शामिल रहती है।

सीएम ने कहा कि सपा भारत विरोधी तत्वों को गले लगाती है। विधानसभा उपचुनाव के दौरान इनके दरिंदे नेता ने मैनपुरी में दलित बेटी की गला घोंटकर हत्या कर दी थी। अयोध्या में कल एक बेटी के साथ घटना हुई है, आज इनका सांसद नौटंकी कर रहा है। जांच होगी तो उसमें भी सपा का कोई दरिंदा शामिल जरूर होगा। सीएम ने कहा कि 2016 में सपा सरकार के समय 2.35 लाख पर्यटक अयोध्या आए थे, जबकि 2024 में यहां 16.11 करोड़ श्रद्धालु आए। विकास विरोधी सपा की दृष्टि सैफई से बाहर नहीं जाती।

छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में 25 किग्रा का आईईडी बरामद

एजेंसी

बीजापुर। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के नक्सल प्रभावित उसूर-आवापल्ली मार्ग पर उसूर से 3 किमी की दूरी पर धान मंडी के पास नक्सलियों द्वारा सड़क के बीचों-बीच प्लास्टिक कन्टेनर में लगाए गए 25 किग्रा. वजनी आईईडी बरामद किया गया है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार 196 केरिपु के बीडीएस टीम के द्वारा 25 किग्रा. वजनी आईईडी को जेसीबी की मदद से बाहर निकालकर, सुरक्षित तरीके से मौके पर ही निष्क्रिय कर दिया गया।

बीजापुर एसपी जितेंद्र यादव ने आईईडी बरामद होने की पुष्टि करते हुए बताया कि उसूर-आवापल्ली मुख्य मार्ग पर उसूर से 3 किलोमीटर की दूरी पर धान मंडी के पास सड़क पर माओवादियों द्वारा लगाए गए 25 किलो के आईईडी को बीडीएस टीम ने खोजकर नष्ट कर दिया। नक्सलियों

द्वारा सुरक्षाबलों के वाहनों को क्षति पहुचाने की नीयत से आम जनता की जान की परवाह किये बगैर कमांड स्वीच सिस्टम से मुख्यमार्ग पर प्लास्टिक कन्टेनर में 25 किलो वजनी आईईडी लगाया गया था। इस प्रकार मुख्यमार्ग के बीचों-बीच आईईडी लगाना, लगातार मुठभेड़ों में मारे जा रहे नक्सली कैडरों के कारण कमजोर पड़ चुके नक्सली संगठन की बौखलाहट को दर्शाता है।

गुजरात में हुए मप्र के बस हादसे पर मुख्यमंत्री यादव ने जताया दुख, मृतकों के परिजनों को आर्थिक सहायता के निर्देश

एजेंसी

शिवपुरी। गुजरात में हुए मप्र के बस हादसे में प्रदेश के श्रद्धालुओं की मौत पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गहरा दुख जताया है। मुख्यमंत्री ने इस हादसे में मृतकों के परिजनों को मुख्यमंत्री स्वेच्छानुदान मद से 4-4 लाख रुपये, गंभीर घायलों को 1-1 लाख रुपये और सामान्य घायलों को 50-50 हजार रुपये की आर्थिक सहायता राशि देने के निर्देश दिए हैं।

मप्र के शिवपुरी जिले के कोलारस क्षेत्र के रामग? के रहने वाले कुछ श्रद्धालुओं की बस रविवार की सुबह 4:00 बजे गुजरात के डांग जिले के सापूतारा घाट पर खाई में गिर गई, जिसमें 5 लोगों की मौत हो गई है। इसमें शिवपुरी जिले के कोलारस विधानसभा क्षेत्र के 4 श्रद्धालु शामिल हैं। यह मृतक कोलारस विधानसभा क्षेत्र के रामग? गांव के रहने वाले हैं। जबकि एक मृतक विदिशा से लेकर रहने वाला है जो बस का ड्राइवर है। इस बस में अधिकांशतः शिवपुरी जिले के कोलारस विधानसभा क्षेत्र के इंदार थाना इलाके के रामग? और बिजरौनी गांव के रहने वाले थे। बस हादसे में जिन लोगों की मौत हुई है, उनमें भोलाराम कुशवाह निवासी रामग? जिला शिवपुरी, गुड्डी राजेश यादव निवासी रामग? जिला शिवपुरी, कमलेश वीरपाल यादव निवासी रामग? जिला शिवपुरी, बृजेंद्र उर्फ पप्पू यादव निवासी बिजरौनी जिला शामिल हैं। जबकि एक ड्राइवर रतन लाल जाटव निवासी सिरोंज जिला विदिशा के शामिल है। बताया जा रहा है कि यह सभी लोग 23 दिसंबर को रामेश्वर धाम की यात्रा पर गए थे। यात्रा से सभी लोग वापस अपने घर लौट रहे थे, तभी यह हादसा हो गया।

विरासत, विज्ञान, आस्था और आध्यात्मिकता पर आधारित हैं भारत-इंडोनेशिया के संबंधः प्रधानमंत्री

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भारत और इंडोनेशिया के बीच संबंध केवल भू-राजनीतिक नहीं हैं, बल्कि हजारों वर्षों की साझा संस्कृति और इतिहास में निहित हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि दोनों देशों के बीच संबंध विरासत, विज्ञान, आस्था, साझा मान्यताओं और आध्यात्मिकता पर आधारित हैं। इस संबंध में भगवान मुरुगन, भगवान राम और भगवान बुद्ध शामिल हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को अपने यह विचार एक संदेश वीडियो संदेश के माध्यम से इंडोनेशिया के जकार्ता में श्रीसनातन धर्म आलयम के महाकुंभाभिषेकम को संबोधित करते समय व्यक्त किए। उन्होंने इस शुभ अवसर का हिस्सा बने राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो, मुरुगन मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष पा हाशिम, प्रबंध न्यासी डॉ. कोबालन, तमिलनाडु और इंडोनेशिया के गणमान्य व्यक्तियों, पुजारियों और आचार्यों, प्रवासी भारतीयों, इंडोनेशिया और अन्य देशों के सभी नागरिकों और इस दिव्य व भव्य मंदिर को वास्तविकता में बदलने वाले सभी प्रतिभाशाली कलाकारों को हार्दिक बधाई दी।समारोह का हिस्सा बनने के लिए अपने सौभाग्य

को व्यक्त करते हुए मोदी ने कहा कि हालांकि वे जकार्ता से दूर हैं, लेकिन वे भावनात्मक रूप से इस कार्यक्रम के करीब महसूस करते हैं। यह भारत-इंडोनेशिया के मजबूत संबंधों को दर्शाता है। उन्होंने जकार्ता मंदिर के महाकुंभाभिषेकम के अवसर पर इंडोनेशिया और दुनियाभर में भगवान मुरुगन के सभी भक्तों को बधाई दी। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि कि भारत और इंडोनेशिया के बीच संबंध कई मजबूत धागों से बुने हुए हैं। उन्होंने बताया कि राष्ट्रपति प्रबोवो की हाल की भारत यात्रा के दौरान उन्होंने इस साझा विरासत के कई पहलुओं को संजोया। यह देखते हुए कि जकार्ता में मुरुगन मंदिर में न केवल भगवान मुरुगन बल्कि कई अन्य देवी-देवता भी विराजमान हैं। मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि यह विविधता और बहुलता हमारी संस्कृति की नींव है।उन्होंने कहा कि इंडोनेशिया में विविधता की इस परंपरा को भिन्निका तुंगगल इका कहा जाता है, जबकि भारत में इसे विविधता में एकता के रूप में जाना जाता है।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि विविधता की यह स्वीकार्यता ही वह कारण है जिसके कारण इंडोनेशिया और भारत दोनों में विभिन्न धर्मों के लोग इतने सद्भाव के साथ रहते हैं। उन्होंने कहा कि यह शुभ दिन हमें विविधता में एकता को अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

भारत विश्व के प्रमुख कृषि प्रधान देशों में से एक है और इसकी संपत्ति के सबसे बड़े स्रोतों में से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है- भूमि की पैदावार। देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है। इसका योगदान सकल घरेलू उत्पाद का 29.4 प्रतिशत है। इससे करीब 64 प्रतिशत सेवा क्षेत्र जुड़ा है। खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में वर्ष दर वर्ष कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण प्रगति दर्ज की गई है।

कृषि विज्ञान में कॅरियर की संभावनाएं

कृषि विज्ञान आधारित उच्च प्रौद्योगिकीय क्षेत्र है तथा इसमें रोजगार संभावनाएं हैं। पशु और पादप शोधकर्ता, खाद्य वैज्ञानिक, वस्तु ब्रोकर, पोषणविद, कृषि पत्रकार, बैंकर्स, बाजार विश्लेषक, बिक्री व्यावसायिक, खाद्य संसाधक, वन प्रबंधक, वन्यजीव विशेषज्ञ आदि के रूप में कृषि क्षेत्र में करियर बनाया जा सकता है।

कृषि अनुसंधान और शिक्षा कृषि विश्वविद्यालयों, संस्थानों तथा कृषि शिक्षा और पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालयों द्वारा संचालित की जाती है कृषि विज्ञान के प्राकृतिक, आर्थिक और सामाजिक विज्ञान भाग हैं, जिन्हें कृषि के व्यवहार तथा इसे समझने के लिए प्रयोग किया जाता है। इस क्षेत्र में उत्पादन तकनीकें जैसे सिंचाई प्रबंधन, अनुशंसित नाइट्रोजन इनपुट्स गुणवत्ता और मात्रा की दृष्टि से कृषि उत्पादन में सुधार, प्राथमिक उत्पादों का अंतिम- उपभोक्ता उत्पादों में परिवर्तन, विपरीत पर्यावरणीय प्रभावों की रोकथाम तथा सुधार जैसे मिट्टी निम्नीकरण, कचरा प्रबंधन, जैव-पुन उपचार सैद्धांतिक उत्पादन पारिस्थितिकी, फसल उत्पादन मॉडलिंग से संबंधित परंपरागत कृषि प्रणालियां, कई बार इसे जीविका कृषि भी कह जाता है, जो विश्व के सर्वाधिक गरीब लोगों का भरण-पोषण करती है। ये परंपरागत पद्धतियां काफी रुचिकर हैं क्योंकि कई बार ये औद्योगिक कृषि की बजाय ज्यादा प्राकृतिक रिस्थितिकी व्यवस्था के साथ समाकलन का स्तर कायम रखती हैं जो कि कुछ आधुनिक कृषि प्रणालियों की अपेक्षा ज्यादा दीर्घकालिक होती हैं

न घबराएं ग्रुप इंटरव्यू से

सिंगल इंटरव्यू की बजाय आजकल कंपनियां ग्रुप इंटरव्यू का कॉन्सेप्ट ज्यादा पसंद कर रही हैं। इसमें रिक्रूटिंग मैनेजर्स का बोर्ड कैंडिडेट का इंटरव्यू लेता है। अगर आप कुछ बातों का ख्याल रखें, तो इसे आसानी से क्लियर कर सकते है। नए फाइनैंशल ईयर में तमाम कंपनियां अपने रिक्रूटिंग प्रोसेस को फिर से शुरू करने की प्लानिंग कर रही हैं। गौरतलब है कि पिछले दिनों कुछ ऑर्गनाइजेशंस ने काफी संख्या में रिक्रूटमेंट करने के संकेत भी दिए थे। हालांकि अब कंपनियां वन बाई वन इंटरव्यू की बजाय ग्रुप इंटरव्यू का कॉन्सेप्ट फॉलो कर रही हैं। इसके पीछे कंपनी के पास तमाम रीजन हैं। उनका मानना है कि इस तरह के इंटरव्यू में कम टाइम लगता है, क्योंकि एक कैंडिटेट को एक साथ तमाम लोग परखते हैं। अगर एक इंटरव्यूअर एक कैंडिडेट का इंटरव्यू करने में आधा घंटे का वक्त लगाता है, तो उनका ग्रुप कुछ मिनटों में ही कैंडिडेट की एबिलिटी जांच लेता है। इसके अलावा, मैनेजर्स के ग्रुप के पास कैंडिडेट के बारे में डिस्कस करने का भी ऑप्शन होता है, जबकि अकेले इंटरव्यूअर के पास ऐसा कोई ऑप्शन नहीं होता।

करना होगा कुछ खास

बेशक, वन बाई वन इंटरव्यू और ग्रुप इंटरव्यू में कोई बहुत ज्यादा फर्क नहीं होता, बावजूद इसके कैंडिडेट्स को इस नए कॉन्सेप्ट के लिए कुछ खास तैयारियां करने की जरूरत होती है। एक्सपर्ट्स की अगर मानें, तो ग्रुप इंटरव्यू को बिजनेस मीटिंग की तरह ट्रीट करना चाहिए। आपको यह मानना चाहिए कि वहां इंटरव्यूअर आपके क्लाइंट हैं। बेशक, इस खास तरह के इंटरव्यू में आपका सामना न सिर्फ अलग-अलग तरह के लोगों से होगा, बल्कि वे आपसे असहमत भी हो सकते हैं। हालांकि अगर आप कुछ रूल्स को फॉलो करें, तो आप इसे क्लियर करके जॉब हासिल कर सकते हैं।

बैंकिंग सक्सेस के लिए जीके भी जरूरी

जीके या जनरल अवेयरनेस के बिना आप कोई भी कॉम्पिटीटिव एग्जाम पास करने की सोच भी नहीं सकते। बैंकिंग एग्जाम्स के लिए भी यही बात लागू होती है। जनरल अवेयरनेस के तहत इकॉनमी, जियोग्राफी, हिस्ट्री, स्पोर्ट्स आदि सब्जेक्ट्स काफी अहमियत रखते हैं और एग्जाम्स में इनसे ही संबंधित नेशनल और इंटरनेशनल लेबल के सवाल ज्यादा पूछे जाते हैं। दायरा बड़ा या यूं कहें कि अनलिमिटेड होने के कारण इस सब्जेक्ट की तैयारी करना हर किसी के लिए बड़ी चुनौती होती है। सवालों को लेकर कयास भी नहीं लगाए जा सकते हैं। कहीं से कुछ भी पूछा जा सकता है। बैंक एग्जाम्स की बात करें तो इस सब्जेक्ट का फोकस उन टॉपिक्स पर ज्यादा होता है, जिनका बैंकिंग और इकॉनामी से वास्ता होता है क्योंकि बैंकिंग सेक्टर में काम करने वालों का इनसे ही वास्ता पड़ता है और एग्जाम में यही देखा जाता है कि इनमें स्टूडेंट्स की कितनी समझ है? वैसे तो इस सब्जेक्ट की तैयारी के बाद कोई यह नहीं कह सकता कि उसने सब कर लिया है, लेकिन अपने आप को देश-दुनिया की घटनाओं से अपडेट रख अपने लिए जमीन जरूर तैयार कर सकते हैं।

आपकी सफलता बहुत हद तक जनरल अवेयरनेस पर डिपेंड करती है। इसकी कई वजहें हैं। अव्वल तो यह कि हर एग्जाम में इसके अंक काफी होते हैं। दूसरा यह कि जनरल अवेयरनेस के सवालों को हल करने में बहुत ही कम समय लगता है। इसलिए आप इस सेक्शन में समय बचा कर अन्य सेक्शन में लगा सकते हैं। एग्जाम में भी इस सेक्शन को पहले करने की जरूरत होती है। जो लोग पहले दूसरे सेक्शन करते हैं, वे अक्सर समय न मिलने के कारण सवाल छूटने की शिकायत करते हैं। अन्य सेक्शन में अच्छा होने और अच्छा करने के बावजूद बहुतों के लिए एग्जाम में फेल होने का यह भी एक कॉमन रीजन है।

इकॉनामी और फाइनेंस

बैंकों के एग्जाम के लिए जनरल अवेयरनेस की तैयारी कर रहे हैं तो फोकस इकानॉमी और फाइनेंस पर ही रखें। आपसे कुछ भी पूछा जा सकता है। वर्ल्ड बैंक और एडीबी से लेकर रिजर्व बैंक तक के बारे में। नामी कंपनियों और उनके प्रदर्शन से भी खुद को वाकिफ रखें। बैंकिंग और फाइनेंस सेक्टर में इस्तेमाल होने वाले टर्म और शब्द संक्षेप पर भी पकड़ बनाएं। हिस्ट्री, पॉलिटिक्स और खेल की भी अच्छी तैयारी रखनी चाहिए।

रेग्युलर बनें

जनरल अवेयरनेस की तैयारी को काफी लोग हल्के में लेते हैं। लोग मान लेते हैं कि बैंक के लिए रीजनिंग और मैथ्स अहम है, जनरल अवेयरनेस नहीं। लेकिन ऐसा नहीं है और यह भी नहीं है कि आप इस सब्जेक्ट की तैयारी थोड़े दिनों में कर सकते हैं। सबसे पहले तो जरूरत है चीजों को समझने की। अगर बैंकिंग और फाइनैंस के टर्म्स आप समझ जाएंगे तो बाद में आसानी से खुद को अपडेट रख सकते हैं। किसी अन्य चीज की तरह इस सब्जेक्ट में अच्छा करने के लिए भी नियमितता जरूरी है। करंट अफेयर्स से खुद को अपडेट रखने का रूटीन बनाएं इसलिए तैयारी अडवांस में ही शुरू कर देनी चाहिए। ऐसा करते खुद और दूसरों में अंतर देख सकते हैं। खुद को अपडेट रखने के लिए सबसे पहले तो न्यूज पेपर्स का सहारा लें। इसके अलावा करंट अफेयर की एक दो अच्छी पत्रिका भी नियमित रूप से पढ़ें। जनरल अवेयरनेस के सवालों का जायजा आप पिछले एग्जाम्स के सवालों से ले सकते हैं। एक और बात भी ठीक तरह समझ लें कि जनरल अवेयरनेस की तैयारी के लिए आप किसी एक बुक के सहारे नहीं रह सकते हैं। बाजार में हर जरूरत के हिसाब से काफी पुस्तकें और मैगजींस आ रही हैं। आप उनमें से कुछेक के नियमित पाठक बन सकते हैं। इस क्रम में समाचार चैनलों और इंटरनेट का भी सहारा लिया जा सकता है। नेट पर भी अब हिंदी और इंग्लिश, दोनों भाषाओं के अलावा क्षेत्रीय भाषाओं में भी काफी कुछ उपलब्ध है।

जर्नलिज्म, बेस्ट कॅरियर

इन दिनों ज्यादातर युवाओं के लिए मीडिया आकर्षक कैरियर बनता जा रहा है। यदि लिखने-पढ़ने के शौकीन हैं और आपकी कम्युनिकेशन स्किल बढ़िया है, तो मीडिया आपके लिए बेस्ट कैरियर साबित हो सकता है।

दरअसल, आज मीडिया का काफी विस्तार हो चुका है। न केवल अखबार, टीवी और रेडियो, बल्कि इंटरनेट, मैग्जींस, फिल्म भी इसके विस्तारित क्षेत्र हैं। करंट इवेंट्स, ट्रेंड्स संबंधित इन्फॉर्मेशन कलेक्ट करना, एनालाइज करना आदि जर्नलिस्ट के मुख्य काम हैं।

ज्यादातर इंस्टीट्यूट्स एंट्रेंस एग्जाम आयोजित करते हैं। इसमें रिटेन टेस्ट, इंटरव्यू और ग्रुप डिस्कशन भी होता है। लिखित परीक्षा में स्टूडेंट्स के राइटिंग स्किल्स, जेनरल अवेयरनेस, एनालिटिकल एबिलिटी और एप्टीट्यूड की जांच की जाती है। एमसीआरसी के ऑफिशिएटिंग डायरेक्टर ओबेद सिद्दीकी के अनुसार, एंट्रेंस एग्जाम के लिए कोई विशेष तैयारी नहीं करनी होती है। टेस्ट के माध्यम से एप्लीकैंट के सोशल, कल्चरल और पॉलिटिकल इश्यू संबंधित ज्ञान को परखा जाता है।

करंट अफेयर्स की जानकारी एशियन कॉलेज ऑफ जर्नलिज्म के प्रोफेसर संपत कुमार कहते हैं कि जर्नलिज्म के लिए जरूरी तत्व है- करंट न्यूज पर आपकी पकड़। ऐसे कैंडिडेट ही अच्छे जर्नलिस्ट बनते हैं, जिन्हें न्यूज की अच्छी समझ होती है और जिनकी राइटिंग स्किल बढ़िया होती है। साथ ही, उनका अपने पेशे के प्रति कमिटमेंट होना भी जरूरी है। दरअसल, किसी भी खबर का विश्लेषण कर उसे सरल रूप में पेश करना ही मास कम्युनिकेशन का मुख्य उद्देश्य होता है। यदि आप इस पेशे में सफल होना चाहते हैं, तो न्यूज पेपर्स, मैग्जींस और करेंट अफेयर्स संबंधित बुक्स जरूर पढ़ें।

इंटरव्यू है असली परीक्षा: दिल्ली यूनिवर्सिटी से जर्नलिज्म में बैचलर करने के बाद मैं पीजी करना चाहता था। मैं प्रतिदिन एंट्रेंस एग्जाम की तैयारी के लिए दो लीडिंग न्यूजपेपर्स और कई मैग्जींस पढ़ा करता था। एंट्रेंस एग्जाम राइटिंग स्किल और सामयिक घटनाओं के प्रति आपकी जागरूकता की जांच के लिए किए जाते हैं। इसमें सफल होना आसान है। असली परीक्षा इंटरव्यूज के दौरान होती है। इस दौरान आपके न्यूज सेंस, कम्युनिकेशन स्किल और पेशेंस की भी जांच-परख होती है। यदि आप दब्बू किस्म के इंसान हैं या जल्दी अपना धैर्य खो देते हैं, तो आपको इस क्षेत्र में सफलता नहीं मिल सकती। इसलिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति स्पष्ट नजरिया बनाना होगा कि आपका स्वभाव इस पेशे के अनुकूल है या नहीं।

38वें राष्ट्रीय खेलों में भारोत्तोलकों ने रचा इतिहास, रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन से बढ़ी प्रतिस्पर्धा

एजेंसी

देहरादून। 38वें राष्ट्रीय खेलों में भारोत्तोलकों ने अपनी ताकत और कौशल का बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए कई राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ डाले। इस प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने अपने-अपने वर्गों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और भारोत्तोलन में नई ऊंचाइयों को छुआ। महिलाओं के 81 किग्रा भार वर्ग में चंडीगढ़ की वंशिता वर्मा ने कुल 208 किग्रा वजन उठाकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। उन्होंने स्नैच में 93 किग्रा और क्लीन एंड जर्क में 115 किग्रा उठाकर शानदार प्रदर्शन किया। पंजाब की मनप्रीत कौर ने कुल 197 किग्रा वजन उठाकर रजत पदक जीता, जबकि केरल की अंजना श्रीजीत 196 किग्रा वजन उठाकर कांस्य पदक जीतने में सफल रहीं।महिलाओं की 87 किग्रा स्पर्धा में तमिलनाडु की अरोकिया अलीश ने कुल 221 किग्रा वजन उठाकर स्वर्ण पदक हासिल किया। असम की मोधुस्मृता बरुआ ने 208 किग्रा के साथ रजत, और कर्नाटक की उषा ने 197 किग्रा के साथ कांस्य पदक जीता। पुरुषों के 102 किग्रा भार वर्ग में महाराष्ट्र के वैश्यव शाहजी ठाकुर ने 160 किग्रा भार उठाकर राष्ट्रीय स्नैच रिकॉर्ड तोड़ दिया। इससे पहले यह रिकॉर्ड 157 किग्रा का था, जो एसएससीबी के जगदीश विश्वकर्मा के नाम था। हालांकि, कुल भार उठाने में जगदीश ने 168 किग्रा का प्रयास किया और स्वर्ण पदक अपने नाम किया, जबकि वैश्यव को रजत से संतोष करना पड़ा।

सर्विसेज ने पुरुष वॉलीबॉल खिताब जीता, महिला वर्ग में केरल ने जीता स्वर्ण

देहरादून। 38वें राष्ट्रीय खेलों की वॉलीबॉल प्रतियोगिता का शिवालिक हॉल, रुद्रपुर में समापन हो गया। पांच दिनों के कड़े मुकाबलों के बाद पुरुषों के फाइनल में, सर्विसेज ने केरल को 3-1 से हराकर स्वर्ण पदक जीता, जबकि महिलाओं के फाइनल में, केरल ने रोमांचक मुकाबले में तमिलनाडु को 3-2 से हराकर चैंपियनशिप हासिल की। पुरुषों के फाइनल में, सर्विसेज ने केरल पर 3-1 से जीत दर्ज की। सर्विसेज ने पहले दो सेटों में अपना दबदबा बनाते हुए 25-20 और 25-22 से जीत हासिल की। हालांकि, केरला ने तीसरे सेट में जोरदार वापसी करते हुए 25-19 से जीत दर्ज की। चौथे सेट में जबरदस्त संघर्ष देखने को मिला और सर्विसेज ने इसे 28-26 से जीतकर खिताब अपने नाम कर लिया। कांस्य पदक के मुकाबले में तमिलनाडु ने उत्तराखंड को 3-0 से हराया। तमिलनाडु ने 25-22, 25-16 और 25-20 के स्कोर के साथ तीनों सेट जीतकर तीसरा स्थान हासिल किया। महिलाओं के फाइनल में केरल और तमिलनाडु के बीच कड़ा मुकाबला देखने को मिला। केरल ने पहला सेट 25-19 से जीता, लेकिन तमिलनाडु ने वापसी करते हुए अगले दो सेट 25-22, 25-22 से जीतकर बढ़त बना ली। केरल ने चौथे सेट में अविश्वसनीय वापसी करते हुए 25-14 से शानदार जीत हासिल की और पांचवें सेट को निर्णायक रूप से अपने नाम किया। इसके बाद केरल ने अंतिम सेट में 15-7 से जीत हासिल कर मैच 3-2 से अपने नाम कर स्वर्ण हासिल किया।

बीसीसीआई ने अंडर-19 महिला टीम और स्टाफ को 5 करोड़ रुपये के नकद पुरस्कार देने की घोषणा की

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने अंडर-19 महिला टी20 विश्व कप 2025 में भारत की ऐतिहासिक जीत का जश्न मनाते हुए टीम और सहयोगी स्टाफ के लिए 5 करोड़ रुपये के नकद पुरस्कार की घोषणा की है। कप्तान निकी प्रसाद के नेतृत्व में भारतीय टीम पूरे टूर्नामेंट में अपराजित रही और फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को नौ विकेट से हराकर लगातार दूसरी बार खिताब अपने नाम किया। बीसीसीआई ने इस ऐतिहासिक जीत पर पूरी टीम और कोचिंग स्टाफ को बधाई दी। बोर्ड के अध्यक्ष रोजर बिन्नी ने कहा, हमारी लड़कियों ने अद्भुत खेल दिखाया और पूरे टूर्नामेंट में अपराजित रहते हुए विश्व कप पर कब्जा किया। यह जीत भारत में महिला क्रिकेट के उज्ज्वल भविष्य का संकेत देती है। बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने टीम के समर्पण और मेहनत की सराहना करते हुए कहा, लगातार दूसरी बार ट्रॉफी जीतना भारतीय महिला क्रिकेट की ताकत को दर्शाता है। यह पूरी टीम की मेहनत और अनुशासन का परिणाम है।

महिला फुटबॉल में हरियाणा, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और दिल्ली का दबदबा

हल्द्वानी। राष्ट्रीय खेल 2024 के तहत महिला फुटबॉल प्रतियोगिता में कड़ी टक्कर देखने को मिली, जहां टीमें अपने-अपने पूल में दबदबा बनाने के लिए संघर्ष कर रही हैं। शुरुआती मुकाबलों में हरियाणा, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और दिल्ली ने जीत दर्ज कर अपने इरादे स्पष्ट कर दिए।

हरियाणा की धमाकेदार जीत

पूल ए के तहत खेले गए मुकाबले में हरियाणा ने तमिलनाडु के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन करते हुए 7-0 की शानदार जीत दर्ज की। टीम ने शुरू से ही आक्रामक खेल दिखाया और विरोधियों को वापसी का कोई मौका नहीं दिया। इसी पूल के एक अन्य मुकाबले में ओडिशा ने सिक्किम को 5-1 से हराकर अपनी ताकत का प्रदर्शन किया।

पश्चिम बंगाल और दिल्ली की प्रभावी शुरुआत

पूल बी के मुकाबलों में पश्चिम बंगाल ने मेजबान उत्तराखंड को 2-0 से हराया। पूरे खेल के दौरान पश्चिम बंगाल की टीम ने नियंत्रण बनाए रखा और अपने विरोधी को हावी होने का मौका नहीं दिया। दूसरी ओर, दिल्ली ने एक कड़े मुकाबले में मणिपुर को 2-1 से मात देकर शानदार शुरुआत की। हल्द्वानी में जारी इस हाई-एनर्जी टूर्नामेंट में टीमें अगले दौर में जगह सुरक्षित करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रही हैं। जैसे-जैसे प्रतियोगिता आगे बढ़ेगी, रोमांचक मुकाबलों का सिलसिला जारी रहेगा।

38वें राष्ट्रीय खेल : वेटलिफ्टिंग का रोमांच, रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन ने किया प्रभावित

एजेंसी

देहरादून। 38वें राष्ट्रीय खेल में वेटलिफ्टिंग स्पर्धाओं ने खेल प्रेमियों को रोमांचित कर दिया है। कई एथलीटों ने अपने दमदार प्रदर्शन से नए रिकॉर्ड बनाए और पदक तालिका में अपना स्थान सुनिश्चित किया। महिला 81 किग्रा वर्ग में चंडीगढ़ की वंशिता वर्मा ने कुल 208 किग्रा (स्नैच - 93 किग्रा, क्लीन एंड जर्क-115 किग्रा) उठाकर स्वर्ण पदक जीता। पंजाब की मनप्रीत ने 197 किग्रा (स्नैच -85 किग्रा, क्लीन एंड जर्क -112 किग्रा) के साथ रजत पदक हासिल किया, जबकि केरल की अंजना श्रीजित 196 किग्रा उठाकर कांस्य पदक जीतने में सफल रहीं। महिला 87 किग्रा वर्ग में तमिलनाडु की अरोक्या अलीश ने कुल 221 किग्रा भार उठाकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। असम की मोधुस्मृता बरुआ ने 208 किग्रा के साथ रजत और कर्नाटक की उषा ने 197 किग्रा भार उठाकर कांस्य पदक जीता। पुरुषों के 102 किग्रा वर्ग में महाराष्ट्र के वैशव

शाहाजी ठाकुर ने 160 किग्रा स्नैच उठाकर राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ दिया। हालांकि सर्विसेज के जगदीश विश्वकर्मा ने कुल प्रदर्शन में बाज़ी मारते हुए स्वर्ण पदक जीता। वैशव को रजत पदक मिला, जबकि हरियाणा के हर्षित सेहरावत ने 329 किग्रा भार उठाकर कांस्य पदक हासिल किया। वैशव ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा,'हम सभी जगदीश भैया को देखकर बड़े हुए हैं। उनका रिकॉर्ड तोड़ना मेरे लिए किसी सपने से कम नहीं है। हालांकि, उन्होंने कुल भार में मुझसे बेहतर प्रदर्शन किया, लेकिन आज का दिन मेरे लिए खास रहेगा।'

इस पर प्रतिक्रिया देते हुए जगदीश ने कहा,'मैं हमेशा युवाओं को कहता हूं कि पदकों से ज्यादा रिकॉर्ड तोड़ने पर ध्यान दो। वैशव ने आज यह कर दिखाया, लेकिन मैं अभी रुका नहीं हूं - यह मुझे और प्रेरित करेगा!'

यदि तरह, पुरुष 109 किग्रा वर्ग में राजस्थान के हरचरण सिंह ने दमदार प्रदर्शन करते हुए कुल 347 किग्रा (स्नैच -160 किग्रा, क्लीन एंड जर्क -187 किग्रा) उठाकर स्वर्ण पदक जीता। सर्विसेज के मोहम्मद जामीर हुसैन 337 किग्रा के साथ रजत पदक विजेता बने। हरियाणा के मनीष ने क्लीन एंड जर्क में 193 किग्रा का राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाने की कोशिश की, लेकिन असफल रहे और कुल 331 किग्रा भार के साथ कांस्य पदक पर संतोष करना पड़ा। इससे साफ है कि 38वें राष्ट्रीय खेल में वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता ने भारत के उभरते हुए टैलेंट को मंच दिया है। जहां खिलाड़ियों ने अपनी कड़ी मेहनत और प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करते हुए नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

हीली डब्ल्यूपीएल 2025 में नहीं खेलेंगी

एजेंसी

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया महिला टीम की विकेटकीपर बल्लेबाज एलिसा हीली दाएं पैर में खिंचाव की चोट के कारण आगामी महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) 2025 में नहीं खेल पाएंगी। उनके भारत में होने एकदिवसीय विश्वकप में खेलने को लेकर भी संशय हैं।

हीली ने डब्ल्यूपीएल में न खेलने की पुष्टि करते हुए कहा, दुर्भाग्य से मुझे कुछ महीनों का समय मिला है, इसलिए मैं इससे बेहद निराश हूं। लेकिन साथ ही मैं थोड़ा सा समय पाकर भी खुश हूं और अपने शरीर को ठीक करने का प्रयास करूंगी। शायद 18 महीने मेरे लिए सचमुच बहुत निराशाजनक रहे हैं। आगामी एकदिवसीय विश्वकप को लेकर उन्होंने कहा, आप खेलकर स्वयं को ठीक कर लेते हैं और कुछ गलत हो जाता है। इसलिए मैं बस कुछ चीजों पर ध्यान दे रही हूं कि कैसे मैं बेहतर हो सकती हूं। शायद कुछ क्षेत्रों में थोड़ा और अनुशासित हो सकती हूं तथा यह सुनिश्चित करूंगी कि मैं विशेष रूप से उस एकदिवसीय विश्वकप के लिए ठीक हो जाऊं। सर्दियों में बहुत सी लड़कियों के लिए बहुत अधिक क्रिकेट नहीं होने के कारण यह बहुत बड़ा बोझ

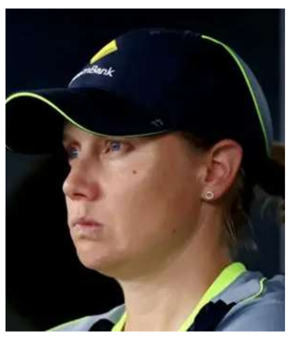

होने वाला है। इसलिए बस चीजों को सही करने के लिए प्रबंधन करना है। लेकिन मैं थोड़ी देर के लिए अपने पैर बर्फ की बाल्टी में डालने का इंतजार कर रही हूं। उल्लेखनीय है कि हीली पिछले पांच महीनों से चोटों से परेशान रही हैं।

डब्लयूपीएल फ्रेंचाइजी ने चोटिल खिलाड़ियों की जगह नये खिलाड़ियों को टीम में दी जगह

एजेंसी

नई दिल्ली। वड़ोदरा में 14 फरवरी से शुरु होने वाली महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के लिए विभिन्न फ्रेंचाइजी ने चोटिल खिलाड़ियों की जगह नये सदस्यों को अपनी-अपनी टीमों में जगह दी हैं। यूपी वॉरियर्ज ने चोट के कारण महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) से बाहर हुई एलिसा हीली की जगह टीम में वेस्टइंडीज़ की बल्लेबाज शिनेल हेनरी को शामिल किया हैं।

इसके अलावा रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू (आरसीबी) ने हीथर ग्रैम और किम गार्थ को क्रमशः सोफी डिवाइन और केट क्रॉस की जगह अपनी टीम में जगह दी है।

हेनरी वेस्टइंडीज की मध्यक्रम की बल्लेबाज और तेज गेंदबाज हैं और वह पहली बार डब्ल्यूपीएल में हिस्सा लेंगी। उन्होंने 62 टी-20 में 473 रन बनाने के साथ-साथ 22 विकेट भी लिए। 49 एकदिवसीय में उन्होंने 559 रन और 32 विकेट भी लिए हैं। वहीं गार्थ इससे पहले

गुजरात जायंट्स के लिए खेल चुकी हैं और वह हाल ही में ऐशेज में भी तीनों प्रारूपों में ऑस्ट्रेलियाई टीम का हिस्सा थी। उन्होंने 59 टी-20 में 764 रनों के साथ-साथ 49 विकेट भी लिये हैं। ग्रैम मुंबई इंडियंस का हिस्सा रह चुकी हैं। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के लिए खेले एक एकदिवसीय मैच खेला और पांच टी-20 मैच में आठ विकेट लिये हैं।

इंग्लैंड की स्पिनर चार्ली डीन को हाल ही में आरसीबी ने सोफी मोलिन्यू की जगह टीम में शामिल किया था।उल्लेखनीय है कि हीली पैर की मांसपेशियों में खिंचाव, क्रॉस पीठ की चोट से नहीं उबर पाने के कारण टूर्नामेंट से बाहर हो गई। वहीं डिवाइन ने क्रिकेट से ब्रेक लिया है।

यूपी की पुरुष कबड्डी टीम ने जीता स्वर्ण पदक

एजेंसी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की पुरुष कबड्डी टीम ने उत्तराखंड में आयोजित 38वें राष्ट्रीय खेल में फुर्ती, रणनीति और शानदार टीमवर्क के सहारे बेहतरीन धमाल मचाते हुए स्वर्णिम सफलता हासिल की। इन खेलों में उत्तर प्रदेश के लिए दूसरा स्वर्ण योगासन में आर्टिस्टिक पुरुष एकल में प्रवीण कुमार पाठक ने जीता।

आज यूपी के लिए योगासन के आर्टिस्टिक महिला पेयर में आर्यांशी स्वामी व सिमरन की जोड़ी ने रजत पदक जीता। वहीं महिला टीम इवेंट में उत्तर प्रदेश की स्क्वाश टीम को कांस्य पदक मिला। उत्तर प्रदेश के खिलाड़ियों ने 2 स्वर्ण, 2 रजत व 1 कांस्य पदक जीते। इसी के साथ उत्तर प्रदेश राष्ट्रीय खेल में अब तक 6 स्वर्ण, 4 रजत व 5 कांस्य पदक सहित कुल 15 पदक के साथ तालिका में नौवें स्थान पर पहुंच गया है।हरिद्वार में आयोजित कबड्डी के मुकाबलो में पुरुष कबड्डी के फाइनल में उत्तर प्रदेश ने चंडीगढ़ को रोमांचक मैच में 57-43 से हराकर स्वर्ण पदक जीता। इसी के साथ यूपी ने चंडीगढ़ से पूल मैच में मिली हार का

बदला ले लिया। इससे पहले सेमीफाइनल में उत्तर प्रदेश ने सर्विसेज' की बेहद मजबूत टीम को 43-42 से हराकर फाइनल में जगह बनायी थी। उत्तर प्रदेश की पुरुष कबड्डी टीम ने राष्ट्रीय खेल में दूसरी बार स्वर्ण पदक जीता। इससे पहले यूपी ने 36वें राष्ट्रीय खेल-2022 में स्वर्ण पदक जीता था।

अल्मोड़ा में आयोजित योगासन की स्पर्धा में आर्टिस्टिक पुरुष एकल में उत्तर प्रदेश के प्रवीण कुमार पाठक ने 118.91 अंक के साथ स्वर्ण पदक हासिल किया। इस वर्ग में महाराष्ट्र के रूपेश मोगशाली संगे (117.88 अंक) को रजत व छत्तीसगढ़ के प्रकाश कुमार (117.25 अंक) को कांस्य पदक मिला। योगासन के आर्टिस्टिक महिला पेयर में यूपी की आर्यांशी स्वामी व सिमरन ने कांटे के मुकाबले में 102.57 अंक हासिल करते हुए रजत पदक जीता। इस स्पर्धा का स्वर्ण हरियाणा की कुसुम व गुंजन (102.93 अंक) एवं कांस्य राजस्थान की तमन्ना व पायल (100.06) अंक ने जीता। देहरादून में स्क्वाश की स्पर्धाओं में महिला टीम इवेंट में उत्तर प्रदेश की स्क्वाश टीम को कांस्य पदक मिला। उत्तर प्रदेश को सेमीफाइनल में महाराष्ट्र ने शिकस्त देकर खिताबी होड़ में जगह बनाई।

पंजाब और तमिलनाडु बने बास्केटबॉल 5×5 चैंपियन

एजेंसी

देहरादून। 38वें राष्ट्रीय खेलों के अंतर्गत खेले गए बास्केटबॉल 5म5 मुकाबले सोमवार को संपन्न हुए। छह दिनों तक चले इन रोमांचक मुकाबलों में पंजाब ने पुरुष वर्ग में लगातार दूसरी बार स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया, जबकि महिला वर्ग में तमिलनाडु ने केरल को हराकर चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया।

पंजाब ने पुरुष वर्ग में बरकरार रखा दबदबा

पुरुष वर्ग के फाइनल में गत चैंपियन पंजाब और तमिलनाडु के बीच जोरदार टक्कर देखने को मिली। हालांकि, पंजाब ने अपने शानदार प्रदर्शन को दोहराते हुए 80-64 के अंतर से जीत दर्ज की और लगातार दूसरी बार गोल्ड मेडल जीता। तमिलनाडु को सिल्वर मेडल से संतोष करना पड़ा।

वहीं, कांस्य पदक मुकाबले में दिल्ली और सर्विसेज की टीम आमने-सामने थी। पिछले संस्करण की तरह इस बार भी दिल्ली ने सर्विसेज को हराया और 63-57

के स्कोर से जीत दर्ज कर ब्रॉन्ज मेडल पर कब्जा जमाया।

जीत के बाद पंजाब टीम के एक खिलाड़ी ने खुशी जाहिर करते हुए कहा, यह जीत हमारे लिए खास है। टीम ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। उत्तराखंड में खेल सुविधाएं बहुत अच्छी हैं, और हमें उम्मीद है कि लोग स्पोर्ट्स को और ज्यादा सपोर्ट करेंगे। महिला वर्ग में इस बार चैंपियनशिप की तस्वीर बदल गई। फाइनल में तमिलनाडु ने प्रभावशाली प्रदर्शन करते हुए केरल को 79-46 के बड़े अंतर से हराकर गोल्ड मेडल अपने नाम किया। इस जीत के साथ तमिलनाडु ने 37वें संस्करण की स्वर्ण पदक विजेता टीम को पछाड़ते हुए नया इतिहास रच दिया।

ब्रॉन्ज मेडल के लिए कर्नाटक और पंजाब के बीच रोमांचक मुकाबला हुआ, जिसमें कर्नाटक ने 77-76 के करीबी अंतर से जीत हासिल कर कांस्य पदक जीता।

तमिलनाडु टीम की एक खिलाड़ी ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा, हमने शानदार अनुभव किया। उत्तराखंड में प्रतियोगिता के लिए बेहतरीन सुविधाएं हैं। सभी परिवारों को खेलों को देखने और समर्थन करने की आदत डालनी चाहिए। बास्केटबॉल मुकाबलों के समापन के साथ ही अब 3×3 बास्केटबॉल की शुरुआत हो गई है। आगामी दिनों में इस फॉर्मेट के रोमांचक मुकाबले खेले जाएंगे। 38वें राष्ट्रीय खेलों में बास्केटबॉल प्रतियोगिता ने दर्शकों को खूब रोमांचित किया और खिलाड़ियों ने अपने बेहतरीन प्रदर्शन से खेल प्रेमियों का दिल जीत लिया।

अभिषेक ने तूफानी शतक के साथ बनाये कई रिकार्ड

एजेंसी

मुम्बई। भारतीय टीम के बाएं हाथ के युवा बल्लेबाज अभिषेक शर्मा ने तूफानी बल्लेबाजी करते हुए इंग्लैंड के गेंदबाजो के छक्के छुड़ाते हुए कई रिकार्ड अपने नाम किये। आज यहां वानखेड़े स्टेडियम में अभिषेक ने छक्कों की बारिश करते हुए भारत के लिए अंतरराष्ट्रीय टी-20 मैच में दूसरा सबसे तेज शतक जमाया है।

उन्होंने 37 गेंदों पर अपना शतक पूरा किया। यह उनका दूसरा टी-20 शतक है। इससे पहले भारत के लिए सबसे तेज शतक का रिकॉर्ड रोहित शर्मा के नाम है। उन्होंने 35 गेंदों में यह कारनामा किया था।

अभिषेक ने इससे पहले मात्र 17 गेंदों पर अपना अर्धशतक पूरा किया जो टी-20 में किसी भी भारतीय बल्लेबाज द्वारा लगाया गया दूसरा सबसे तेज अर्धशतक है। वर्ष 2007 में अभिषेक गुरु युवराज सिंह ने इंग्लैंड के खिलाफ 12 गेंदों पर 50 रन बनाए थे। अभिषेक ने

आज के मैच में 13 छक्के लगाकर भारत के लिए एक टी-20 मैच में सबसे ज्यादा छक्के मारने वाले बल्लेबाज बन गये हैं। उन्होंने इस मामले में रोहित शर्मा के 10 छक्कों के रिकार्ड को पीछे छोड़ दिया।

भारत ने इंग्लैंड को 150 रनों से हराया

एजेंसी

मुम्बई । अभिषेक शर्मा (नाबाद 135रन/ दो विकेट) हरफनमौला और मोहम्मद शमी (तीन विकेट) के शानदार प्रदर्शन की बदौलत भारत ने पांचवें और अखिरी टी-20 मुकाबले में इंग्लैंड को 150 रनों से हरा दिया है। इसी के साथ भारत ने पांच मैचों की सीरीज 4-1 से जीत ली।

भारत के रिकार्ड 247 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी इंग्लैंड के फिल सॉल्ट और बेन डकेट की सलामी जोड़ी ने तेजी के साथ रन बनाते हुए अच्छी शुरुआत करने का प्रयास किया दोनों के बीच पहले विकेट के लिए महज 2.1 ओवर में 23 रन की साझेदारी हुई। तीसरे ओवर में मोहम्मद शमी ने बेन डकेट (शून्य) को आउटकर भारत को पहली सफलता दिलाई। इसके बाद इंग्लैंड का कोई भी बल्लेबाज भारतीय गेंदबाजी आक्रमण के आगे नहीं टिक सका। आठवें ओवर में शिवम दुबे ने एक छोर थामे खड़े फिल सॉल्ट को आउट कर इंग्लैंड को बड़ा झटका दिया। फिल सॉल्ट ने 23 गेंदों में सात चौके और तीन छक्के लगाते हुए (55) रनों की पारी खेली। साल्ट के आलवा जेकब बेथेल (10) रन ही दहाई आंकड़े तक पहुंच सके। इंग्लैंड की पूरी टीम 10.3 ओवर में 97 के स्कोर पर ढ़ेर हो गई।

भारत की ओर से मोहम्मद शमी ने 25 रन देकर तीन विकेट लिये। अभिषेक शर्मा ने तीन रन देकर दो विकेट लिये। वरूण चक्रवर्ती ने 25 रन देकर दो बल्लेबाजों को आउट किया। शिवम दुब ने 11 रन देकर दो विकेट लिये। रवि बिश्नोई ने एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले आज यहाँ वानखेड़े स्टेडियम में इंग्लैंड के कप्तान जॉस बटलर ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी की फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी भारत की संजू सैमसन और अभिषेक शर्मा की सलामी जोड़ी ताबड़तोड़ शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए अभी मात्र 21 रन ही जोड़े थे कि मार्क वुड ने संजू सैमसन (16) को आउटकर पवेलियन भेज दिया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये तिलक वर्मा ने अभिषेक शर्मा के साथ पारी को संभाला। दोनों बल्लेबाजों के बीच दूसरे विकेट के लिए 115 रनों की साझेदारी हुई। इस दौरान अभिषेक शर्मा ने छक्को की बारिश करते हुए इंग्लैंड के गेंदबाजों की खूब खबर ली। अभिषेक शर्मा ने मात्र 17 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा किया। नौवें ओवर में ब्राइडन कार्स ने तिलक वर्मा को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। तिलक वर्मा ने 15 गेंदों में तीन चौके और एक छक्का लगाते हुए (24) रन बनाये। इसके बाद अभिषेक शर्मा ने 11वें ओवर की पहली गेंद पर अपना शतक पूरा किया। उन्होंने 37 गेंदों में पांच चौके और 10 छक्कों की मदद से अपना शतक बनाया। कप्तान सूर्यकुमार यादव एक बार फिर विफल रहे। वह मात्र दो रन बनाकर आउट हुये। शिवम दुबे ने 13 गेंदों में तीन चौके और दो छक्के लगाते हुए (30) रनों की पारी खेली। हार्दिक पंड्या (नौ) और रिंकू सिंह (नौ) रन बनाकर आउट हुये। 18वें ओवर में अभिषेक शर्मा के रूप में भारत का सातवां विकेट गिरा।

अभिषेक शर्मा ने 54 गेंदों में सात चौके और 13 छक्के लगाते हुए 135 रनों की पारी खेली। उन्हें आदिल रशीद ने आउट किया। अक्षर पटेल (15) रनआउट हुये। 20वें ओवर में मोहम्मद शमी और रवि बिश्नोई बिना खाता खोले ही पवेलियन लौट गये। भारत ने निर्धारित 20 ओवरों में नौ विकेट पर 247 रनों का विशाल स्कोर खड़ा किया।

भुवनेश्वर में होने वाले एफआईएच प्रो लीग 2024-25 मैचों के लिए मुफ्त होंगे टिकट

नई दिल्ली। हॉकी इंडिया ने 15 से 25 फरवरी तक एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2024-25 मैचों के लिए भुवनेश्वर के कलिंगा हॉकी स्टेडियम में सभी प्रशंसकों के लिए मुफ्त प्रवेश की घोषणा की है। भुवनेश्वर चरण में भारत, इंग्लैंड, स्पेन, जर्मनी और आयरलैंड की शीर्ष पुरुष टीमें भाग लेंगी, जबकि महिला प्रतियोगिता में भारत का सामना जर्मनी, इंग्लैंड, नीदरलैंड और स्पेन से होगा। प्रत्येक टीम एक दूसरे के खिलाफ दो बार खेलेंगी। भारत का अभियान 15 फरवरी को शुरू होगा, जिसमें महिला टीम का सामना इंग्लैंड से होगा, उसके बाद पुरुष टीम का सामना स्पेन से होगा। प्रशंसक वर्चुअल टिकट प्राप्त करने के लिए www.tick-etgenie.in पर पंजीकरण कर सकते हैं, जिससे मैच के दिनों में परेशानी मुक्त प्रवेश सुनिश्चित होगा।

चोटिल एलिसा हीली की जगह चिनेल हेनरी यूपी वारियर्स की टीम में शामिल

एजेंसी

नई दिल्ली। यूपी वारियर्स (यूपीडब्ल्यू) ने टाटा महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) 2025 के आगामी संस्करण के लिए एलिसा हीली की जगह चिनेल हेनरी को चुना है। हीली चोट के कारण टाटा डब्ल्यूपीएल के तीसरे सत्र से बाहर हो गई थीं। वेस्टइंडीज का प्रतिनिधित्व करने वाली हेनरी ने अब तक 62 टी-20 आई खेले हैं और उनके नाम 473 रन और 22 विकेट दर्ज हैं। वह 30 लाख रुपये में यूपीडब्ल्यू में शामिल हुई हैं। इस बीच, रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) ने सोफी डिवाइन और केट क्रॉस की जगह हीथर ग्राहम और किम गर्थ को चुना। निजी कारणों से डिवाइन और क्रॉस टाटा डब्ल्यूपीएल 2025 में नहीं खेलेंगी। ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर ग्राहम ने 5 टी-20 आई खेले हैं और उनमें से 8 विकेट अपने नाम किए हैं। गर्थ ने 56 वनडे और

4 टेस्ट के अलावा 59 टी-20आई में ऑस्ट्रेलिया का प्रतिनिधित्व किया है। उनके नाम 764 रन और 49 विकेट हैं। गर्थ इससे पहले डब्ल्यूपीएल में गुजरात जायंट्स (जीजी) के लिए खेल चुकी हैं। ग्राहम और गर्थ क्रमशः 30 लाख रुपये में आरसीबी में शामिल हुईं।

दक्षिण अफ्रीका को नौ विकेट से हराकर भारत ने जीता महिला अंडर-19 टी-20 विश्वकप का खिताब

एजेंसी

क्वालालंपुर। जी तृषा (तीन विकेट/नाबाद 44रन) के हरफनमौला प्रदर्शन की बदौलत भारत ने दक्षिण अफ्रीका को नौ विकेट से हराकर महिला अंडर-19 टी-20 विश्वकप का खिताब अपने नाम किया।दक्षिण अफ्रीका के 82 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी जी कमालिनी और जी तृषा की भारतीय सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट लिए 36 रन जोड़े। पांचवें ओवर की तीसरी गेंद पर कायला रेनेके ने जी कमालिनी(आठ) को आउट कर दक्षिण अफ्रीका को पहली सफलता दिलाई। इसके बाद बल्लेबाजी करने सनिका चलके ने जी तृषा के शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए भारत को जीत दिलाई। दोनों बल्लेबाजों के बीच 48 रनों की अवजित साझेदारी हुई। जी तृषा ने 33 गेंदों में आठ चौके लगाते हुए (नाबाद 44) रनों की पारी खेली। वहीं सनिका चलके ने 22 गेंदों में चार चौके लगाते हुए (नाबाद 26) रन बनाये। सनिका चलके ने 12वें ओवर की दूसरी गेंद पर भारत के लिए विजयी चौका लगाया। भारत ने 12.2 ओवर में एक विकेट पर 84 रन बनाकर मुकाबला नौ विकेट से जीत

लिया। इससे पहले आज यहां दक्षिण अफ्रीका ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी दक्षिण अफ्रीका की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने 11 के स्कोर पर सिमॉन लुरेंस (शून्य) का पहला तथा 20 के स्कोर पर जेम्मा बोथा (16) के रूप में दूसरा और इसक बाद दियारा रामलाकन (तीन) के रूप में तीसरा विकेट गवां दिया। कप्तान कायला रेनेके (सात) रन बनाकर आउट हुई। भारतीय गेंदबाजी आक्रमण के आगे दक्षिण अफ्रीका का कोई भी बल्लेबाज अधिक देर तक नहीं टिक सका।

करबो मेसो (10) और फे काउलिंग (15) रन बनाकर आउट हुई। मीके वान वूर्स्ट ने टीम के लिए (23) रनों की पारी खेली। दक्षिण अफ्रीका के चार बल्लेबाज शून्य पर आउट हुये।

दक्षिण अफ्रीका टीम ने निर्धारित 20 ओवरों तक मैच खिंचा लेकिन वह 82 रन का ही स्कोर खड़ा सकी।भारत की ओरसे जी तृषा ने तीन विकेट लिये। पारुनिका सिसोदिया, आयुषी शुक्ला और वैष्णवी शर्मा को दो-दो विकेट मिले। शबनम एम डी ने एक बल्लेबाज को आउट किया।

काजोल मुखर्जी

की किस बात से डरती थीं उनकी मां, बहन तनीषा ने किया खुलासा

हर भाई-बहन की तरह काजोल और तनीषा मुखर्जी के बीच भी बचपन में खूब लड़ाई होती थी. दोनों बहनों में जितना प्यार देखने को मिलता है उतना ही झगड़ा उनके बीच बचपन में हुआ करता था. काजोल और तनीषा की उम्र में 4 साल का गैप है और दोनों के बीच भयंकर झगड़ा हुआ करता था. तनीषा ने एक इंटरव्यू में बताया कि जब काजोल उन्हें मारती थीं तब उनकी मां तनुजा डर जाया करती थीं. इसके पीछे की वजह काजोल का शॉर्ट टैंपर होना था.हॉन्टरफ्लाई को दिए एक इंटरव्यू मे जब तनीषा मुखर्जी से पूछा गया कि उनके बचपन की कोई याद जो वो शेयर करना चाहें. इस पर तनीषा ने कहा, मेरी परदादी ने मुझे संभाला, क्योंकि मेरी मॉम काम के लिए जाती थीं. उनकी दो बेटियां और भाई भी हमारे साथ ही रहते थे. तो मैं तीन बहनें और एक भाई के साथ बड़ी हुई हूं.

जब तनीषा से पूछा गया कि उनकी और काजोल की बॉन्डिंग कैसी थी बचपन में तो इसपर उन्होंने कहा, मैं और काजोल बचपन में बहुत लड़ते थे. वो मुझसे बड़ी थी और कुछ हेल्दी भी थी. जब वो मुझे मारती थी तब मेरी मां डर जाया करती थीं और कहती थीं ये लड़की एक दिन तनीषा को मार देगी और फिर वो हम दोनों को पीट देती थीं. मेरी मॉम से हम दोनों डरते थे और वो हमारे लिए बहुत सख्त थीं, तभी हम आज सुधरे हैं. मॉम ने वो कदम तब उठाए तभी हम दोनों आज अपने-अपने मुकाम पर सफल हैं.

तनीषा मुखर्जी का फिल्मी करियर

काजोल बॉलीवुड की सफल एक्ट्रेस हैं, लेकिन तनीषा का फिल्मी करियर फ्लॉप रहा. 46 साल की तनीषा ने बॉलीवुड के साथ-साथ कुछ साउथ की फिल्में भी की हैं. हिंदी सिनेमा में तनीषा ने 2003 में आई फिल्म 'श्श्श' से करियर की शुरुआत की थी. इसके बाद उन्होंने कुछ और हिंदी फिल्में कीं, लेकिन सभी फ्लॉप रहीं. तनीषा सोशल मीडिया पर एक्टिव रहती हैं, लेकिन एक्टिंग करियर से फिलहाल दूर हैं.तनीषा मुखर्जी 'बिग बॉस 7' में बतौर कंटेस्टेंट नजर आई थीं. यहां उनका नाम एक्टर अरमान कोहली के साथ जुड़ा था और घर से बाहर आने के बाद भी इनका रिलेशन कुछ समय तक चला था, लेकिन कुछ महीनों के बाद ही उनका ब्रेकअप हो गया था. तनीषा आज भी सिंगल हैं और उन्होंने शादी नहीं की.

सलमान खान

पर भड़के अश्नीर ग्रोवर, कहा- 'नाम नहीं जानता तो बुलाया क्यों...'

सलमान खान का टीवी रिएलिटी शो 'बिग बॉस 18' भले ही ऑफ एयर हो चुका है, लेकिन उससे जुड़ा एक मामला फिर से चर्चा में आ गया है. बिजनेसमैन अश्नीर ग्रोवर का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें वो सलमान के खिलाफ बातें करते नजर आ रहे हैं.अश्नीर ग्रोवर गेस्ट के तौर पर सलमान के शो में शामिल हुए थे. उस दौरान सलमान ने उनसे उनके एक पुराने बयान को लेकर सवाल किया था. सलमान ने अश्नीर से ये भी कहा था कि वो उनका नाम भी जानते हैं. वायरल वीडियो में अश्नीर सलमान के उसी बयान पर पलटवार करते नजर आ रहे हैं.

अश्नीर ग्रोवर ने क्या कहा ?

अश्नीर कहते हैं, फालतू पंगा लेकर कॉम्पिटिशन खड़ा किया है इसने. मैं तो शांति से गया था. मुझे बुलाया था. अब ड्रामा खड़ा करने के लिए तुम किसी को बोल दो कि मैं तो आपसे मिला ही नहीं, मैं आपका नाम नहीं जानता. अबे नाम नहीं जनता तो बुलाया क्यों था. और अगर तुम मेरी कंपनी के ब्रांड एंबेसडर थे तो तुम मुझसे मिले बिना ही ब्रांड एंबेसडर बन गए, ये तो हो नहीं सकता.

क्या है पूरा मामला ?

दरअसल, अश्नीर ने एक दफा कहा था कि उन्होंने सलमान खान को कम पैसों में अपनी कंपनी के ब्रांड एंबेसडर के तौर पर साइन कर लिया था. हालांकि, जब अश्नीर 'बिग बॉस' के मंच पर पहुंचे थे तो सलमान ने उनके बयान को गलत बताया था. सलमान ने कहा था, आपने कहा था कि मैंने इसको इतने में साइन किया. सब डेटा आपने गलत दिया था. ये क्या दोगलापन है.

सलमान खान की अपकमिंग फिल्म

बहरहाल, सलमान खान इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म 'सिकंदर' को लेकर बिजी चल रहे हैं. उनकी ये फिल्म इसी साल ईद के मौके पर रिलीज होने वाली है. इस फिल्म में सलमान के अपोजिट रश्मिका मंदाना हैं. एआर मुरुगदास के डायरेक्शन में बनी इस फिल्म में साउथ एक्टर सत्याराज निगेटिव रोल में हैं.

'बिग बॉस 18' में महेश बाबू ने क्यों नहीं किया था शिल्पा शिरोडकर को सपोर्ट? एक्ट्रेस ने अब दिया जवाब

शिल्पा शिरोडकर 'बिग बॉस 18' में कंटेस्टेंट के तौर पर शामिल हुई थीं. उन्होंने टॉप-7 में भी जगह बनाई, लेकिन उन्हें जीत हासिल नहीं हो पाई. 'बिग बॉस 18' के दौरान शिल्पा की बहन नम्रता शिरोडकर और भांजी सितारा ने उन्हें सोशल मीडिया पर सपोर्ट किया था. लेकिन उनके जीजा महेश बाबू उन्हें सपोर्ट करते नजर नहीं आए, जिसकी सोशल मीडिया पर खूब चर्चा हुई. अब शिल्पा ने इस बारे में बात की है.सिद्धार्थ कन्नन से बातचीत करते हुए शिल्पा शिरोडकर ने कहा, घर के रिश्तों को सोशल मीडिया पोस्ट से आकलन करना बिल्कुल सही नहीं होता है. मुझे सोशल मीडिया पर हर चीज पोस्ट करने का कॉन्सेप्ट समझ नहीं आता है. उन्हें (महेश बाबू) सोशल मीडिया पर ये पोस्ट करने की जरूरत नहीं है कि उन्हें मुझपर कितना गर्व था.

शिल्पा ने आगे कहा, मेरा परिवार इतना ओपेन नहीं है, लेकिन एक-दूसरे को लेकर फीलिंग कितनी है ये हम सभी जानते हैं. मैं 'बिग बॉस' के घर इसलिए गई थी, क्योंकि मैं एक एक्ट्रेस हूं, इसलिए नहीं कि नम्रता की बहन और महेश बाबू की साली हूं. बिल्कुल वो सुपरस्टार हैं और बहुत लोकप्रिय हैं, लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि उन्होंने मेरा करियर बनाने में मदद की.

कैसा है महेश बाबू का नेचर ?

शिल्पा शिरोडकर ने महेश बाबू और उनकी वाइफ नम्रता शिरोडकर को लेकर कुछ बातें बताईं. शिल्पा ने कहा, महेश और नम्रता बहुत रिजर्व लोग हैं और दुनिया ने उनपर एरोगेंट कपल का टैग लगा दिया. महेश भी काफी रिजर्व्ड हैं, लेकिन वो बहुत अच्छे इंसान हैं. वो बहुत ही कूल माइंडेड हैं. उनके पास कभी भी कोई मदद के लिए आता है तो वो उसे निराश नहीं करते. फैमिली को लेकर भी वो हमेशा आगे रहते हैं और सबका साथ देते हैं.

शिल्पा शिरोडकर की फैमिली

शिल्पा शिरोडकर ने फिल्म 'भ्रष्टाचार' (1989) से बॉलीवुड डेब्यू किया था. वहीं उनकी छोटी बहन नम्रता शिरोडकर 1993 में मिस इंडिया बनी थीं और उसके बाद उन्होंने बॉलीवुड करियर शुरू किया था. नम्रता ने कई फिल्में की, लेकिन करियर ठीक नहीं चला. साल 2005 में महेश बाबू से उनकी शादी हुई. महेश बाबू से नम्रता को दो बच्चे गौतम और सितारा हैं. वहीं शिल्पा शिरोडकर ने 2000 में बिजनेसमैन अप्रेश रंजीत के साथ शादी की, जिनसे उन्हें एक बेटी अनुष्का रंजीत हैं.

म्यूजिक डायरेक्टर ने लिया था रिस्क, तब तैयार हुआ था आमिर खान का 'परदेसी-परदेसी' गाना

आमिर खान और करिश्मा कपूर स्टारर 'राजा हिंदुस्तानी' 1996 की सुपरहिट फिल्म थी. इस फिल्म में आमिर-करिश्मा के काम को खूब पसंद किया गया था और इसके सभी गाने आज भी पसंद किए जाते हैं. लेकिन सबसे ज्यादा लोकप्रियता 'परदेसी-परदेसी' गाने को मिली, जिसे कुमार सानू और अलका यागनिक ने गाया था. ये गाना कभी बनता ही नहीं, अगर म्यूजिक डायरेक्टर ने रिस्क न लिया होता है. इससे जुड़ा दिलचस्प किस्सा कुमार सानू ने इंडियन आइडल में बताया था.

'इंडियन आइडल 14' के एक एपिसोड में एंकर हुसैन कुवाजरवाला ने 'परदेसी-परदेसी' गाने को लेकर कुछ बातें बताई थीं. उस किस्से को कुमार सानू ने पूरा किया था. हुसैन कुवाजरवाला ने कहा था, एक गाना रिकॉर्ड हुआ परदेसी-परदेसी, असल में ये गाना प्रोड्यूसर को पसंद नहीं आया था. उन्हें परदेसी-परदेसी लाइन पसंद नहीं आई थी और उन्होंने वो लाइन हटाने के लिए कही थी. फिर नदीम जी (म्यूजिक डायरेक्टर) ने प्रोड्यूसर से कहा कि एक काम करते हैं कि रहने देते हैं इसको, अगर गाना नहीं चला तो इसे बनाने में जितना खर्चा आया वो मैं दूंगा, लेकिन अगर गाना जो हिट हो गया तो आप मुझे डबल पैसा दोगे, इस गाने के.

एंकर की बात सुनने के बाद कुमार सानू ने उसके आगे का किस्सा सुनाया. उन्होंने कहा था, ये तो उनके साथ (प्रोड्यूसर) बात हुई थी. लेकिन जब नदीम जी मेरे पास आए तो बोले परदेसी में जब र आता है तो ये र नहीं बोलना, र बोलते हुए ऐसा लय पकड़ना, जिसके लास्ट में ल जैसा निकले. जैसे पर्लदेसीज्पर्लदेसी जाना नहीं लगे. उस समय मुझे प्रोड्यूसर और म्यूजिक डायरेक्टर दोनों का प्रेशर झेलना पड़ा था. तो बहुत सारी मुसीबत माथे पर लेकर इस गाने की रिकॉर्डिंग की थी.

कैसी फिल्म थी 'राजा हिंदुस्तानी' ?

90ह्य के दौर में 'परदेसी-परदेसी' गाना खूब पसंद किया जाता था और आज भी इस गाने की लोकप्रियता कम नहीं हुई है. इस गाने का म्यूजिक नदीम-श्रवण ने तैयार किया था. ये गाना फिल्म में दो बार दिखाया गया था, एक जो ढाबे वाले सीन के लिए होता है, जिसे उदित नारायण, अलका यागनिक और सपना अवस्थी ने गाया था. वहीं 'परदेसी-परदेसी' का सैड वर्जन कुमार सानू और अलका यागनिक ने गाया था. 15 नवंबर 1996 को फिल्म राजा हिंदुस्तानी रिलीज हुई थी, जिसका निर्देशन धर्मेश दर्शन ने किया था. फिल्म में आमिर खान ने टैक्सी ड्राइवर राजा का रोल प्ले किया था. वहीं करिश्मा कपूर ने अमीर लड़की आरती सेहगल का कैरेक्टर निभाया था.